लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–11

काश्मीर की लोक कथाऐं–1

जेम्स हिन्टन नोलिस

1887

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-11
Book Title: Kashmir Ki Lok Kathayen-1 (Folk-tales of Kashmir-1)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of Kashmir

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुईं और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

काश्मीर की लोक कथाऐं–1

"लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज़ की यह एक और पुस्तक अब आपके हाथ में प्रस्तुत है भारत के काश्मीर प्रान्त की लोक कथाओं की। यह काश्मीर की लोक कथाओं की पहली पुस्तक थी जिसे जेम्स हिन्टन नोलिस ने पहली बार **1887** में प्रकाशित किया था। उन्होंने इसमें **64** लोक कथाऐं लिखी थीं।[2] उस पुस्तक का दूसरा संस्करण **1893** में प्रकाशित किया गया था। उसी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

भारत में बहुत सारे प्रान्त हैं जिनमें बहुत सारी भाषाऐं बोली जाती हैं। एक दूसरे की भाषा पढ़ना समझना बहुत कठिन काम है इसलिये एक पान्त की भाषा दूसरे प्रान्तों के लोगों के लिये विदेशी भाषा जैसी ही हो जाती है। अपने अपने प्रान्तों की अपनी अपनी लोक कथाऐं हैं। उन दूसरे भाषा वाले प्रान्तों की लोक कथाओं को हिन्दी भाषा भाषी लोगों के पढ़ने के लिये यह प्रयास किया गया है।

तो लीजिये पढ़िये ये लोक कथाऐं भारत के काश्मीर प्रान्त की अब हिन्दी में। लोक कथाओं की अधिकता के कारण यह पुस्तक चार भागों में बॉट दी गयी है।

मूल पुस्तक के बारे में

लोक कथाओं की यह पुस्तक जेम्स हिन्टन नोलिस की लिखी हुई है जिसमें उन्होंने अपने चार साल के काश्मीर के निवास काल में एकत्र की थीं। इसका दूसरा संस्करण **1893** में प्रकाशित किया था। जेम्स एक मिशनरी थे जो यहाँ इतने समय रहे। उन्होंने इस पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि मिशनरी होने के नाते वह बहुत सारे लोगों के सम्पर्क में आये और उन्होंने उन लोगों से बहुत सारी बातें सीखीं। उनके इन कथाओं के संग्रह का मुख्य उद्देश्य काश्मीरी भाषा को जानना था जो वहाँ की स्थानीय भाषा है और दूसरा उद्देश्य वहाँ के लोगों के विचारों और तौर तरीकों को जानना था।

इस संग्रह की कुछ कहानियाँ उन्होंने भारतीय पत्रिकाओं में भी प्रकाशित करवायीं और उन्हीं की सलाह पर यह संग्रह प्रकाशित किया गया। इस संग्रह में से बहुत सारी कथाऐं केवल काश्मीरी हैं जबकि बाकी की कथाऐं भारत में प्रचलित कथाऐं हैं। इसमें की कुछ कथाऐं यूरोप के कई देशों की कथाओं से मिलती जुलती हैं।

वह लिखते हैं कि इन कथाओं के उद्गम स्थान को ढूँढना मेरा उद्देश्य नहीं है पर उन्हें इस बात का यकीन है कि बहुत सारी पूर्वी कहानियाँ चंगेज़ खान के समय में हैन्स ऐन्डरसन[3] के द्वारा यूरोप में ले जायी गयीं। बहुत सारी कहानियों का फारसी भाषा में भी अनुवाद किया गया और उसके बाद सीरिया की भाषा और अरबी भाषा में भी। और शायद ये फिर वहाँ से यूरोप गयीं।

हिन्दी भाषा में इसका यह पहला अनुवाद है।

---

[2] "Folk-Tales of Kashmir", by James Hinton Knowles. 2nd edition. London, Kegan Paul. 1893. 64 Tales. This book is available in English at the Web Site : https://books.google.ca/books?id=ChaBAAAAMAAJ&pg=PR3&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false

[3] Hans Andersen
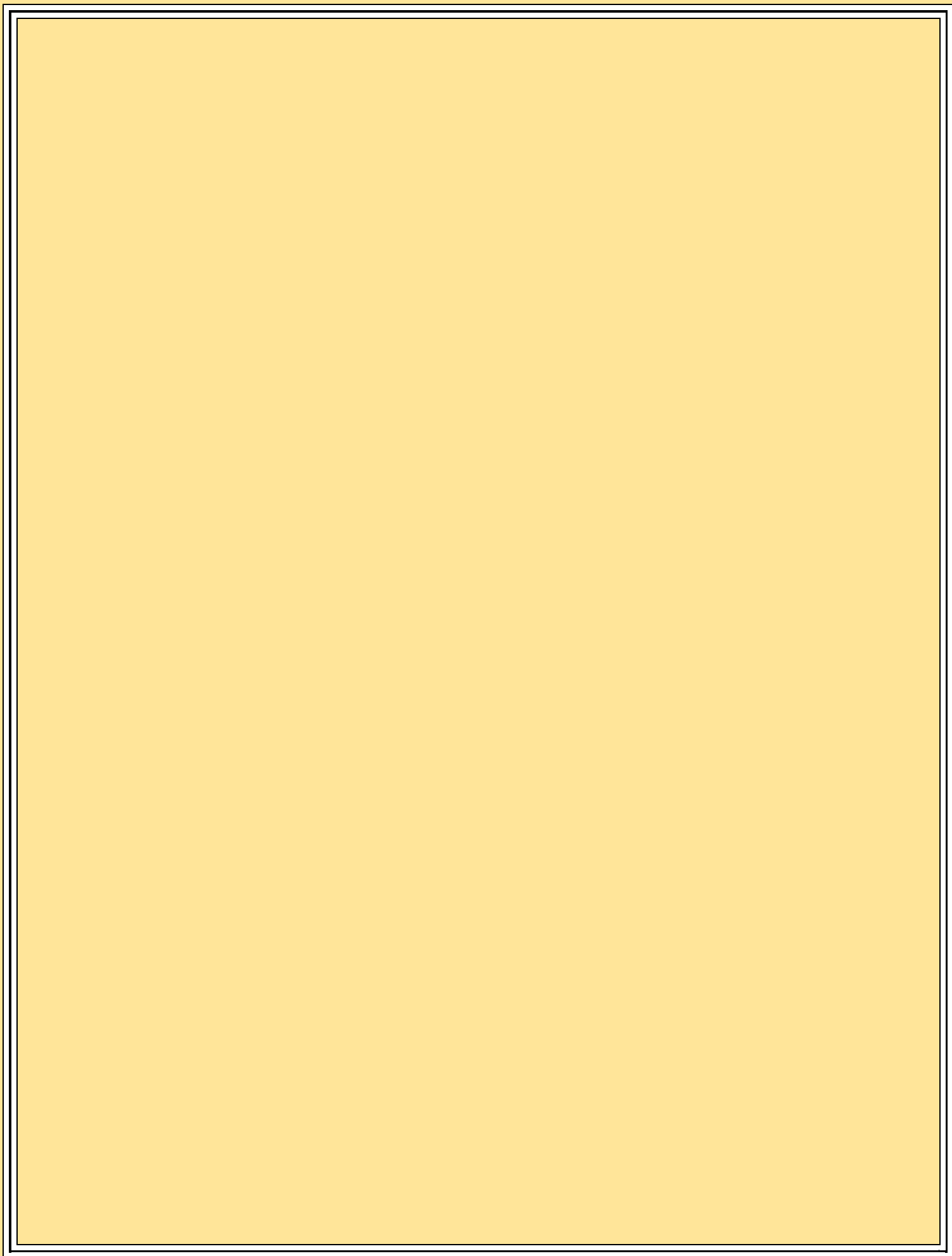
1 सात टॉगों वाला जानवर[4]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसको अपनी सेना पर बहुत गर्व था। वह अपने सिपाहियों पर पैसा भी बहुत खर्च करता था। सो एक बार उसको यह जानने की इच्छा हुई कि उसके सैनिक वास्तव में कितने बहादुर थे।

उसने अपने आदमियों को हुक्म दिया कि वे शहर के बाहर एक मैदान में एक लड़ाई का इन्तजाम करें। तुरन्त ही उसके हुक्म का पालन हुआ।

लड़ाई वाले दिन राजा साहब अपने वज़ीर और दीवानों के साथ मैदान में आ पहुँचे। जब वे उनकी लड़ाइयॉ देख रहे थे तो एक जंगली जानवर जिसकी सात टॉगें थी वहॉ आया और उनके पास आ कर गुर्राने लगा। राजा तो उसको देख कर बहुत ही आश्चर्य में पड़ गया। उसने उसको मारना चाहा पर वह वहॉ से भाग गया।

राजा अपने तेज़ घोड़े पर सवार हो कर अपना बड़ा वाला चाकू ले कर उसके पीछे भागा। दो मील भागने के बाद वह जानवर रुक गया। वहॉ पहुँच कर उसने अपने आपको एक ज़ोर का झटका दिया और एक जिन्न में बदल गया। वह राजा की तरफ पलटा और उसको खा गया।

[4] Seven-Legged Beast (Tale No 1)

वज़ीर ने बड़ी वफादारी और लगन से राजा की आठ दिन तक खोज की पर उसकी कोई खबर नहीं मिली। सो उन्होंने उसके बेटे को बुलाया और उसकी जगह उसके बेटे को वहाँ का राजा बना दिया।

एक दिन राजा के बेटे को यह जानने की बहुत ज़ोर की इच्छा हुई कि उसके पिता की मौत कैसे हुई थी। उसने यह बात अपने वज़ीर से पूछी। वज़ीर ने उसको सब बातें बता दीं तो उससे सारा हाल सुनने के बाद उसने भी उसी जगह एक दूसरा शानदार लड़ाई का मुकाबला रखा जहाँ उसके पिता ने रखा था।

नियत समय पर वह और उसके दरबार के सभी लोग वहाँ इकट्ठा हुए। उन लोगों को वहाँ पर आये अभी बहुत देर नहीं हुई थी कि वही सात टाँगों वाला जंगली जानवर वहाँ फिर से आ गया और उन सब पर भयानक रूप से गुर्राता हुआ वहाँ से चला गया।

जब राजा के प्रधान मन्त्री ने यह देखा तो वह बहुत ज़ोर से हँस पड़ा। राजा ने उससे पूछा कि वह क्यों हँसा। तो वज़ीर ने कहा — "हुज़ूर मैं इसलिये हँसा कि यह वही जानवर है जिसने आपके पिता को हमारे बीच से उठाया था।"

"अच्छा ऐसा है क्या। तब तो मैं उसको जरूर मारूँगा क्योंकि मुझे तब तक शान्ति नहीं मिलेगी जब तक मैं अपने दुश्मन को मार नहीं लूँ।"

ऐसा कह कर वह भी अपने घोड़े पर सवार हुआ और उस जानवर के पीछे भाग लिया। वह जानवर उसको कुछ दूर तक उसी तरह भगा कर ले गया जैसे कि वह उसके पिता को ले गया था। वहाँ जा कर वह रुक गया अपने आपको झंझोड़ा और अपने असली रूप में आ कर राजा के ऊपर उछला।

राजा यह देख कर डर गया और दिल से उसने भगवान से प्रार्थना की कि वह उसको उससे बचाये। भगवान ने उसकी प्रार्थना सुन ली और अपने एक देवदूत[5] को उसके पास भेजा जो उसको यह बताये कि उसको इस जिन्न से कैसे बचना है।

देवदूत ने राजा कहा — "यह जिन्न सबसे ज़्यादा ताकतवर जिन्न है। अगर इसके शरीर के खून की एक भी बूँद जमीन पर गिर गयी और तब तक अगर यह ज़िन्दा है तो उससे तुरन्त ही एक और ऐसा ही जिन्न पैदा हो जायेगा।

फिर वह उछल कर तुम्हारे ऊपर कूद पड़ेगा और तुम्हारे शरीर के टुकड़े टुकड़े कर देगा। मगर तुम डरो नहीं। लो तुम यह दो फल वाला तीर लो और इससे इस जिन्न की दोनों ऑखें फोड़ दो। इससे यह नीचे गिर जायेगा और मर जायेगा।" इस तरह से वह देवदूत उसको वह दो फल वाला तीर दे कर वहाँ से गायब हो गया।

[5] Translated for the word "Angel"

तीर से लैस हो कर राजा आगे बढ़ा। वह उस जिन्न से करीब **40** मिनट तक लड़ा। आखीर में उसने अपना वह दोहरे फल का तीर उसकी आखों में मार दिया जिससे वह मर गया।

जब राजा ने पक्का कर लिया कि उसका दुश्मन मर गया है तो उसने अपनी तलवार निकाली और उसका सिर काट लिया। उसको उसने अपने एक तीर की नोक पर रखा और वापस महल की तरफ चल दिया।

वहॉ जा कर उसने उसको अपने महल के **12** हजार कमरों में से एक कमरे में रख दिया। उसने उस कमरे का ताला लगाया और उस कमरे की चाभी अपनी मॉ को दे कर उससे कहा कि वह उस कमरे का दरवाजा किसी भी हालत में न खोले।

पर क्योंकि उसने अपनी मॉ को यह नहीं बताया कि उसने उस कमरे में इतनी सावधानी से क्या चीज़ बन्द कर रखी थी उसकी मॉ ने सोचा कि शायद उस कमरे में कोई खास खजाना बन्द होगा।

यह सोच कर उसके मन में उसको देखने की इच्छा हो आयी। सो एक दिन वह उस कमरे की तरफ गयी और उसने उसका दरवाजा खोल दिया।

उसको उस कमरे में कुछ दिखायी नहीं दिया क्योंकि उसके बेटे ने उस जिन्न का सिर एक कोने में फेंक दिया था हॉ उसको एक हॅसी की आवाज जरूर सुनायी दी।

और फिर ये शब्द — "तेरा बेटा एक जिन्न है। उससे बच कर रहना। वह एक जिन्न है। किसी समय वह तुझे भी मार देगा जैसे उसने मुझे यानी तेरे पति को मारा है। अगर तू ज़िन्दा रहना चाहती है तो तू उसको महल के बाहर निकाल दे।"

राजा की माँ ने पूछा — "अरे यह आवाज कहाँ से आ रही है? और यह तुम क्या कह रहे हो?"

वही आवाज फिर बोली — "तू झूठमूठ बीमार बनने का बहाना कर और अपने ठीक होने के लिये उससे मादा चीते का दूध मँगवा। उससे कह कि वह यह काम करने के लिये खुद वहाँ जाये और उसको ले कर आये।"

अगली सुबह भारी और दुखी दिल से राजा एक जंगल की तरफ जाता देखा गया जहाँ चीते और दूसरे जंगली जानवर घूमते हुए देखे जाते थे। जल्दी ही उसको एक मादा चीता दिखायी दे गयी जो अपने दो बच्चों के साथ धूप में बैठी हुई थी।

उसको वहाँ देख कर वह एक पेड़ पर चढ़ गया और वहीं से उसके एक थन में तीर मारा। इत्तफाक से उसके उस थन में कई दिनों से बहुत दर्द हो रहा था क्योंकि उसके पास ही उसके एक फोड़ा हो रहा था। राजा का तीर उस फोड़े में जा लगा जिससे वह फोड़ा फूट गया और मादा चीते को बहुत आराम मिला।

मादा चीता इस आराम के लिये उसकी बहुत कृतज्ञ हुई। उसने ऊपर की तरफ देखा और उससे नीचे उतरने की प्रार्थना की। उसने उससे पूछा कि इसके बदले में उसको क्या चाहिये।

राजा ने उससे कहा कि उसको कुछ नहीं चाहिये सिवाय उसके थोड़े से दूध के जो उसे उसकी बीमार मॉ के लिये चाहिये था। मादा चीते ने तुरन्त ही उसकी बोतल अपने दूध से भर कर उसको दे दी जो वह अपने साथ ले कर आया था।

फिर उसने उसको अपने कुछ बाल दिये और उससे कहा — "जब भी कभी तुम किसी मुश्किल में हो तो इन बालों को सूरज को दिखा देना मैं तुम्हारी सहायता के लिये तुरन्त ही आ जाऊँगी।"

राजा ने उसका वह दूध और उसके बाल लिये और घर आ गया। जब रानी मॉ ने उसको मादा चीते का दूध लाता देखा तो उसे लगा कि शायद वह वाकई कोई जिन्न था। उसने अपने दिल में उसको मारने का पक्का इरादा कर लिया।

वह फिर उस कमरे में गयी जिसमें वह सिर रखा था और उसे अपना पूरा हाल बताया। तो उस बोलने वाले ने उससे कहा — "इस बात से यह पता चलता है कि वह वाकई में एक जिन्न है। एक जिन्न के अलावा कोई और किसी मादा चीते का दूध ला ही नहीं सकता। तू जल्दी से जल्दी उसे मारने का इन्तजाम कर।"

रानी मॉ बोली — "पर मैं उससे कैसे छुटकारा पाऊँ?"

आवाज फिर बोली — "इस बार जब वह तुझसे दोबारा मिलने आये और तेरा हाल पूछे तो तू इससे कहना कि तू अभी भी बहुत कमजोर और बीमार महसूस कर रही है। मादा चीते के दूध ने तेरे ऊपर कुछ ज़्यादा असर नहीं किया।

पर सुना है एक राजकुमारी है जो फलॉ फलॉ ऊॅची पहाड़ी पर एक किले में अकेली रहती है। अगर वह तेरे पास आ जाये और तुझे छू ले तो उसके छूने से ही तू ठीक हो जायेगी। यह सुन कर तेरा बेटा उस भयानक किले में जायेगा तो निश्चित रूप से रास्ते में ही मारा जायेगा।"

अगले दिन शाम को जब राजा अपनी मॉ को देखने गया और उससे पूछा — "मॉ अब तुम कैसी हो? क्या अब तुम पहले से कुछ अच्छी हो?"

रानी मॉ रोती हुई सी बोली — "कहॉ बेटा। इस मादा चीते के दूध ने तो मुझे बिल्कुल भी फायदा नहीं किया। पर कल मैंने एक सपना देखा कि एक राजकुमारी है जो फलॉ फलॉ ऊॅची पहाड़ी पर एक किले में अकेली रहती है।

अगर वह मेरे पास आ जाये और मुझे छू ले तो उसके छूने से ही मैं बिल्कुल ठीक हो जाऊॅगी। जब तक वह यहॉ नहीं आती और मुझे छू नहीं लेती मैं ठीक नहीं हो सकती।

राजा बोला — "माँ थोड़ा धीरज रखो। मैं उस राजकुमारी को तुम्हारे पास जरूर ले कर आऊँगा। अगर नहीं ला सका तो राज्य छोड़ दूँगा।"

सो अगली सुबह राजा ने अपना सबसे तेज़ भागने वाला घोड़ा उठाया और उस पर बैठ कर अपनी उस खतरनाक यात्रा पर चल दिया। वह मादा चीते के दिये हुए जादू के बालों को साथ ले जाना नहीं भूला था।

जैसे ही सूरज निकला उसने वे बाल सूरज को दिखाये। तुरन्त ही मादा चीता और उसके दोनों बच्चे वहाँ आ गये। मादा चीते ने पूछा — "क्या बात है?"

राजा बोला — "फलाँ फलाँ जगह एक राजकुमारी अकेली रहती है।"

"और तुम्हें उसको लाना है? और यह तुम नहीं कर सकते। कई लोगों ने उसको वहाँ से लाने की कोशिश की है क्योंकि राजकुमारी बहुत सुन्दर है पर कोई भी अब तक उसके पास भी नहीं पहुँच सका है।"

राजा बोला — "मैं कोशिश करूँगा चाहे इस कोशिश में मेरी जान ही क्यों न चली जाये पर में उसे ले आऊँ।" यह कहते हुए राजा वहाँ से चल दिया।

मादा चीता अपना भला करने वाले को इस तरह अपने को छोड़ कर जाते हुए नहीं देख सकती थी सो वह अपने दोनों बच्चों के साथ

उसके पीछे पीछे दौड़ी और उससे अपने ऊपर चढ़ जाने को कहा। राजा उसके ऊपर बैठ गया और वे सब कुछ ही देर में उस किले के पास पहुँच गये।

वहाँ पहुँच कर मादा चीता राजा से बोली — "देखो यहाँ पर इस किले के तीन दरवाजे हैं। राजकुमारी के पास पहुँचने से पहले उन तीनों दरवाजों से हो कर गुजरना जरूरी है।

पहले दरवाजे के पास एक बहुत बड़ा लोहे का टुकड़ा रखा है जिसको एक लकड़ी की कुल्हाड़ी से तोड़ना जरूरी है नहीं तो दरवाजा नहीं खुलेगा।

दूसरे दरवाजे के पास एक नकली गाय खड़ी है जिसके चारों तरफ असली जिन्न खड़े हैं। अगर कोई भी भी आदमी उस गाय को दुह सकता है तो वह उस दरवाजे में से हो कर जा सकता है। और अगर नहीं दुह पाता तो वे जिन्न लोग उसको मार देते हैं।

तीसरे दरवाजे के पास राजकुमारी खुद बैठती है। अगर वह तुमसे खुश है तो वह तुम्हारा स्वागत करेगी और अगर खुश नहीं है तो वह तुमको मार डालेगी।"

यह सब सुन कर तो राजा बहुत ही डर गया। उसने मादा चीते से उसकी सहायता की प्रार्थना की।

मादा चीता बोली — "ठीक है मैं तुम्हारी सहायता करूँगी। मेरे पास एक जादू है जिसकी सहायता से मैं उस लोहे के टुकड़े में घुस

जाऊँगी। और जब तुम उसको अपनी लकड़ी की कुल्हाड़ी से तोड़ोगे तो मैं उसको दो टुकड़ों में तोड़ दूँगी।

चौकीदार सोचेगा कि तुमने वह लोहे का टुकड़ा तोड़ा है और वह तुमको पहले दरवाजे से अन्दर जाने देगा।"

तभी मादा चीते के दोनों बच्चों में से एक बच्चा बोला — "और मैं उस गाय की मूर्ति में घुस जाऊँगा और उसको दूध देने पर मजबूर कर दूँगा। और उसके पास खड़े जिन्नों को जब तुम दूध दुह रहे होगे तो उनको तुमसे दूर रखने में सहायता करूँगा। इस तरह से तुम दूसरे दरवाजे से हो कर निकल जाओगे।"

इसके बाद मादा चीते के दूसरे बच्चे ने कहा — "और मैं राजकुमारी की ऑखों में अपना जादू डाल दूँगा जिससे जब वह तुम्हारी तरफ देखेगी तो तुम उसको सूरज की तरह से चमकीला पायेगी। सो वह तुमको देखते ही अपना तीसरा दरवाजा खोल देगी और फिर जो तुम कहोगे वह वही करेगी।"

सो उन तीनों ने अपने अपने वायदे वफादारी से निभाये। इस तरह से राजा तीसरे दरवाजे के पार पहुँच गया। राजकुमारी ने जैसे ही उसको देखा तो उसकी बहादुरी और सुन्दरता से बहुत प्रभावित हुई। उसने राजा से अपने साथ शादी करने के लिये कहा।

मादा चीता और उसके दोनों बच्चे अपनी मॉद में लौट गये।

कुछ दिन बाद ही राजा राजकुमारी को ले कर राजमहल पहुँचा और जा कर मॉ से बोला — "मॉ उस जगह को जाने वाला रास्ता

बहुत खतरनाक था। मैं तो रास्ते ही में मर जाता अगर मादा चीता और उसके दो बच्चों ने मेरी सहायता न की होती। भगवान को धन्यवाद दो कि मैं सही सलामत वापस लौट आया।"

कुछ देर और बात करने के बाद उसने माँ को जिन्न के सिर के बारे में बताया कि वह उसके सामने सबसे पहले कैसे एक सात टाँगों वाले जानवर के रूप में प्रगट हुआ था। फिर कैसे वह उसको एक जगह भगा कर ले गया था।

जहाँ जा कर वह अपने असली रूप में बदल गया – एक बहुत बड़े भयानक जिन्न के रूप में। वह उस पर कूदने को ही था उसको मार कर खाने वाला ही था जैसे कि उसने उसके पिता के साथ किया था कि तभी भगवान के भेजे हुए दूत ने उसको बचा लिया।

उसकी माँ तो यह सुन कर ताज्जुब में पड़ गयी। वह बोली — "बेटे, तब तो मुझे धोखा दिया गया था। उस दिन की शाम को जब तुमने मुझसे महल की चाभियाँ माँगी थीं तब मैं उसके कई कमरों को देखने गयी।

तब मैं एक ऐसे कमरे के दरवाजे पर आयी जिसमें से मुझे हँसी की आवाज सुनायी दी। मैंने सोचा कि देखूँ तो इसमें कौन हँस रहा है सो मैंने उसका ताला खोला और अन्दर गयी तो मुझे एक आवाज आयी — "ध्यान दे कर सुन। तेरा बेटा एक जिन्न है जो तुझको खा जाना चाहता है। मैं तेरे पति का सिर हूँ। उसने मुझे मारा तो तू उसे मार दे नहीं तो वह तुझे भी मार देगा।"

मेरे बेटे मैंने उसकी बातों पर विश्वास कर लिया और उसी की सलाह पर मैंने इस आशा में तुझे मादा चीते का दूध लाने भेजा कि वह तुझे मार देगी।

पर जब तू मादा चीते से बच कर आ गया तो फिर मैंने उसी सिर की सलाह पर राजकुमारी को लाने भेजा। मैं जानती थी कि वहॉ का रास्ता खतरों से भरा है फिर भी।

पर भगवान तेरे साथ था। उसी ने तुझे अपना देवदूत तेरे पास भेज कर तुझे रास्ता दिखाया और उसी ने मादा चीते के रूप में तेरी सहायता की। उस भगवान को लाख लाख धन्यवाद।"

कह कर उसने अपने बेटे को गले लगा लिया और बहुत ज़ोर से रो पड़ी।

इन घटनाओं के कुछ दिन बाद ही राजा और राजकुमारी की शादी हो गयी और सब लोग शान्ति से बहुत दिनों तक खुशहाली में रहे।

2 एक बिल्ली जो रानी बन गयी[6]

“उफ़। उफ़। मेरा इतनी सारी स्त्रियों से शादी करने का क्या फायदा जब भगवान ने मुझे उनसे एक बेटा भी नहीं दिया। अगर मैं मर गया तो मेरा नाम तो इस देश से ही मिट जायेगा।”

ऐसा कहते हुए काश्मीर का एक बहुत बड़ा राजा अपने जनानखाने में गया और उसने अपनी बहुत सारी रानियों को धमकी दी कि अगर उन्होंने उसको अगले साल में एक बेटा नहीं दिया तो वह उन सबको अपने राज्य से निकाल देगा।

राजा तो यह कह कर चला गया और उसकी सब पत्नियों ने उसके जाने के बाद भगवान शिव की प्रार्थना करनी शुरू कर दी कि वह राजा की इच्छा पूरी करने में उनकी सहायता करें।

वे उत्सुकता से कई महीनों तक इस उम्मीद में इन्तजार करती रहीं कि वह राजा को यह अच्छी खबर सुना सकें। पर आखिर उनको पता चल गया कि उनका यह इन्तजार बेकार था। अगर उनको शाही महल में रहना है तो उनको कुछ और तरकीब इस्तेमाल करनी पड़ेगी।

सो नियत समय पर राजा को सूचित कर दिया गया कि उसकी एक रानी को बच्चे की आशा हो गयी थी। कुछ समय बाद यह

[6] The Cat Who Became a Queen (Tale No 2)

खबर फैला दी गयी कि उस रानी को एक बेटी हुई है। पर जैसा कि हमने बताया ऐसा कुछ था ही नहीं और ऐसा कुछ हुआ भी नहीं।

तो फिर सच क्या था? सच तो यह था कि उनके यहाँ एक बिल्ली थी जिसने कई बच्चों को जन्म दिया था। एक रानी ने उनमें से उसकी एक बच्ची को अपना लिया था।

जब राजा ने यह खबर सुनी तो वह तो बहुत खुश हो गया। उसने बच्चे को अपने पास लाने के लिये कहा। रानियों ने यह तो पहले से ही सोच रखा था कि राजा की यह इच्छा तो स्वाभाविक थी और वह ऐसी इच्छा करेगा भी सो इस बात के लिये वे पहले से ही तैयार थीं।

उन्होंने दूत से कहा — "जाओ और राजा से कहना कि ब्राह्मणों ने कहा है कि बच्ची को उसकी शादी से पहले उसके पिता को नहीं देखना।" इस तरह से यह मामला कुछ समय के लिये टल गया।

राजा भी लगातार अपनी रानियों से अपनी बेटी के बारे में पूछताछ करता रहता था। रानियाँ उसको उसके बारे में अच्छा अच्छा बताती रहतीं – उसकी सुन्दरता के बारे में उसकी होशियारी के बारे में। यह सब सुन सुन कर राजा बहुत खुश होता रहा।

हालाँकि राजा एक बेटा चाहता था पर वह यह सोच कर सन्तुष्ट हो गया कि भगवान ने उसको बेटी ही दी तो कोई बात नहीं

वह उसके लिये एक ऐसा दुलहा तलाश करेगा जो उसके लायक हो और फिर बाद में उसका राज्य सँभाल सके।

समय आने पर राजा ने अपनी बेटी के लिये दुलहे की खोज करनी शुरू की। एक अच्छा होशियार और सुन्दर लड़का ढूँढ लिया गया और शादी की तैयारियाँ शुरू हो गयीं।

अब राजा की रानियाँ क्या करें। अब तो उनके लिये अपने इस धोखे को आगे बढ़ाना नामुमकिन हो गया। दुलहा आयेगा तो वह भी अपनी होने वाली पत्नी को देखना चाहेगा। इसके अलावा राजा भी अब अपनी बेटी को देखना चाहेगा।

सो उन्होंने सोचा कि "अच्छा तो यही होगा कि हम राजकुमार को यहाँ बुलायें और उसको सब बता दें। फिर जो होता हो उसका इन्तजार करें। अभी हम लोग राजा को यहीं छोड़ते हैं। उसको सन्तुष्ट करने के लिये फिर बाद में सोचेंगे।"

सो उन्होंने राजकुमार को बुलवाया और उसको सब कुछ बता दिया। उन्होंने उससे यह पहले से ही वायदा करवा लिया कि वह इस बात को अपने तक ही रखेगा यहाँ तक कि अपने माता पिता को भी नहीं बतायेगा।

शादी बहुत धूमधाम से मनायी गयी जैसी कि इतने बड़े और अमीर राजा की बेटी की होनी चाहिये। राजा को इस बात के लिये आसानी से मना लिया गया कि वह पालकी में बैठी दुलहिन को अभी न देखे।

पालकी में केवल बिल्ली ही थी और वह राजकुमार के देश सुरक्षित रूप से पहुँच गयी। राजकुमार ने जानवर की बहुत अच्छी तरह से देखभाल की और उसको अपने निजी कमरे में बन्द कर के रखा। उस कमरे में वह किसी को घुसने नहीं देता था अपने माता पिता को भी नहीं।

एक दिन जब राजकुमार वहाँ नहीं था तो उसकी माँ ने सोचा कि वह आज बेटे के कमरे के बाहर से ही अपनी बहू से बात करेगी।

सो वह बेटे के कमरे के बाहर ही खड़ी हो कर ज़ोर से बोली — "बहू मुझे बहुत अफसोस है कि तुम यहाँ इस कमरे में इस तरह से अकेली बन्द हो और तुमको किसी से मिलने की इजाज़त नहीं है। इस बात से तो तुम जरूर ही बहुत दुखी होगी।

खैर, आज मैं बाहर जा रही हूँ तुम अगर चाहो तो आज बिना किसी डर के कि कोई तुम्हें देख लेगा बाहर निकल सकती हो। तुम बाहर आओगी न?"

बिल्ली सब समझ गयी और यह सुन कर बहुत रोयी जैसे कोई इन्सान रोता है। ओह उसके ऑसू तो राजकुमार की माँ के दिल को छेद ही गये। यह देख कर उसने इस मामले पर अपने बेटे से सख्ती से बात करने का फैसला किया कि जैसे ही वह आयेगा वह उससे जरूर ही बात करेगी।

बिल्ली के आँसू पार्वती जी[7] तक पहुँचे तो वह तुरन्त ही अपने स्वामी शिव जी के पास गयीं और उनसे प्रार्थना की कि वह उस लाचार बिल्ली पर दया करें।

शिव जी बोले — "उससे कहना कि एक तेल है जो अगर वह अपने शरीर के सारे बालों पर मल ले तो वह एक बहुत सुन्दर स्त्री बन जायेगी। वह तेल उसको उसी कमरे में रखा मिल जायेगा जिसमें वह बन्द है।"

पार्वती जी ने इस अच्छी खबर को बिल्ली को देने में बिल्कुल भी देर नहीं की। बिल्ली ने भी तुरन्त ही तेल ढूँढा और उसको अपने शरीर के सारे बालों पर मल लिया। तुरन्त ही वह एक बहुत सुन्दर लड़की में बदल गयी।

पर एक बहुत छोटी सी जगह उसने अपने कन्धे पर छोड़ दी जिस पर बिल्ली के बाल अभी भी मौजूद थे। वह उसने जानबूझ कर छोड़े थे ताकि उसका पति उसकी इस हरकत को उसकी कोई चाल न समझ ले और उसको अपनी पत्नी मानने से इनकार कर दे।

शाम को राजकुमार घर लौटा तो अपनी सुन्दर पत्नी को देख कर बहुत खुश हुआ। अब उसकी वे सारी चिन्ताऐं खत्म हो गयीं कि अब वह अपनी माँ को अपने अकेलेपन का क्या जवाब देगा।

उसको तो बस खुश खुश मुस्कुराती हुई बहू को देखना था और उसका रोना तो बिल्कुल बेकार था।

---

[7] Paarvatee Jee is the wife of Shiv Jee.

कुछ हफ्ते बाद राजकुमार अपनी सुन्दर पत्नी को ले कर अपने ससुर से मिलने गया। राजा ने उसको अपनी बेटी समझा और उसको देख कर वह बहुत खुश हो गया।

उसकी सब पत्नियों ने भी बहुत खुशियाँ मनायीं कि उनकी प्रार्थनाऐं स्वीकार कर ली गयीं और अब वे महल में रह सकती थीं। समय आने पर राजा ने भी अपने दामाद को राजा बना दिया।

सो वह अब दो राज्यों का राजा बन गया – अपने पिता के राज्य का और अपने ससुर के राज्य का। इस तरह वह बहुत अमीर राजा बन गया।

3 भला राजा हातम[8]

एक बार की बात है कि एक गरीब गॉव वाला था जो जंगल से लकड़ी काट कर और उसको बाजार में बेच कर अपना और अपने परिवार का गुजारा करता था। उसके परिवार में उसकी पत्नी और उसकी सात बेटियॉ थीं।

उसने कभी मॉस नहीं खाया था और न ही कभी जूता पहना था। बस एक फटा सा कपड़ा उसकी पीठ पर पड़ा रहता था।

एक दिन जब उसको कुछ अच्छा सा नहीं लग रहा था तो वह एक पेड़ के नीचे आराम करने के लिये लेट गया। उस समय अच्छी किस्मत लाने वाली चिड़िया ह्यूमा[9] उसके आसपास घूम रही थी। उसने देखा कि वहॉ एक आदमी लेटा हुआ है जो बहुत गरीब और बीमार है। यह देख कर उसको उस आदमी पर दया आ गयी।

वह उस आदमी के पास से उड़ी और उसने एक सोने का अंडा उसकी लकड़ियों के गट्ठर के पास डाल दिया। कुछ देर बाद जब उस लकड़हारे की ऑख खुली तो उसने अपनी लकड़ियों के गट्ठर के पास एक सोने का अंडा पड़ा देखा। वह उसे देख कर बहुत खुश

---

[8] Good King Haatim (Tale No 3)

[9] Huma – a name of a fabulous bird. It is believed that every head it overshadows will wear a crown. The Arabs call it “Anqaa” and the Persians call it “Simourgh”. This is the same bird which is mentioned in “Sheba Ki Rani Makeda and Raja Solomon” and “Raja Solomon” books by Sushma Gupta in Hindi language published by Prabhat Prakashan, 2019.

हुआ और उसने उसे उठा कर अपने कमर में बॉधने वाले कपड़े में बॉध लिया

उसको ले कर वह वौनी[10] के पास गया जो अक्सर उसकी लकड़ियॉ खरीदा करता था। उसने वौनी को वह सोने का अंडा भी बेच दिया। वह सोने का अंडा उसने बहुत थोड़े से पैसे दे कर उससे खरीद लिया। क्योंकि लकड़हारे बेचारे को तो पता ही नहीं था कि वह अंडा कितना कीमती था पर वौनी तो इस बात को जानता था।

उसने लकड़हारे से कहा कि वह उसको वह चिड़िया ला कर दे जिसका यह अंडा था और वह उसको बदले में उसको एक रुपया देगा। लकड़हारे ने उससे उस चिड़िया को लाने का वायदा किया और घर चला गया।

अगले दिन वह सुबह ही जंगल चला गया और रोज की तरह लकड़ी काट कर अपना गट्ठर तैयार किया। उसको ले कर वह घर की तरफ चल पड़ा। लौटते समय वह उसी पेड़ के नीचे बैठ गया जिसके नीचे उसने पहले दिन अंडा पाया था और सोने का बहाना करने लगा।

ह्यूमा चिड़िया वहॉ फिर आयी और यह देखते हुए कि वह आदमी अभी भी उतना ही गरीब था जितना कि कल तो उसको लगा कि शायद उसने उसका दिया हुआ अंडा देखा नहीं होगा तो

[10] Woni means the wood merchant in Kashmir

उसने वहीं एक और अंडा इस तरह से उसके पास दे दिया कि जागने पर वह उसको देखने से किसी भी तरह से न चूक सके।

पर लकड़हारे ने उस चिड़िया को देख लिया उसे पकड़ लिया और लकड़ी बेचने वाले के पास ले कर चल दिया।

चिड़िया चिल्लायी — "अरे तुम मेरे साथ क्या करने जा रहे हो। मुझको मारना नहीं और मुझे बन्द भी नहीं करना। मुझे छोड़ दो। तुमको इसका इनाम जरूर मिलेगा।

देखो तुम मेरा एक पंख तोड़ लो और उसको आग के पास ले जाओ तो तुम बहुत जल्दी मेरे देश कोहकाफ़[11] पहुँच जाओगे जहाँ मेरे माता पिता तुमको इनाम देंगे जिसकी इस दुनियाँ में कोई कीमत भी नहीं लगा सकेगा।"

पर वह लकड़हारा तो सुनने वाला नहीं था। वह तो बस एक रुपये के पीछे पागल था जो कि इस चिड़िया को उसे दे देने पर उसे यकीनन ही मिल जाता। सो उसने वह चिड़िया एक कपड़े में बाँधी और तेज़ी के साथ वौनी के पास भाग चला।

अब क्योंकि वह चिड़िया एक कपड़े में बन्द थी सो वह वौनी के पास पहुँचने से पहले ही दम घुट जाने की वजह से मर गयी।

लकड़हारे ने सोचा "अब मैं क्या करूँ? अब तो मुझे वौनी इस मरी हुई चिड़िया का एक रुपया नहीं देगा। हा हा हा। अब मैं

---

[11] Koh-Qaaf – the Muslims believe that these mountains encircle the world and that they are inhabited by demons. They think that this mountain range of emerald gives us an azure hue to the sky. This name is also used for Mountain Caucasus.

इसका एक पंख आग के पास ले जाता हूँ। हो सकता है कि मरी हुई और ज़िन्दा चिड़िया के पंख में कोई खास फर्क न हो।"

उसने ऐसा ही किया। तो लो वह तो तुरन्त ही कोहकाफ़ के पहाड़ पर मौजूद था जहाँ उसने चिड़िया के माता पिता को ढूँढ लिया और उसके साथ जो कुछ भी हुआ वह सब बता दिया।

सोचो ज़रा जब उन्होंने मरी हुई चिड़िया को देखा होगा तो उनको कितना अफसोस हुआ होगा। वे सब मिल कर बहुत रोये।

तभी वहाँ से एक अजनबी चिड़िया गुजर रही थी तो उसने इन सबके रोने की आवाज सुनी। वह वहाँ आयी और उनसे पूछा कि क्या बात थी और वे सब क्यों रो रहे थे। यह चिड़िया अपनी चोंच में घास का एक तिनका दबाये लिये चली आ रही थी जिससे वह किसी भी मरे हुए को ज़िन्दा कर सकती थी।

वह बोली — "आप सब क्यों रो रहे हैं?"

वे सब चिड़ियें बोलीं — "क्योंकि हमारा एक सम्बन्धी मर गया है और अब हम उससे फिर कभी बात नहीं कर पायेंगे।"

उस अजनबी चिड़िया ने कहा — "तुम लोग रोओ नहीं। तुम्हारी यह चिड़िया फिर से ज़िन्दा हो जायेगी।" कह कर उसने वह घास का तिनका जो उसकी चोंच में था उसके मुँह में रख दिया और लो वह तो तुरन्त ही ज़िन्दा हो गयी।

जब ह्यूमा चिड़िया ने लकड़हारे को देखा तो उसने उसकी बेवफाई और लापरवाही पर बहुत डाँटा और बोली — "मैं तो

तुमको बहुत बड़ा और खुशहाल आदमी बनाना चाहती थी पर अब तुम अपना लकड़ी का यह गट्ठर उठाओ और अपने घर जाओ।"

उस चिड़िया के यह कहते ही लकड़हारे ने अपने आपको उसी जंगल में पाया जहाँ वह लकड़ियाँ काटा करता था। उसका लकड़ी का गट्ठर भी वहीं पड़ा था जहाँ वह कोहकाफ़ जाने से पहले उसको छोड़ कर गया था।

उसने अपना वह लकड़ी का गट्ठर बेचा और फिर दुखी मन से अपनी पत्नी और बच्चियों के पास अपने घर चला गया।

इस घटना के बाद उसने ह्यूमा चिड़िया को फिर कभी नहीं देखा।

समय बीतता गया। लकड़हारे की बेटियाँ बड़ी होती गयीं। अब उनकी शादी करने का समय आ गया। पर वह लकड़हारा उनकी शादी कैसे करे। वह तो बेचारा मुश्किल से खाने के लिये जुटा पाता था और ऐसे गरीब घर में रिश्ता जोड़ना कोई क्यों चाहेगा।

सो इस मुश्किल की घड़ी में उसने अपने एक दोस्त से सलाह ली तो उसने उससे कहा कि वह राजा हातिम[12] के पास जाये क्योंकि वह एक बहुत ही भला और दयावान राजा था। वह उससे जा कर मिले और उसकी सहायता माँगे।

---

[12] Hatim Tai was an Arabian King who lived in 6th century. He is renowned for his generousity

उन दिनों इत्तफाक कुछ ऐसा हुआ कि राजा हातिम काफी गरीब हो गया था और अब तो वह अपना गुजारा भी लोगों का चावल कूट कर करता था।

हालाँकि हालात ने उसको इतना गरीब बना दिया था कि उसके मुकाबले का दूसरा गरीब उसके देश में मिलना मुश्किल था पर फिर भी वह अभी भी बहुत दयावान था और हमेशा ही दूसरों की सहायता करने को इच्छुक रहता था।

जब लकड़हारा राजा हातिम के देश पहुँचा और उससे मिला तो वह उससे बड़े प्रेम से मिला। लकड़हारे को तब तक यह भी नहीं पता था कि वह कौन है और वह किससे मिल रहा है। उसने तो बस उसको अपनी दुखभरी कहानी सुनायी और राजा हातिम से सहायता माँगने की इच्छा से उसका पता पूछा।

गरीब राजा हातिम ने उससे रात को रुकने के लिये और वहाँ से अगले दिन सुबह चले जाने के लिये कहा। लकड़हारा इस बात पर राजी हो गया और उसके साथ उसके घर चला गया।

उस रात राजा हातिम ने खाना नहीं खाया क्योंकि उसने अपना खाना अपने मेहमान को खिला दिया था।

पर सुबह को उसने अपने मेहमान को सच बोला — "दोस्त मैं वही हूँ जिसको तुम ढूँढ रहे हो। पर देखो मैं तो खुद ही तुम्हारी तरह से गरीब हूँ। मुझे बहुत अफसोस कि मैं तुम्हारे लिये कुछ नहीं

कर सकता क्योंकि मैं तो तुम्हें दूसरी बार खाना भी नहीं खिला सकता।

पर हॉ अगर तुम मेरी एकलौती बेटी को स्वीकार कर लो तो तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी। तुम उसको बेच कर कुछ पैसा कमा सकते हो और उस पैसे से अपनी बेटियों की शादी कर सकते हो। जाओ भगवान तुम्हारी सहायता करे।"

लकड़हारा बोला — "हे राजन, तुम्हारी दया से मेरा दिल पिघल गया है। मैं तो तुम्हारी दया के लिये ठीक से धन्यवाद भी नहीं दे सकता। भगवान तुम्हें इसका अच्छा फल दे। ठीक है विदा।"

लकड़हारा राजकुमारी को ले कर वहॉ से चल दिया। रास्ते में वे दोनों एक ऐसी जंगली जगह से गुजरा जहॉ एक राजकुमार शिकार खेल रहा था। इत्तफाक से उस राजकुमार ने लकड़हारे के साथ जाती राजकुमारी को देख लिया तो वह उसके प्रेम में पड़ गया। उसने उससे कहा कि वह उसको अपना दामाद[13] बना ले।

लकड़हारा तुरन्त ही राजी हो गया और उसने उन दोनों की शादी कर दी। इससे तो लकड़हारे के हाथ में बहुत सारा पैसा आ गया। इस पैसे से उसने सबसे पहले अपने लिये एक मकान बनवाया फिर अपनी सातों लड़कियों की शादी अच्छे घरों में कर दी।

इस बीच राजकुमार अपनी पत्नी के साथ आराम से रहता रहा पर एक दिन उसको सच का पता चल ही गया।

---

[13] Translated for the word "Son-in-law"

एक बार उसने अपनी पत्नी के सामने एक गरीब आदमी को दान दिया तो उसकी पत्नी ने कहा कि उसने एक बहुत ही हातिमी[14] काम किया है।

राजकुमार ने उससे पूछा कि वह हातिम को कैसे जानती है। इस पर उसने राजकुमार को सब कुछ बता दिया – कैसे लकड़हारा उसके पिता के पास सहायता के लिये आया और फिर कैसे कुछ न होने की वजह से उसके पिता ने उसको उसे एक गुलाम की तरह से दे दिया था।

यह सुन कर राजकुमार ने लकड़हारे को बुलवा भेजा। लकाड़हारे ने उससे भी वही बात कही जो राजकुमारी ने उसे बतायी थी। उसने उसको ह्यूमा के अंडे और कोहकाफ़ जाने की बात भी बतायी।

राजकुमार तो यह सब सुन कर बहुत ही आश्चर्यचकित रह गया। उसने तुरन्त ही राजा हातिम को बुलवा भेजा और उससे प्रार्थना की कि वही उसके राज्य का मालिक बने। क्योंकि वह तो उसके सामने बहुत छोटा था।

सो हातिम वहॉ का राजा बन गया। लकड़हारे को ज़िन्दगी भर एक बहुत बड़ी पेन्शन मिलती रही। और वोनी को वह सोने का अंडा राजा को देना पड़ा।[15]

[14] Good work or Haatim-like act

[15] Compare this whole story with "The Faithful Prince" in Wide Awake Stories; or "Tales from the Punjab" by Sushma Gupta, the 3rd story "The Faithful Prince".

4 पुनर्जन्म[16]

एक बार की बात है कि एक नौजवान अपना घर और देश छोड़ कर एक अकेली जगह जंगल में ध्यान करने चला गया। वहॉ उसने 12 साल लगाये जिनमें उसने न तो कुछ खाया और न ही कुछ पिया।

जब उसको लगा कि उसने अपना ध्यान पूरा कर लिया तो उसकी इच्छा हुई कि वह एक शहर जाये जो वहॉ से पॉच मील की दूरी पर था।

ऐसा सोच कर वह उस शहर की तरफ चल दिया। रास्ते में वह थकान की वजह से एक पेड़ के नीचे बैठ कर सुस्ताने लगा। जब वह वहॉ बैठ कर सुस्ता रहा था तो वहॉ एक कौआ आया और उसके ऊपर वाली शाख पर आ कर बैठ गया। वहॉ से उसने कुछ नीबू उसके सिर पर गिरा दिये।

यह देख कर वह नौजवान बहुत नाराज हुआ। नाराजी से उसने कौए की तरफ देखा तो वह कौआ मर गया। जब उसने ठीक से

Kashmiris have a legend of Wainadat, an old king of the country, who gave up everything and worked himself, that he might not be chargeable to any person.

[16] Metempsychosis (Tale No 4)
Compare this story with the story of Narottam given on the Web Site : http://www.sushmajee.com/hindupuraan/2padm/1-srishti/27-narottam-1.htm

आराम कर लिया तो वह वहॉ से उठा और फिर से शहर की तरफ चल दिया।

शहर पहुॅच कर वह एक आदमी के घर के ऑगन में गया और घर की मालकिन से कुछ खाने की मॉग की। एक स्त्री ने एक खिड़की से झॉक कर उसको अन्दर आने के लिये कहा और तब तक उसको इन्तजार करने के लिये कहा जब तक उसके पति घर नहीं आ जाते। तभी वह उसको खाना दे पायेगी।

वह नौजवान उसका यह जवाब सुन कर बहुत नाराज हुआ। वह उसको उसके इस जवाब पर शाप देने वाला था कि तभी वह स्त्री बोल पड़ी — "ओ नौजवान, मैं कोई कौआ नहीं हूॅ जो तुम्हारी गुस्से से भरी नजर पड़ते ही मर जाऊॅगी। अच्छा हो अगर तुम अन्दर आ जाओ और मेरे पति के आने तक इन्तजार करो।"

उस आदमी ने वैसा ही किया। वह अन्दर चला गया और उसके पति का इन्तजार करता हुआ वहॉ बैठ गया पर वह यह सोचता रहा कि उस स्त्री को कौए की घटना का पता कैसे चला।

कुछ ही देर में घर का मालिक आ गया तो वह स्त्री उसके पैर धोने के लिये गर्म पानी ले आयी। गर्म पानी से उसने अपने पति के पैर धोये फिर उनको खाना खिलाया।

उसके बाद उसने मेहमान को खाना दिया जब उसने पेट भर कर खाना खा लिया तब उसने अपना खाना खाया। उसके बाद

उसने अपने पति का बिस्तर लगाया। फिर जब वह अपने बिस्तर पर लेट रहा था तब उसने उसके पैर धोये।

सचमुच में वह एक आदर्श पत्नी थी। ऐसा उस साधु को लगा जो अब तक यह सब देख रहा था पर बोला कुछ नहीं था।

जब वह अपने पति के पैर धो रही थी तो उसने अपने पति से कहा — "मुझे कोई कहानी सुनाओ।" आदमी राजी हो गया और उसने एक कहानी सुनानी शुरू की —

"बहुत पुराने समय की बात है कि एक समय में एक ब्राह्मण रहता था। वह बहुत साल तक मरे हुओं की बाद की दशा जानने की इच्छा में प्रार्थना करता रहा।

आखिर देवता उसकी प्रार्थना से खुश हुए और एक दिन जब वह सुबह का अपना नहाना धोना कर रहा था कि उसकी आत्मा उसका शरीर छोड़ कर एक बच्चे में चली गयी जो एक चमार का बच्चा था।[17]

बच्चा बड़ा होता गया। उसने अपने पिता का काम धन्धा सीख लिया। फिर उसकी शादी हो गयी और उसके कई बच्चे हो गये। तभी अचानक उसको अपनी ऊँची जाति की याद आयी तो वह सब कुछ छोड़ कर किसी दूसरे देश चला गया।

---

[17] Chamaar means shoemaker. Shoemakers are considered of very low caste in India. Manu says that the triple order of the passage of the soul through the highest, middle and the lowest stages of existence results from good or bad acts words and thoughts produced by the influence of three Gunas (Sat, Raj and Tam); that for that act of sins a man takes a vegetable or mineral form; for sins of word, the form of a bird or a beast; for sins of thought that a man of lowest cast.

जैसे ही वह वहाँ पहुँचा तो उस देश का राजा मर गया। वहाँ उस राजा का कोई और वारिस नहीं था जिसको वे लोग राजा की गद्दी पर बिठा सकते तो जैसा कि वहाँ का रिवाज था कि ऐसी दशा में वारिस का चुनाव करने के लिये वज़ीर लोग एक हाथी और एक बाज़ पक्षी को बाहर भेज देते थे।

जिस किसी को भी हाथी और बाज़ राजा बना देते वहाँ की जनता भी उसी को अपना राजा स्वीकार कर लेती। इसके अलावा और कोई चारा भी नहीं था। यह बड़े आश्चर्य की बात थी कि हाथी और बाज़ ने इस आदमी को अपना नया राजा चुन लिया।

हाथी ने उसके सामने सिर झुकाया और बाज़ उसके दाँये कन्धे पर बैठ गया और इस तरह से उसको राजा घोषित कर दिया गया।

कुछ साल में उसकी पत्नी को उसका पता चला कि वह कहाँ है सो वह उससे मिलने गयी। उस समय लोगों को यह पता चला कि वह तो एक चमार है और उसकी पत्नी भी एक नीची जाति की है।

यह जान कर लोग चिन्ता में पड़ गये। उनमें से कुछ तो वहाँ से भाग गये कुछ भारी तप करने चले गये कुछ लोग जल कर मर गये कि कहीं ऐसा न हो कि उन्हें अपने धर्म की पूजा न करने दी जाये।

जब राजा ने यह सुना कि उसके राज्य में यह सब हो रहा है तो उसने भी अपने आपको जला लिया।

इसके बाद उसकी आत्मा ब्राह्मण के उसी शरीर में पहुँच गयी जो नदी के किनारे पड़ा हुआ था। आत्मा के अन्दर पहुँचते ही वह शरीर उठ खड़ा हुआ और अपने घर चला गया।

पत्नी ने उसको आता देख कर उससे पूछा — "अरे आज आप अपनी सुबह की पूजा बड़ी जल्दी कर आये।" पर ब्राह्मण ने उसे इस बात का कोई जवाब नहीं दिया। उसके चेहरे पर बस आश्चर्य की एक झलक थी।

उसने सोचा कि क्या यह उसका पुनर्जन्म था? क्या उसने वह सब कुछ सचमुच देखा था और या फिर वह केवल उसका एक सपना ही था?

इस घटना के करीब एक हफ्ते बाद एक आदमी इस ब्राह्मण के ऑगन में आया और बोला कि वह बहुत भूखा है उसको कुछ खाना दे दिया जाये क्योंकि वह पॉच दिन से भूखा है। इतने दिन से उसने कुछ भी नहीं खाया है क्योंकि वह अपने देश से निकल कर भागा फिर रहा है क्योंकि एक चमार उसके राज्य का राजा बना दिया गया था।

उसने आगे बताया कि वहॉ के सारे लोग इधर उधर भाग रहे हैं या फिर इस बुराई के परिणामों से बचने के लिये अपने आपको जला रहे हैं। ब्राह्मण को उस पर दया आ गयी उसने उसको कुछ खाना दे दिया पर कहा कुछ नहीं।

वह सोचता रहा “मैं तो बहुत दिनों से चमार ही रहा हूॅ। मैंने कई साल तक राजा बन कर राज भी किया है। और यह आदमी मेरे विचारों की ही पुष्टि कर रहा है तो भी मेरी पत्नी यह कहती है कि मैं किसी असाधारण समय के लिये घर से गायब नहीं रहा हूॅ।

और मैं उसकी बात पर विश्वास करता हूॅ क्योंकि वह भी और ज़्यादा बूढ़ी नहीं दिखायी देती है और न यह जगह ही कुछ भी बदली हुई दिखायी देती है।”

वह आदमी अपनी पत्नी से बोला — “यहीं मेरी कहानी खत्म होती है जिसका मतलब यह है कि किसी आदमी के विचारों शब्दों और कर्मों के अनुसार ही उसकी आत्मा कई स्तरों[18] से गुजरती है। यहॉ के बाद एक दिन एक युग[19] के बराबर होता है।”

कहानी खत्म हो जाने के बाद पत्नी सोने जाने के इरादे से उस अजनबी की तरफ घूमी और उससे पूछा कि उसको किसी और चीज़ की जरूरत तो नहीं थी।

नौजवान बोला — “केवल खुशी की।”

स्त्री बोली — “तो जाओ और उसे घर में जा कर ढूॅढो। अपने माता पिता के पास वापस जाओ जो तुम्हारी वजह से रोते रोते अन्धे हो गये हैं। तुम जा कर उनकी ऑखों पर अपने हाथ रखो और

[18] Translated for the word “Stages”

[19] A Yug is an age of the world. In Hindu religion it consists of 4,320,000 years.

उनसे कहो कि "आपका बेटा घर वापस आ गया है।" तब तुम खुश होगे।

खुशी हमेशा कर्तव्य के रास्ते पर ही मिलती है। उन्हीं की आज्ञा पालन में मिलती है जिनको भगवान ने हमारे ऊपर रखा है। यह एक पत्नी का कर्तव्य है कि वह अपने पति का कहना माने और उसकी खुशी चाहे।

यह बच्चे का कर्तव्य है कि वह अपने माता पिता का कहना माने और उनकी खुशी के मुताबिक चले। यह जनता का कर्तव्य है कि वह अपने राजा के अनुकूल रहे। और यह हम सबका कर्तव्य है कि हम भगवान को खुश रखें।

सो अब तुम घर जाओ और अपने माता पिता की सेवा करके खुश रहो।"

5 जादू की अँगूठी[20]

एक बार की बात है कि एक सौदागर ने अपने बेटे को 300 रुपये दिये और उससे कहा कि वह दूसरे देशों में जा कर अपनी किस्मत आजमाये। बेटा चल दिया।

वह बहुत दूर नहीं गया था कि रास्ते में उसको कुछ चरवाहे एक कुत्ते के ऊपर झगड़ते हुए मिले। उनमें से कुछ उसको मारना चाहते थे। उस कोमल दिल वाले नौजवान का दिल पसीज गया। उसने उनसे कहा — "मेहरबानी कर के आप लोग कुत्ते को न मारें। मैं इसके लिये आपको 100 रुपये देता हूँ।"

बस उस कुत्ते का सौदा हो गया। नौजवान ने उन चरवाहों को 100 रुपये दिये उनसे कुत्ता लिया और अपनी यात्रा पर आगे चल दिया।

कुछ दूर जा कर उसको कुछ आदमी मिले जिनमें से कुछ एक बिल्ले को मारना चाहते थे और कुछ का कहना था कि उसे न मारा जाये। हमारे बेवकूफ नौजवान का कोमल दिल पसीज गया और उसने कहा — "तुम लोग इस बेचारे जानवर को क्यों मारते हो। मैं तुम लोगों को 100 रुपये देता हूँ तुम इसे मुझे दे दो।"

यह सौदा भी तुरन्त ही पट गया और नौजवान अपना बिल्ला ले कर फिर अपनी यात्रा पर आगे बढ़ गया। आगे चल कर उसे एक

---

[20] The Charmed Ring (Tale No 5)

गॉव में कुछ गॉव वाले मिले जो एक सॉप पर झगड़ रहे थे। कुछ कह रहे थे इसको मार दो और कुछ कह रहे थे कि इसको छोड़ दो।

हमारे बेवकूफ नर्म दिल नौजवान ने कहा — "इस बेचारे को क्यों मारते हो। इसे मुझे दे दो मैं तुम्हें इसके लिये 100 रुपये दे दूँगा।"

लोग एक सॉप के लिये 100 रुपये पा कर बहुत खुश हुए। सो 100 रुपये ले कर वह सॉप नौजवान को दे दिया गया। अब यह नौजवान 300 रुपये में एक कुत्ता एक बिल्ला और एक सॉप ले कर चल दिया।

हमारा यह नौजवान तो बड़ा बेवकूफ निकला। सारा पैसा खो कर अब यह क्या बिजनेस करेगा। सिवाय अपने पिता के पास लौटने के अब तो वह कुछ कर ही नहीं सकता था सो वह अपने घर चला गया।

जब उसके पिता ने यह सुना कि उसने किस तरह से अपना सारा पैसा बर्बाद कर दिया है तो वह बहुत नाराज हुआ और बोला — "अरे बेवकूफ यह तूने क्या किया। जा और जा कर अस्तबल में सो जा और जा कर वहॉ अपनी बेवकूफी पर पश्चाताप कर। तू अब मेरे घर में कभी नहीं घुसना।"

सो वह नौजवान अस्तबल में चला गया और वहीं रहने लगा। उसका बिस्तर उसी घास का होता था जो जानवरों के खाने के लिये

आती थी और उसके साथी थे कुत्ता बिल्ला और साँप जो उसने **300** रुपये में खरीदे थे।

ये तीनों जानवर उसके बहुत अच्छे दोस्त हो गये थे। वह दिन में जहाँ भी जाता वे उसके साथ हमेशा ही लगे रहते और रात को वह हमेशा उसके पास ही सोते थे।

बिल्ला उसके पैरों के पास सोता कुत्ता उसके सिर के पास सोता और साँप उसके ऊपर पड़ा रहता। उसका सिर एक तरफ को लटका रहता और उसकी पूँछ दूसरी तरफ।

एक दिन साँप अपने मालिक से बोला — "मैं इन्द्रशराजा[21] का बेटा हूँ। एक दिन जब मैं हवा लेने के लिये जमीन में से बाहर निकला तो कुछ लोगों ने मुझे पकड़ लिया और मुझे मारने ही वाले थे कि तुम सही समय पर आ पहुँचे और मुझे बचा लिया। मैं नहीं जानता कि तुम्हारे इस उपकार का बदला मैं कभी भी चुका सकूँगा।

काश तुम मेरे पिता को जानते। वह अपने बेटे के बचाने वाले से मिल कर कितने खुश होते।"

नौजवान बोला — "वह कहाँ रहते हैं। मैं उनसे जरूर मिलना चाहूँगा। अगर यह मुमकिन हो तो।"

साँप बोला — "यह तो बड़ी अच्छी बात है। वह सामने तुम पहाड़ देखते हो न। उस पहाड़ की तली में एक पवित्र नदी[22] है।

---

[21] Indrashraja

[22] Translated for the words "Holy River"

अगर तुम मेरे साथ चलो और उस नदी में डुबकी मारो तो हम दोनों मेरे पिता के राज्य में पहुँच जायेंगे। ओह वह तुमको देख कर बहुत खुश होंगे और वह तुमको इनाम भी देंगे।"

"पर वह ऐसा कैसे कर सकते हैं?"

"फिर भी कम से कम तुम उनके हाथ से कुछ पा कर खुश हो सकते हो। अगर वह तुमसे पूछें तो कि तुमको क्या चाहिये तो उनको कहना कि "मुझे आपके दाँये हाथ की अँगूठी चाहिये और वह मशहूर बर्तन और चमचा चाहिये जो आपके पास है।"

अगर ये दोनों चीज़ें तुम्हारे पास होंगी तो फिर तुम्हें किसी चीज़ की जरूरत नहीं रहेगी। क्योंकि अँगूठी तो ऐसी चीज़ है जिससे कि किसी आदमी को बस कहने की जरूरत है कि मुझे यह दे दो। यहाँ तक कि वह बड़ा सुन्दर बंगला और सुन्दर आकर्षक स्त्री भी दे सकती है।

जबकि बर्तन और चमचा तुम्हारे खाने पीने की सारी जरूरतों को पूरा करेंगे। उनसे तुम्हें बहुत बढ़िया और स्वादिष्ट खाना मिलेगा।"

सो वह नौजवान अपने तीनों साथियों को ले कर उस नदी की तरफ चल दिया और वहाँ पहुँच कर साँप की देखभाल में उस नदी मे कूदने के लिये तैयार हुआ तो बिल्ला और कुत्ता यह देखते हुए कि वह क्या करने जा रहा था एक साथ बोले — "मालिक फिर हम क्या करेंगे हम कहाँ जायेंगे।"

नौजवान बोला — "तुम लोग मेरा यहीं इन्तजार करो। मैं बहुत दूर नहीं जा रहा हूँ और मैं वहाँ बहुत देर तक रहूँगा भी नहीं।" कह कर वह उस नदी में कूद गया और तुरन्त ही गायब हो गया।

कुत्ते ने बिल्ले से कहा — "अब हम क्या करें?"

बिल्ला बोला — "जब हमारे मालिक ने कहा है कि हम यहीं रहें तो हमको यहीं रहना चाहिये। तुम खाने की चिन्ता बिल्कुल मत करो। मैं लोगों के घरों में जाता हूँ और अपने दोनों के लिये बहुत सारा खाना ले कर आता हूँ।"

कह कर वह बिल्ला चला गया। इस तरह दोनों तब तक आराम से रहे जब तक उनका मालिक वापस लौट कर आया।

वह नौजवान और साँप अपनी जगह ठीक से पहुँच गये तो उनके सही सलामत वापस आने की खबर राजा को भिजवायी गयी।

हिज़ हाइनैस ने अपने बेटे और अजनबी को अपने सामने पेश करने का हुक्म दिया पर साँप ने यह कहते हुए मना कर दिया कि वह तब तक अपने पिता के सामने नहीं जा सकता जब तक कि वह इस अजनबी से छुटकारा न पा जाये।

उसके छुटकारा पाने का मतलब था कि जब तक वह इस अजनबी के उपकार का बदला नहीं चुका लेता जिसने उसको एक भयानक मौत से बचाया है और जिसकी वजह से वह उसका गुलाम है।

यह सुन कर राजा खुद गया और अपने बेटे को गले लगाया और अजनबी को नमस्ते कर के अपने राज्य में उसका स्वागत किया।

वह नौजवान वहाँ कुछ दिन ठहरा जिनमें उसने राजा से अपनी कृतज्ञता के बदले में कि उसने उसके बेटे की जान बचायी उसकी दाँये हाथ की अँगूठी ली और बर्तन और चमचा लिया।

यह ले कर वह ऊपर आया तो अपने दोस्तों कुत्ता और बिल्ले से मिला जो उसका वहीं इन्तजार कर रहे थे। उन सबने एक दूसरे को जबसे वे बिछड़े थे तबसे अब तक की जब तक वे मिले अपनी अपनी कहानियाँ सुनायीं। वे आपस में मिल कर बहुत खुश हुए।

उसके बाद वे नदी किनारे चलते रहे जहाँ फिर उन्होंने जादुई अँगूठी और बर्तन और चमचे का जादू जाँचने का फैसला किया। सो नौजवान ने अँगूठी से सुनहरे बालों वाली एक सुन्दर लड़की और एक सुन्दर मकान माँगा।

तुरन्त ही उसके सामने ये दोनों प्रगट हो गये। फिर इसने बर्तन को जाँचना चाहा तो उसने कहा कि इन सबके लिये सबसे बढ़िया और स्वादिष्ट खाना लाओ तो वहाँ पर बहुत तरीके के स्वदिष्ट खाने प्रगट हो गये।

जाहिर है कि उनकी ज़िन्दगी बड़े आराम से गुजरने लगी। ऐसा कई साल तक चलता रहा कि एक दिन एक सुबह उस लड़की ने

अपने बाल बनाते समय अपने टूटे हुए बाल एक खोखले सरकंडे[23] में रख दिये और उस सरकंडे को अपनी खिड़की के नीचे बहती नदी में फेंक दिया।[24]

सरकंडे की वह डंडी मीलों दूर तक बहती चली गयी कि इत्तफाक से वह डंडी वहॉ के राजा के बेटे को मिल गयी। उत्सुकतावश उसने उस डंडी को खोल लिया तो उसने देखा कि उसमें तो सुनहरी बाल थे।

उन बालों को देखते ही वह महल की तरफ भागा और जा कर अपने कमरे में बन्द हो गया और वह तो वहॉ से अब बाहर ही नहीं निकले। वह तो उस लड़की के प्यार में पड़ गया था जिसके वे सुनहरी बाल थे।

न वह खाये न पिये न उसको नींद आये और न वह कहीं आये जाये जब तक कि उस लड़की को उसके पास न लाया जाये। यह देख कर उसके पिता राजा को बहुत चिन्ता हुई उसकी तो समझ में ही नहीं आया कि वह क्या करे।

उसको डर लगा कि इस तरह से उसका बेटा कहीं मर न जाये और वह बिना वारिस के ही रह जाये। आखिर उसने अपनी एक चाची से सलाह मॉगने का निश्चय किया।

---

[23] Translated for the “Reed”. See its picture above.

[24] Throwing a fallen hair putting it in something shows a custom in India’s Bengal state also. Read the tale “Bhooton Ki Kahani” in the book “Bengal kI Lok Kathayen”, by Sushma Gupta in Hindi language, published by Delhi : NBT. 2019.

उसकी यह चाची एक जादूगरनी[25] थी। उस बुढ़िया ने उसकी सहायता करने का वायदा किया। उसने राजा से कहा कि उसको चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। उसको पूरा भरोसा है कि वह उस सुन्दर लड़की को उसके बेटे की पत्नी बना कर ले आयेगी।

उसने एक मधुमक्खी का रूप रखा और ज़ज़ज़ करती उड़ने लगी। उसकी तेज़ सूँघने की ताकत उसको उस लड़की के पास ले आयी जिसको वह एक बुढ़िया दिखायी दी जिसने अपने सहारे के लिये एक छड़ी पकड़ रखी थी।

उसने उस लड़की को अपना परिचय उसकी चाची बता कर दिया और उससे कहा कि उसने उसको पहले कभी देखा नहीं था क्योंकि उसने वह देश उस लड़की के जन्म के तुरन्त बाद ही छोड़ दिया था।

यह सब कहने के साथ साथ उसने उस लड़की को अपने गले से लगाया और चूम लिया। वह सुन्दर लड़की तो उसके धोखे में आ गयी। उसने भी जादूगरनी को गले से लगाया और अपने घर में ले आयी। उसको वहीं ठहरने को कहा जब तक वह ठहरना चाहे।

उसने बुढ़िया की इतनी इज़्ज़त की और उसकी इतनी देखभाल की कि बुढ़िया ने सोचा कि अब तो उसका काम बहुत आसान हो गया।

---

[25] Translated for the word "Ogress". An ogre (feminine ogress) is a being usually depicted as a large, hideous, manlike monster that eats human beings.

जब उसको वहाँ रहते रहते तीन दिन हो गये तो एक दिन उसने लड़की से कहा कि बजाय इसके कि वह उस जादुई अंगूठी को अपने पति के पास छोड़े उसको उसे अपने पास रखना चाहिये क्योंकि उसका पति तो अक्सर शिकार पर ही रहता था या फिर किसी और काम से बाहर रहता था सो वह अँगूठी उससे खो सकती थी।

लड़की ने सोचा कि उसकी चाची उसको ठीक ही सलाह तो दे रही थी सो उसने अपने पति से उसकी वह जादू की अँगूठी माँगी। पति ने उसको वह अँगूठी दे दी। जादूगरनी ने उससे अँगूठी के बारे में पूछने से पहले एक दिन इन्तजार किया फिर उससे कहा कि वह वह अँगूठी देखना चाहती है।

लड़की को कोई शक नहीं हुआ और उसने वह अँगूठी अपनी चाची को देखने के लिये दे दी। जैसे ही चाची के हाथ में अँगूठी आयी वह मधुमक्खी बनी और उसको ले कर वहाँ से उड़ गयी और वहाँ आयी जहाँ राजकुमार अपने महल में बहुत बुरी हालत में पड़ा हुआ था।

उसने जा कर उससे कहा — "उठो बेटा उठो और खुश हो जाओ। अब और दुखी होने की जरूरत नहीं है। जिस लड़की को तुम ढूँढ रहे थे वह अब बस तुम्हारे बुलाने पर तुरन्त ही हाजिर हो

जायेगी। देखो यही वह तलिस्मा[26] है और इसी से तुम उसको यहाँ बुला सकते हो।"

राजकुमार तो यह सुन कर बिल्कुल पागल सा हो गया और उस लड़की को देखने के लिये इतना इच्छुक हो गया कि उसने तुरन्त ही अँगूठी से उस लड़की को वहाँ लाने के लिये कहा। तुरन्त ही वह लड़की अपने मकान सहित उसके महल के बागीचे में उतर आयी।

वह तुरन्त ही उसके मकान में गया और उससे अपने प्रेम के बारे में बताया। उसने उससे कहा कि वह उसकी पत्नी बन जाये।

लड़की ने देखा कि वह यहाँ से किसी तरह भी बच नहीं सकती है सो उसने इस शर्त पर उसको हाँ कर दी कि वह एक महीने बाद उससे शादी कर लेगी।

इस बीच सौदागर का बेटा शिकार से घर वापस लौटा तो उसने देखा कि न तो उसका घर है और न उसकी पत्नी है। यह देख कर वह बहुत दुखी हुआ। वहाँ तो बस खाली जगह पड़ी थी जैसी कि उसने उस जादू की अँगूठी इस्तेमाल करने से पहले देखी थी जो उसको इन्द्रशराजा ने दी थी।

वह वहीं जमीन पर बैठ गया और अपना अन्त करने की सोचने लगा। उसी समय उसके साथी कुत्ता और बिल्ला वहाँ आये। असल में जब उन्होंने घर को वहाँ से गायब होते देखा था तो वे डर गये थे सो वे वहाँ से कहीं और चले गये और जा कर छिप गये।

[26] Translated for the word "Charm"

मालिक के वापस आते ही वे भी वहाँ आ गये और उन्होंने अपने मालिक से कहा — "मालिक रुकिये। आपका इम्तिहान तो बहुत बड़ा है पर यह समस्या ऐसी नहीं है कि सुलझायी न जा सके। हमें आप एक महीना दीजिये हम आपको आपका घर और पत्नी दोनों ढूँढ कर लाने की कोशिश करेंगे।"

नौजवान बोला — "ठीक है जाओ। भगवान तुम्हारी सहायता करें। तुम मेरी पत्नी को वापस लाओ ताकि मैं ज़िन्दा रह सकूँ।"

यह सुन कर कुत्ता और बिल्ला दोनों तुरन्त ही वहाँ से भाग गये और तब तक नहीं रुके जब तक वे उस जगह नहीं पहुँच गये जहाँ उनके मालिक का घर और उनकी पत्नी थी।

बिल्ला बोला — "हमको शायद यहाँ कुछ मुश्किलों का सामना करना पड़े। देखो राजा ने हमारे मालिक का घर और पत्नी दोनों ही अपने लिये ले लिये हैं। तुम यहाँ ठहरो मैं घर के अन्दर जा कर मालकिन को देख कर आता हूँ।"

यह सुन कर कुत्ता तो वहीं बैठ गया और बिल्ला चढ़ कर कमरे की खिड़की तक पहुँच गया जहाँ वह सुन्दर लड़की दुखी बैठी थी। लड़की ने बिल्ले को पहचान गयी। उसने जबसे वह यहाँ आयी थी तबसे अब तक वहाँ क्या हुआ था उसको सब बता दिया।

फिर उसने बिल्ले से पूछा — "क्या यहाँ से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है?"

बिल्ला बोला — “बिल्कुल है। अगर आप मुझे यह बता दें कि वह अँगूठी कहाँ है।”

लड़की बोली — “वह तो उस जादूगरनी के पेट में है।”

बिल्ला बोला — “ठीक है। मैं उसके पेट से उसे निकाल लूँगा। एक बार वह हमें मिल जाये फिर सब कुछ हमारा है।”

यह कह कर बिल्ला खिड़की से नीचे उतर आया और एक चूहे के बिल के पास जा कर लेट गया जैसे कि वह मरा हुआ हो।

इत्तफाक से चूहों के समाज की एक बारात उधर से गुजर रही थी। उस बारात में पास पड़ोस के बहुत सारे चूहे शामिल थे। चूहों के राजा के सबसे बड़े बेटे की शादी होने जा रही थी। बिल्ला यह देख कर हुँकारा।

उसके दिमाग में तुरन्त ही यह विचार आया कि उसको दुलहे चूहा को पकड़ लेना चाहिये और उसकी सहायता लेनी चाहिये। सो जैसे ही चूहों की बारात उस बिल के सामने से गुजरी वह बारात के सम्मान में चीखता और कूदता हुआ उसके आगे पहुँच गया। उसने तुरन्त ही दुलहे को भी ढूँढ लिया और उस पर कूद गया।

यह देख कर दुलहा चूहा डर गया और ज़ोर से चिल्लाया — “मुझे जाने दो मुझे जाने दो।”

यह देख कर वहाँ मौजूद सारे चूहे चिल्लाये — “हाँ हाँ इसको जाने दो। आज तो इसकी शादी का दिन है।”

बिल्ला बोला — "नहीं नहीं। मैं इसको तब तक नहीं जाने दूँगा जब तक तुम मेरा कुछ काम नहीं करोगे। सुनो सामने वाले महल में जिसमें राजा और रानी रहते हैं उसमें एक जादूगरनी रहती है।

उस जादूगरनी ने एक अँगूठी निगल ली है जो मुझे बहुत जरूरी चाहिये। अगर तुम मुझे वह अँगूठी ला कर दे दोगे तो मैं तुम्हारे इन दुलहे राजा को छोड़ दूँगा।"

वे सब एक साथ बोले — "हाँ हाँ हम तुम्हें वह अँगूठी ला कर दे देंगे। और अगर हम तुम्हें वह अँगूठी ला कर न दें तो तुम हम सबको खा सकते हो।"

अब यह तो एक बहुत बहादुरी का जवाब था। खैर किसी तरह से उन्होंने वह अँगूठी ला कर उस बिल्ले को दे दी। आधी रात को जब जादूगरनी गहरी नींद सो रही थी एक चूहा उसके बिस्तर के करीब गया और उसके चेहरे पर चढ़ गया।

वह खर्राटे मार कर सो रही थी सो जैसे ही उसने अगली बार अपना मुँह खोला उसने अपनी पूँछ उसके गले में डाल दी। इससे उसको बहुत ज़ोर की छींक आ गयी और वह अँगूठी उसके मुँह में से निकल कर बाहर आ पड़ी और फर्श पर लुढ़क गयी।

चूहे ने तुरन्त ही उसको अपने मुँह में दबाया और वहाँ से अपने राजा के पास भाग लिया। चूहों का राजा भी उसको देख कर बहुत खुश हुआ। वह भी तुरन्त ही उसको ले कर बिल्ले के पास गया और वह अँगूठी उसको दे कर अपने बेटे को छुड़ा लाया।

बिल्ले को जैसे ही ॲगूठी मिली वह उसको ले कर कुत्ते के पास भागा आया और दोनों अपने मालिक के पास यह खुशखबरी ले कर दौड़ चले।

लगता था कि अब सब कुछ ठीक हो गया था क्योंकि अब तो बस उनको वह ॲगूठी ले जा कर अपने मालिक को ही देनी थी। और उसको उस ॲगूठी से बस यह बोलना था कि उसका सुन्दर घर और पत्नी फिर से उसके पास आ जायें। बस फिर सब कुछ पहले जैसा आनन्दमय हो जायेगा।

उन्होंने सोचा कि यह ॲगूठी पा कर उनका मालिक कितना खुश होगा। यह सोच कर वे वहाँ से जितनी जल्दी हो सकता था भाग लिये।

रास्ते में उनको एक नदी पार करनी पड़ी तो कुत्ते ने बिल्ले को अपनी पीठ पर बिठाया और नदी तैर गया। कुत्ते ने सोचा "ॲगूठी तो यह बिल्ला ले जा रहा है तो फिर मालिक की नजर में मेरी क्या कीमत रह जायेगी।"

सो उसने अच्छा मौका देख कर बिल्ले से ॲगूठी माँगी और धमकी दी कि अगर उसने उसको ॲगूठी नहीं दी तो वह उसे नदी में बीच धार में ही फेंक देगा।

यह धमकी सुन कर बिल्ला डर गया उसने तुरन्त ही ॲगूठी कुत्ते को दे दी पर अफसोस कि जैसे ही बिल्ले ने कुत्ते को ॲगूठी दी

कुत्ते से पकड़ी नहीं गयी और वह पानी में गिर पड़ी जिसे उसी समय एक मछली ने निगल लिया।

यह देख कर कुत्ता चिल्लाया — "ओह अब मैं क्या करूँ। अब मैं क्या करूँ। मेरी अँगूठी तो मछली ने निगल ली।"

बिल्ला बोला — "हमको जो करना है वह करना है। हमको उसे वापस पाना ही चाहिये। और अगर हम उसे वापस नहीं पा सकते तो हमें इस नदी में डूब कर मर जाना चाहिये।

मैं तुम्हें एक तरकीब बताता हूँ। तुम जाओ और कहीं से एक छोटा मेमना मार कर मेरे पास ले आओ।"

कुत्ता बोला — "ठीक है।" और यह कह कर वह दौड़ गया। वह जल्दी ही एक छोटा सा मेमना मार कर ले आया और बिल्ले को दे दिया।

बिल्ले ने उसका पेट फाड़ डाला और खुद तो उसमें बैठ गया और कुत्ते को उसने कहा कि वह भी कहीं पास में छिप कर चुपचाप बैठ जाये।

कुछ ही देर में नाधार[27] नाम की एक चिड़िया वहाँ आयी जिसको केवल देखते ही किसी भी मछली की हड्डियाँ टूट जाती हैं और उस मेमने की लाश पर मँडराने लगी। और फिर कुछ पल बाद ही उसने इस इरादे से नीचे की तरफ झपट्टा मारा कि वह उस मेमने को सारा का सारा उठा कर ले जायेगी।

[27] Nadhar – a kind of bird

उसी समय बिल्ला उसमें से निकल आया और उस चिड़िया पर कूद पड़ा। उसने चिड़िया को धमकी दी कि अगर उसने उनकी ॲगूठी उनको वापस नहीं दिलवायी तो वह उसको मार देगा।

यह धमकी सुन कर नाधार चिड़िया तुरन्त ही राजी हो गयी। वह तुरन्त ही मछलियों के राजा के पास उड़ गयी और उससे कहा कि वह तुरन्त इस बात की छानबीन करे कि वह ॲगूठी किस मछली के पास है और तुरन्त ही उसको वह ॲगूठी ला कर दे।

मछलियों के राजा ने वैसा ही किया। ॲगूठी मिल गयी और वह बिल्ले को दे दी गयी। बिल्ला कुत्ते से बोला — "अब चलो। हमें ॲगूठी मिल गयी।"

यह सुन कर कुत्ता फिर अकड़ गया और बोला — "नहीं मैं नहीं चलूँगा जब तक कि तुम मुझे ॲगूठी नहीं दोगे। जब तुम मुझे उसे दे दोगे तो मैं उसे भी ले जाऊँगा और तुम्हें भी। और अगर तुमने मुझे ॲगूठी नहीं दी तो मैं तुम्हें मार डालूँगा।"

कुत्ते की यह धमकी सुन कर बिल्ले ने तुरन्त उसको ॲगूठी दे दी। उस लापरवाह कुत्ते ने उसे फिर से जमीन पर गिरा दिया। इस बार वह एक काइट चिड़िया ने उठा ली। बिल्ला चिल्लाया — "देखो ॲगूठी ले कर वह काइट चिड़िया उधर जा रही है। देखो देखो।"

यह देख कर कुत्ता भी कुछ परेशान सा हो कर बोला — "उफ़ यह क्या हुआ। यह मैंने क्या कर दिया।"

बिल्ला चिल्लाया — "अरे ओ बेवकूफ कुत्ते मुझे मालूम था कि ऐसा ही कुछ होगा। पर अब तुम अपना भौंकना छोड़ो नहीं तो तुम उस चिड़िया को डरा दोगे और फिर वह कहीं ऐसी जगह जा कर छिप जायेगी जहाँ फिर हमको उसे ढूँढना भी मुश्किल हो जायेगा।"

बिल्ला तब तक इन्तजार करता रहा जब तक काफी अँधेरा नहीं हो गया। अँधेरा होने पर बिल्ला उस पेड़ पर चढ़ा जिस पेड़ पर वह चिड़िया बैठी थी। उसने चिड़िया को मारा उससे अँगूठी हासिल की और पेड़ से नीचे उतर आया।

नीचे उतर कर बोला — "चलो अब चलें। हमको यहाँ से जल्दी जल्दी चलना चाहिये। हमको पहले ही बहुत देर हो चुकी है। हमारे मालिक हमारा इन्तजार कर रहे होंगे। बहुत देर हो गयी तो वह कहीं दुख से मर ही न जायें। चलो।"

इस बार कुत्ता अपने अपने आपसे बहुत शर्मिन्दा था। उसने बिल्ले से अपनी गलतियों की माफी माँगी। तीसरी बार वह उससे अँगूठी माँगने बहुत शर्मा रहा था सो वह बिल्ले को ले कर तुरन्त अपने मालिक के पास चल दिया।

उनका मालिक दुखी बैठा हुआ था। बिल्ले ने जब उसको अँगूठी ले जा कर दी तो वह खुशी से नाच उठा। उसके मिलते ही उसने उससे अपना घर और अपनी पत्नी लाने के लिये कहा। उसकी सुन्दर पत्नी और घर तुरन्त ही वहाँ हाजिर हो गये। वे लोग फिर से उसी तरह से सुख से रहने लगे जैसे पहले रहते थे।

6 कौआ लड़की[28]

एक बार की बात है कि दो कुम्हार पतियों की दो स्त्रियाँ कोई खास मिट्टी लेने के लिये जंगल में गयीं जो उनके कुम्हार पतियों को कुछ खास बर्तन बनाने के लिये चाहिये थी। उन्होंने अपने अपने छोटे बच्चों को अपने पीठ पर बाँध रखा था।

जब वे उस जगह पहुँची जहाँ वह मिट्टी थी तो उन्होंने अपने अपने छोटे बच्चों को जो एक लड़का था और एक लड़की थी वहीं नीचे बिठा दिया ताकि वे एक दूसरे के साथ खेल सकें और वे अपनी अपनी टोकरियाँ उस मिट्टी से भरने लगीं।

एक कौए और एक काइट चिड़िया ने यह देख लिया कि वहाँ क्या हो रहा था सो उन दोनों ने नीचे उड़ान भरी और वे दोनों बच्चों को ले उड़ीं। काइट चिड़िया लड़के को ले गयी थी सो उसने तो उसे मार दिया और कौआ लड़की को ले गया। उसने उसे जंगल के एक दूर के हिस्से में ले जा कर एक पेड़ के खोखले तने में रख दिया।

वहाँ जा कर लड़की रोई नहीं बल्कि उसको वहाँ कुछ मजा ही आया। सो वह वहाँ हँसने लगी और उस चिड़िया के साथ खेलने लगी। चिड़िया को भी उससे प्यार हो गया। वह उस बच्ची को खाने के लिये गिरियाँ ला कर देती

[28] The Crow Girl (Tale No 6)

फल ला कर देती रोटी के बचे हुए टुकड़े ला कर देती। कभी कभी वह उसे मॉस भी ला कर देती जब उसे वह मिल जाता।

धीरे धीरे लड़की बड़ी होने लगी और सुन्दर भी।

एक बार इत्तफाक से एक बढ़ई जंगल के उस हिस्से में लकड़ी काटने आया। लड़की उससे बोली — "सलाम। मेरी इच्छा है कि तुम मेरे लिये एक चरखा बना दो। मैं यहॉ अकेली हूॅ मैं चाहती हूॅ कि मैं कोई काम करूॅ।"

बढ़ई ने पूछा — "पर तुम यहॉ हो ही क्यों। तुम्हारा घर कहॉ है। क्या तुम्हारे पास इन चीथड़ों के अलावा और कोई कपड़ा नहीं है जो तुमने ये पहन रखे हैं।"

लड़की ने जवाब दिया — "तुम मुझसे कुछ और मत पूछो बस मुझे एक चरखा बना दो। मैं केवल उसी से खुश हो जाऊॅगी।"

सो बढ़ई ने उसके लिये एक चरखा बना दिया और कौआ कहीं से उसके लिये एक तकली और कुछ रुई चुरा लाया। बस अब उस लड़की के पास सब कुछ था।

कुछ दिनों बाद ही वहॉ का राजा शिकार खेलने के लिये उस जंगल में आया तो वह उस पेड़ के पास से गुजरा जिसके पास यह लड़की रहती थी। तो वहॉ उसने किसी के सूत कातने की आवाज सुनी।

उसने अपने नौकरों से कहा — "इस अकेली जगह में कौन रहता है। मुझे किसी के सूत कातने की आवाज सुनायी पड़ रही है। जाओ और देख कर आओ कि यह कौन हो सकता है।"

काफी ढूँढने को बाद उसके नौकरों को एक लड़की एक पेड़ के खोखले तने में बैठी मिली जहाँ बैठ कर वह चरखा चला रही थी। वे उसको पकड़ कर राजा के सामने ले आये।

राजा ने उसके बारे में सब कुछ मालूम किया और उसकी कहानी और सुन्दरता से इतना प्रभावित हुआ कि उसने उससे अपने महल चलने के लिये और उससे अपनी पत्नी बन कर रहने के लिये कहा।

राजा की छह पत्नियाँ पहले से ही थीं अब यह कौआ लड़की उसकी सातवीं रानी हो गयी। उसकी सब रानियों के अलग अलग महल थे और अलग अलग दासियाँ थीं।

एक दिन राजा ने सोचा कि सब रानियों के हुनर का इम्तिहान लिया जाये सो उसने उन सबको उनका अपना अपना कमरा सबसे अच्छा सजाने का हुक्म दिया।

उसकी बड़ी छह पत्नियाँ तो साधारण तरीके से अपना कमरा सजाने में लग गयीं।उन्होंने कई तरह की तस्वीरें और सजावट का सामान खरीदा। गुलाब के इत्र से अपने कमरे की दीवारें पोंछी।

पर उसकी सातवीं पत्नी ने इस बारे में अपने प्यारे कौए की राय पूछी। चिड़िया ने कहा — "तुम बिल्कुल परेशान न हो।" कह कर

वह वहाँ से तुरन्त ही उड़ गया और अपनी चोंच में एक जड़ी बूटी दबा कर लौटा।

वह उसने उसे ला कर दी और कहा — "लो यह जड़ी बूटी लो और इसको पीस कर अपने कमरे की दीवारों पर मल दो तो वे दीवारें सोने की तरह से चमक जायेंगीं।"

लड़की ने ऐसा ही किया तो उसका कमरा तो सोने की तरह से दमक उठा। उस पर तो किसी की नजर ही नहीं ठहरती थी।

जब राजा की दूसरी पत्नियों ने यह सुना तो वे तो बहुत जल उठीं। हालाँकि उन्होंने अपने अपने कमरे गुलाब के इत्र से धोये थे उनमें सुन्दर मँहगे कालीन लगाये थे बहुत शानदार फूलों के गुलदानों से सजाये थे पर फिर भी उनके कमरे उस सातवीं रानी के कमरे से सुन्दरता में उसका सौवाँ हिस्सा भी नहीं लग रहे थे।

उन्होंने उससे पूछा — "तुमने अपने कमरे को इतना सुन्दर बनाने के लिये क्या किया?"

पर कौआ लड़की ने उन्हें कुछ नहीं बताया।

जब राजा ने अपनी छहों बड़ी रानियों के कमरे देख लिये तो वह उनसे बहुत खुश हुआ। फिर वह कौआ लड़की के कमरे में आया तो उसको देख कर तो वह खुशी और आश्चर्य से भर गया। उसने उसको अपनी पटरानी[29] बना लिया और बाकी सबको भूल गया।

---

[29] Pataranee means "Chief Queen"

राजा की इस नजरअन्दाजी ने दूसरी रानियों के दिल में उनकी सातवीं रानी के प्रति जलन और बढ़ा दी। हालाँकि वे पहले से ही बहुत बुरी थीं पर इस घटना के बाद तो वे उस सातवीं रानी से बहुत जलने लगीं और उसको मारने का जाल रचने लगीं।

अपने इस काम को पूरा करने के लिये उनको जल्दी ही मौका मिल गया।

एक दिन वे सब नदी में नहाने जा रही थीं तो उन लोगों ने यह तय किया कि वे उस सातवीं रानी को पानी में धक्का दे देंगीं और राजा को बोल देंगीं कि वह अचानक पानी में डूब गयी। अपने इस प्लान के अनुसार जब वे गहरे पानी के पास पहुँचीं तो उन्होंने उसको पानी में एक ज़ोर का धक्का दे दिया। रानी पानी में डूब गयी।

जब राजा ने यह सुना तो राजा तो दुख से पागल सा हो गया। काफी समय तक तो वह अपना राज काज भी न सँभाल सका। उसने अपने आपको एक कमरे में बन्द कर लिया और किसी से मिलता जुलता भी नहीं था।

पर किस्मत ने रानी की मौत अभी नहीं लिखी थी। वह सातवीं रानी मरी नहीं थी जैसा कि दूसरे लोगों ने सोच लिया था। जहाँ उसको डुबोया गया था वहाँ नीचे एक छिपा हुआ टापू था जिस पर एक बहुत बड़ा पेड़ उगा हुआ था।

वह उस टापू तक तैर गयी और फिर उस पेड़ के ऊपर चढ़ गयी। वहाँ उसका दोस्त कौआ बराबर उसको खाना खिलाता रहा।

कुछ हफ्ते बाद एक दिन राजा सैर सपाटे के लिये अपनी नाव में उस नदी में निकला तो वह उस पेड़ के पास से गुजरा। कौआ लड़की ने उसका देखा तो वह वहीं से चिल्लायी — "राजा ने अन्यायपूर्वक मुझे बाँध लिया है। आओ मेरे प्यारे राजा इधर देखो।"

राजा ने जहाँ से आवाज आ रही थी उधर देखा तो अपनी रानी को देख कर तो वह बहुत खुश हुआ। उसने तुरन्त ही उसको पेड़ पर से उतार कर अपनी नाव में बिठा लिया और अपने महल ले गया। वहाँ जा कर रानी ने राजा को वह सब बताया जो कुछ उसके साथ हुआ था।

जब राजा ने मामले की सचाई सुनी तो उसने तुरन्त ही अपनी छहों रानियों को मारने की सजा सुना दी।

7 एक लाख रुपये की सलाह[30]

एक बार की बात है कि काश्मीर में एक ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। उसके एक बेटा था जिसकी शादी हो गयी थी। वह ब्राह्मण क्योंकि अन्धा था इसलिये अपनी रोटी पानी के लिये अपने बेटे पर ही निर्भर करता था।

रोज सुबह वह नौजवान भीख मॉगने के लिये घर से बाहर निकल जाता और जो कुछ भी उसको भीख में मिलता शाम को घर में चारों बॉट कर खा लेते।

कुछ दिन तक तो यह चलता रहा पर फिर वह नौजवान अपनी इस अपमान भरी ज़िन्दगी से तंग आ गया। उसने किसी दूसरे देश में जा कर अपनी किस्मत आजमाने की सोची। उसने अपनी पत्नी को यह बात बतायी और कहा कि वह किसी तरह से कुछ महीने उसकी गैरहाजिरी में घर का काम चला ले भगवान ने चाहा तो फिर सब कुछ ठीक हो जायेगा।

उसने उसको यह भी समझाया कि उसके पीछे उसको मेहनत से काम करना चाहिये ताकि कहीं ऐसा न हो कि उसके माता पिता नाराज हो जायें और उसको शाप दे दें।

[30] One Lakh Rupees for a Bit of Advice (Tale No 7)

ऐसा सोच कर एक दिन गठरी में उसने अपने लिये कुछ खाना बॉधा और घर से चल दिया। वह कई दिनों तक चलता रहा जब तक कि वह बराबर वाले देश के एक बड़े शहर में नहीं पहुॅच गया। वहॉ जा कर उसने एक दूकान पर जा कर उससे भीख मॉगी। दूकानदार ने उससे पूछा — "तुम यहॉ कब आये क्यों आये और तुम्हारी क्या जाति है?"

ब्राह्मण ने जवाब दिया कि वह ब्राह्मण है और अपने माता पिता और पत्नी के लिये खाना ढूॅढने के लिये इधर उधर घूम रहा है। दूकानदार को उसकी कहानी सुन कर दया आ गयी सो उसने उसको सलाह दी कि वह उस देश के दयालु राजा से जा कर मिले। वह उसकी कुछ सहायता जरूर कर देगा। यही नहीं वह उसके साथ राजा के दरबार तक जाने के लिये भी तैयार हो गया।

उसी समय इत्तफाक से ऐसा हुआ कि राजा को एक ब्राह्मण की जरूरत थी जो उसके सोने के मन्दिर की देखभाल कर सके। यह सोने का मन्दिर उसने तभी हाल में ही बनवाया था और जब उसने यह सुना कि वह ब्राह्मण भला और ईमानदार था तब तो वह उसको देख कर बहुत ही खुश हुआ।

उसने तुरन्त ही उस ब्राह्मण को अपने उस मन्दिर का मालिक बना दिया और उसके लिये 50 खरवार चावल और 100 रुपये साल के निश्चित कर दिये।

ब्राह्मण के घर छोड़ने के दो महीने के बाद भी जब ब्राह्मण की पत्नी ने उसके बारे में कुछ नहीं सुना तो वह उसकी खोज में निकल पड़ी। खुशकिस्मती से वह भी वहीं पहुँच गयी जहाँ वह ब्राह्मण था। वहाँ जा कर उसने सुना कि रोज सुबह राजा के सोने के मन्दिर में एक अशर्फी उस देश के रहने वाले भिखारी को दी जाती थी जो भी उसको माँगने वहाँ जाता था।

सो अगले दिन वह सुबह सुबह उसको लेने के लिये सोने के मन्दिर गयी तो वहाँ तो उसको उसका पति मिल गया। उसने अपनी पत्नी से पूछा — "तुम यहाँ क्यों आयी हो? तुमने मेरे माता पिता को वहाँ अकेला क्यों छोड़ा? क्या तुमको इस बात की बिल्कुल भी परवाह नहीं है कि वह मुझे शाप दे देंगे और मैं मर जाऊँगा? तुम तुरन्त ही वापस घर चली जाओ और वहीं मेरा इन्तजार करो।"

पत्नी बोली — "नहीं नहीं मैं खुद को और तुम्हारे माता पिता दोनों को भूख से मरने के लिये देखने के लिये वहाँ वापस नहीं जा सकती। घर में चावल का एक दाना भी नहीं है।"

ब्राह्मण बोला — हे भगवान, ठीक है तुम यह लो।" कह कर उसने एक कागज पर कुछ लाइनें लिखीं और वह कागज उसको थमा कर बोला — "इसे ले जा कर राजा को दे देना। हो सकता है कि वह तुमको इसके बदले में एक लाख रुपये दे दे।"

ऐसा कह कर उसने अपनी पत्नी को वहाँ से भेज दिया।

उस कागज के टुकड़े पर चार सलाह लिखी हुई थीं —

1. अगर कोई आदमी यात्रा में हो और रात को किसी अजनबी जगह पहुँच जाये तो उसको वहाँ ठहरने के मामले में सावधान रहना चाहिये कहीं ऐसा न हो कि वे उसे मार दें।

2. अगर किसी को किसी चीज़ की जरूरत हो तो पहले उसे अपने दोस्त को जाँचना चाहिये पर अगर उसको किसी चीज़ की जरूरत न हो तो उसको अपने दोस्तों को अपने आपको जाँचने नहीं देना चाहिये।

3. अगर किसी आदमी ने अपनी बहिन की शादी कर दी है और अगर वह उसको मिलने के लिये बड़ी शान शौकत से जाता है तो उसका वह इस तरह से आवभगत करेगी कि जैसे उसको उससे कुछ लेना हो। पर अगर वह गरीब हालत में जाता है तो वह उस पर नाराज होगी और उसको पहचानेगी भी नहीं।

4. अगर किसी आदमी को कोई काम करना है तो उसको वह काम अपने आप ही करना चाहिये, अपनी पूरी ताकत से करना चाहिये और बिना किसी डर के करना चाहिये।

उस कागज को ले कर वह ब्राह्मणी अपने घर चली गयी। वहाँ जा कर उसने अपने सास ससुर को अपने पति से मिलने की बात बतायी और बताया कि उसके पति ने उसको कितना कीमती कागज दिया है।

पर राजा के सामने वह खुद नहीं जाना चाहती थी सो उसने अपने एक जानने वाले को भेज दिया। राजा ने वह कागज पढ़ा

और उस कागज के लाने वाले को कोड़े से मारने का हुक्म दिया और उसे वहाँ से भगा दिया।

अगली सुबह ब्राह्मणी ने वह कागज लिया और दरबार की तरफ चल दी। जब वह दरबार की तरफ जा रही थी तो रास्ते में वह उसको पढ़ती जा रही थी।

रास्ते में उसको राजा का बेटा मिल गया तो उसने उससे पूछा कि वह क्या पढ़ती जा रही है। उसने कहा कि वह एक ऐसा कागज पढ़ती जा रही थी जिसमें कुछ सलाह लिखी हुई थीं जिसके लिये उसको एक लाख रुपया चाहिये था।

राजकुमार ने उससे वह कागज उसको दिखाने के लिये कहा। ब्राथ्मणी ने उसको वह कागज दिखा दिया तो उसको पढ़ कर उसने उसको पैसों के लिये परवाना लिखा और आगे बढ़ गया।

बेचारी गरीब ब्राह्मणी ने उसको उसके लिये बहुत धन्यवाद दिया। उस दिन उसने अपने घर के लिये इतना सामान खरीदा जो उनकी ज़िन्दगी भर के लिये काफी था।

शाम को राजकुमार ने पिता से एक स्त्री से अपनी मुलाकात के बारे में और उससे एक कागज खरीदने के बारे में बताया। उसने सोचा कि उसके पिता उसके इस काम से बहुत खुश होंगे पर ऐसा नहीं हुआ। राजा तो यह सुन कर उससे बहुत गुस्सा हो गया और उसको अपने देश से बाहर निकाल दिया।

उफ़, सारा शाही राज घराना कितना दुखी हुआ जब उन सबने राजा का यह बेरहम हुक्म सुना कि उसने राजकुमार को देश निकाला दे दिया। अब क्योंकि राजकुमार तो सबका प्यारा था साथ में सबको उससे बड़ी बड़ी उम्मीदें भी थीं। और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि वह उस राजगद्दी का वारिस था।

फिर भी राजा का हुक्म तो हुक्म था सो तुरन्त ही बजा लाया गया। राजकुमार ने अपनी माँ को सम्बन्धियों को दोस्तों को सबको विदा कहा और अपने घोड़े पर सवार हो कर घर से निकल पड़ा – कहाँ किधर यह तो उसको भी नहीं पता था।

रात होते होते वह एक जगह आ पहुँचा जहाँ उसको एक आदमी मिला। उसने उसको रात को अपने घर में ठहरने के लिये कहा तो राजकुमार ने उसका बुलावा स्वीकार कर लिया। वह वहाँ गया तो उसका एक राजकुमार की तरह से स्वागत किया गया।

उस आदमी ने उसके सोने के लिये एक चटाई बिछा दी उसको बहुत बढ़िया खाना खिलाया और रात को उसकी बेटी ने उसकी सेवा की।

उसने सोचा कि "मुझे उस भले आदमी की चारों सलाहों में से पहली सलाह पर ध्यान देना चहिये क्योंकि पता नहीं यह आदमी रात को मेरे साथ क्या करे। मुझे आज की रात सोना नहीं चाहिये।"

मन में ऐसा सोच कर वह लेट तो गया मगर सोया नहीं। बीच रात में उस आदमी की बेटी उठी और अपने हाथ में तलवार ले कर राजकुमार को मारने के इरादे से दौड़ी।

राजकुमार तो सोया नहीं था सो वह उठ कर बैठा हो गया और तलवार का वार बचा गया। फिर उसने तलवार पकड़ ली और बोला — "मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है या फिर मैं तुम्हारा क्या बिगाड़ना चाहता हूँ जो तुम मुझे मारने चली हो?

अपनी तलवार सँभाल कर रख लो ताकि तुम्हें उससे बाद में कोई परेशानी न हो जैसे कि उस राजा को हुई थी जिसने गलती से अपने तोते को मार दिया था।"

लड़की बोली — "कौन से राजा ने?"

राजकुमार बोला — "तो लो सुनो यह कहानी। एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके पास एक बहुत सुन्दर तोता था। वह उसको बहुत प्यारा था। यह तोता राजा के हरम[31] में रहता था और राजा अपनी रानियों से बात करने से भी पहले उससे बात करता था।

एक बार उस तोते ने राजा से एक महीने की छुट्टी माँगी क्योंकि वह अपने बेटे की शादी करने जाना चाहता था। राजा ने उसे छुट्टी दे दी और वह तोता अपने घर चला गया। घर जा कर उसने बड़ी

[31] Haram means where queens live.

धूमधाम से अपने बेटे की शादी की और शादी के बाद वापस लौटने लगा।

लौटते समय वह दो पेड़ों की टहनियाँ तोड़ता लाया जिसमें से एक पेड़ के फल खाने से कोई भी जवान आदमी बूढ़ा हो जाता था और दूसरे पेड़ के फल खाने से बूढ़ा आदमी जवान हो जाता था। वे दोनों टहनियाँ बागीचे में बो दी गयीं और बढ़ने लगी।

समय आने पर दोनों पेड़ों पर फल लगे। पर जैसे ही वे पकने को थे कि उस देश में एक तूफान आया जिससे वे पेड़ नीचे गिर गये। एक बहुत बड़ा साँप भी तूफान के पानी के साथ साथ वहाँ आ गया उसने अपना जहर उन पेड़ों की शाखों पर बिखेर दिया जिसका किसी को पता नहीं चला।

तूफान के बाद जब पानी उतर गया तो उन पेड़ों को फिर से लगा दिया गया। वे पेड़ फिर से लहलहा उठे और उनमें फिर से फल आ गये।

समय आने पर उन पेड़ों के फल राजा के पास ले जाये गये। राजा ने उनमें से एक पेड़ के कुछ फलों को जाँचने के लिये एक कुत्ते की तरफ फेंके। कुत्ता उनको खाते ही मर गया।

यह देख कर राजा बहुत गुस्सा हुआ और यह सोचते हुए कि तोता उसके साथ मजाक कर रहा था उसने उसको मारने का हुक्म दे दिया। तोते को तुरन्त ही मार दिया गया। अगले साल उन पेड़ों में

फिर से फल आये। तब तक उस पेड़ की शाखाओं का सारा जहर निकल चुका था।

एक दिन एक बूढ़ा उधर से गुजर रहा था। उसे भूख लगी थी सो उसने उस पेड़ से एक फल तोड़ कर खा लिया। उसको खाते ही वह तो जवान हो गया।

इस अजीब घटना की खबर उड़ते उड़ते राजा तक पहुँची तो उसने अपने एक नौकर को उस पेड़ के फल लाने का हुक्म दिया। उसमें से उसने कुछ फल अपने बूढ़े वजीर को दिये। वजीर ने उन्हें जैसे ही खाया तो वह भी उनको खा कर वैसा ही जवान और ताकतवर हो गया जैसा लोगों ने उसको **50** साल पहले देखा था।

राजा ने जब यह देखा तो वह अपने तोते के लिये बहुत दुखी हुआ और बहुत पछताया कि उसने उसको कितनी बेदर्दी से मरवा दिया था। वह तो उसके लिये कितने अच्छे फल की शाख ले कर आया था।"

कहानी सुना कर राजकुमार बोला — "मुझे यकीन है कि तुम मेरे साथ ऐसा नहीं करोगी।"

लड़की बोली — "नहीं मैं तुम्हारे साथ ऐसा नहीं करूँगी।"

जब तक राजकुमार ने अपनी कहानी खत्म की तब तक सुबह हो चुकी थी और घर के बाकी लोग जाग गये थे। इस तरह उस दिन राजकुमार की जान बच गयी।

इसके तुरन्त बाद ही सुबह को राजकुमार वहॉ से जाने वाला था पर मकान मालिक ने उसको रोक लिया और उसको एक दिन और रुक जाने के लिये कहा कि वह अगले दिन चला जाये। सो उस दिन फिर वह वहीं रुक गया।

पिछले दिन की तरह से उसका उस दिन भी खूब शान शौकत से खातिर की गयी। रात को उसे फिर से उसी कमरे में सोने के लिये भेज दिया गया। उस रात भी मकान मालिक की बेटी उसकी सेवा के लिये वहॉ आयी। उस रात भी राजकुमार नहीं सोया क्योंकि उसको डर था कि मकान मालिक की बेटी उसके साथ पता नहीं क्या करे।

आधी रात को फिर वह लड़की उठी और हाथ में तलवार लिये राजकुमार की तरफ बढ़ी। राजकुमार तो जागा हुआ था। वह तुरन्त उठ बैठा और बोला — "मुझे मत मारो। मुझको मारने से तुमको क्या मिलेगा। अगर तुमने मुझे मार दिया तो तुम उसी तरह से पछताओगी जैसे कि एक आदमी अपने कुत्ते को मार कर पछताया था।"

उसने पूछा — "कैसा आदमी और कैसा कुत्ता?"

राजकुमार बोला — "पहले तुम मुझे अपनी तलवार दो तब मैं तुम्हें उसके बारे में बताता हूॅ।"

सो उस लड़की ने अपनी तलवार राजकुमार को दे दी और राजकुमार ने अपनी दूसरी कहानी शुरू की —

“एक बार की बात है कि एक शहर में एक बहुत ही अमीर व्यापारी रहता था। उसके पास एक उसका एक पालतू कुत्ता था। अचानक यह अमीर व्यापारी बहुत ही गरीब हो गया और उसे अपने कुत्ते को छोड़ना पड़ गया। उसने अपने एक साथी व्यापारी से अपने कुत्ते के ऊपर पॉच हजार रुपये का कर्जा लिया और उससे एक नया काम शुरू किया।

कुछ समय बाद उसके साथी व्यापारी की दूकान में चोरी हो गयी और चोर उसका सारा सामान चुरा कर ले गये। मुश्किल से दस बीस रुपये का सामान ही उसकी दूकान में बचा था।

वफादार कुत्ते को पता चल रहा था कि वहॉ सब क्या हो रहा था। वह चोरों के पीछे दौड़ गया। उसने वह जगह देख ली जहॉ उन चोरों ने वह चोरी का सामान छिपाया था और घर वापस आ गया। सुबह को जब व्यापारी सो कर उठा तो अपनी दूकान खाली देख कर रो पड़ा। साथ में उसके घर वाले भी रोने लगे। व्यापारी तो बिल्कुल पागल सा हो गया।

उधर कुत्ता बार बार मालिक की कमीज और पाजामा खींचता हुआ घर के दरवाजे की तरफ भागता रहा जैसे वह उसको घर के बाहर ले जाना चाहता हो। आखिर उसके एक दोस्त ने उसको सलाह दी कि लगता है कि ऐसा लगता है कि कुत्ता चुरायी हुई चीज़ों के बारे में कुछ जानता है सो उसको उसके पीछे जाना

चाहिये। व्यापारी और उसके कुछ दोस्त उस कुत्ते के पीछे पीछे चल दिया।

कुत्ता उनको वहाँ ले गया जहाँ चोरों ने उसका माल छिपा रखा था। उस जगह आ कर कुत्ते ने जमीन खुरचनी शुरू की और भौंकना शुरू किया और यह बताने की कोशिश की कि सामान यहाँ नीचे छिपा हुआ है।

व्यापारी और उसके दोस्तों ने वहाँ जमीन खोदी और अपना सारा सामान पा लिया। उसमें कोई भी चीज़ खोयी हुई नहीं थी। सब सामान ऐसे का ऐसा ही मिल गया।

व्यापारी अपना सब सामान पा कर बहुत खुश हुआ। घर आ कर उसने कुत्ते के कान में कुछ लिख कर एक कागज लपेटा और उसको उसके पुराने मालिक के पास भेजा।

उसने उस कागज में लिखा था कि उसका कुत्ता बहुत वफादार है और इस वफादारी के फलस्वरूप वह उसका पहला पाँच हजार रुपये का कर्जा माफ करता है और इनाम के तौर पाँच हजार रुपये उसके लिये और भेज रहा है।

जब व्यापारी ने अपने कुत्ते को वापस आते देखा तो उसने सोचा "लगता है मेरा दोस्त अपना पैसा माँग रहा है। मैं कहाँ से दूँ उसको पैसा। अभी तो मैं अपने नुकसान की भरपाई ही नहीं कर पाया हूँ। मैं ऐसा करता हूँ कि जैसे ही यह कुत्ता मेरे घर आता है मैं इसको मार देता हूँ और कह दूँगा कि इसको किसी और ने मार

दिया। इससे मेरा कर्जा ही खत्म हो जायेगा। न होगा कुत्ता न रहेगा कर्जा।"

ऐसा सोच कर वह घर के बाहर की तरफ दौड़ा और कुत्ते को मार दिया तभी उसके दॉये कान से एक कागज नीचे गिर पड़ा। व्यापारी ने वह कागज उठाया और पढ़ा तो वह तो बहुत दुखी हो गया।"

राजकुमार बोला — "इसलिये सॅभल जाओ कहीं ऐसा न हो कि बाद में तुम्हें मेरी ज़िन्दगी की कीमत अपनी ज़िन्दगी दे कर पछताना पड़े।"

जब राजकुमार ने अपनी कहानी खत्म की तब सुबह होने वाली थी। लड़की बोली — "उफ़ अब मैं क्या करूँ। एक घंटे बाद दिन निकल आयेगा। मेरे पिता ने मुझसे कहा था कि मैं तुमको यकीनन मार दूँ और अगर मैंने तुम्हें नहीं मारा तो वह मुझे मार देंगे। अब मैं क्या करूँ। मेरी ज़िन्दगी अब तुम्हारे हाथ में है।"

राजकुमार बोला — "तुम मुझे अपने इस शापित घर से बाहर निकलने का रास्ता बताओ और मेरे साथ चलो। बाहर हमको कोई न कोई घोड़ा जरूर मिल जायेगा हम उस पर बैठ कर जल्दी ही यहॉ से भाग जायेंगे। आओ चलो मेरे साथ।"

एक घंटे के अन्दर अन्दर जब तक घर के लोग सो कर उठे तब तक तो राजकुमार और उस डाकू की लड़की दोनों घोड़े पर बैठ कर बहुत दूर निकल चुके थे।

वे चलते रहे चलते रहे जब तक कि वे राजकुमार के एक दोस्त के घर आ पहुँचे। उसने उन दोनों का अपने घर में स्वागत किया और उनको आराम से अपने भाई की तरह से छह महीने तक ठहराया।

जब राजकुमार ने उससे वहाँ से जाने की इजाज़त माँगी तो उसने उसको जवाहरात पैसे घोड़े और सफर के लिये जरूरी सामान दे कर विदा किया।

यहाँ से चल कर राजकुमार अपने बहनोई के देश पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसने एक जोगी का वेश बनाया और उसके महल के सामने ऐसे जा कर बैठ गया जैसे वह पूजा में लीन हो। उस जोगी और उसकी पूजा की खबर राजा तक पहुँची।

उसमें उसकी रुचि हो आयी क्योंकि उसकी पत्नी की तबियत बहुत खराब थी। उसने उसके इलाज के लिये बहुत सारे हकीम वैद्य बुलाये पर कोई उसको ठीक न कर सका।

उसने सोचा कि शायद यह पवित्र आदमी[32] उसको ठीक कर दे सो उसने अपने कुछ आदमी उसको महल में लाने के लिये भेजे पर राजकुमार ने यह कह कर महल के अन्दर जाने से मना कर दिया कि वह एक जोगी है और उसकी जगह बाहर ही है। अगर राजा उससे मिलना चाहता है तो वह खुद उससे बाहर आ कर मिले और साथ में

---

[32] Translated for the words "Holy Man"

अपनी पत्नी को भी ले आये। इस पर राजा अपनी पत्नी को साथ ले कर आया और उसे राजकुमार से मिलवाया।

राजकुमार ने उसको अपने सामने लेट कर प्रणाम करने के लिये कहा। जब उसको इस हालत में लेटे हुए तीन घंटे हो गये तो उसने उससे उठने के लिये और जाने के लिये कहा क्योंकि वह अब ठीक हो चुकी थी। रानी चली गयी।

शाम को महल में बड़ा हल्ला गुल्ला मचा क्योंकि रानी की मोती की माला खो गयी थी और किसी को उसका पता नहीं था। काफी देर के बाद कुछ लोग वहाँ गये जहाँ रानी ने जोगी के सामने लेट कर उसको प्रणाम किया। उनको वह माला वहीं पड़ी मिल गयी।

जब राजा ने जब यह सुना तो वह बहुत नाराज हुआ और उसने जोगी को फाँसी की सजा का हुक्म सुना दिया। पर इस शाही हुकुम को मानने से पहले ही राजकुमार ने उसको फाँसी देने वाले आदमियों को पैसे दिये और वह देश छोड़ कर भाग गया।

देश से बाहर निकलने के बाद उसने अपने कपड़े पहिन लिये। एक दिन जब वह अपने कपड़े पहिने घूम रहा था तो उसने देखा कि एक कुम्हार अपनी पत्नी और बच्चों के साथ एक बार हँस लेता था और फिर रो लेता था।

उसने उससे पूछा — "अरे यह क्या बात है कि आप एक बार हँसते हैं तो दूसरी बार रोते हैं। अगर आपको हँसना है तो हँसिये और रोना है तो रोइये।"

कुम्हार बोला — “तुम मुझे परेशान मत करो। तुम्हें इस बात से क्या लेना देना कि मैं क्या करता हूँ।”

राजकुमार बोला — “माफ कीजियेगा मैं इसकी वजह जानना चाहता हूँ अगर आपको कोई ऐतराज न हो तो।”

इस पर कुम्हार बोला — “बात यह है कि इस देश के राजा की एक बेटी है जिसकी उसे रोज शादी करनी पड़ती है क्योंकि रोज ही उसका पति उसके साथ रहने पर मर जाता है। इस तरह से करीब करीब सारे जवान लड़के मर गये हैं। अब हमारे बेटे की बारी भी जल्दी ही आने वाली है।

हम इस अजीब सी बात पर हँसते हैं कि एक कुम्हार के बेटे की शादी एक राजकुमारी से होगी और इस शादी के भयानक परिणाम को सोच कर रोते हैं। हमारी समझ में नहीं आ रहा कि हम क्या करें।”

राजकुमार सोचते हुए बोला — “यह तो हँसने रोने की बात है ही पर अब आप रोइये नहीं। आपके बेटे की जगह मैं ले लूँगा। उसकी जगह मेरी शादी उस राजकुमारी से हो जायेगी। बस मुझे उस मौके के लिये ठीक से कपड़े बनवा दीजियेगा और तैयार कर दीजियेगा।”

कुम्हार ने उसको बढ़िया से कपड़े बनवा दिये कुछ गहने बनवा दिये और शादी के लिये महल भेज दिया। रात को उसे राजकुमारी के कमरे में भेज दिया गया।

उसने सोचा "यह तो बड़ी भयानक घड़ी है क्या मैं भी दूसरे नौजवानों की तरह से मारा जाऊँगा।" उसने अपनी तलवार कस कर अपनी मुट्ठी में पकड़ ली और इस इरादे से अपने बिस्तर पर लेट गया कि आज की रात वह सोयेगा नहीं और देखेगा कि क्या होता है।

वह चारों तरफ देखता रहा। बीच रात में उसने देखा कि राजकुमारी के नथुनों से दो साँप निकले और उसकी तरफ उसको मारने के लिये बढ़ने लगे जैसे शायद उन्होंने पहले कुछ नौजवानों को मारा होगा।

पर यह राजकुमार तो तैयार था उसने अपनी तलवार कस कर पकड़ ली। जैसे ही वे उसके बिस्तर पर आये उसने अपनी तलवार से उन दोनों को काट दिया।

सुबह को राजा उसकी खोज खबर लेने के लिये आया तो यह देख कर बड़ा आश्चर्यचकित हुआ कि यह नौजवान तो ज़िन्दा था और उसकी बेटी से बात कर रहा था। उसने सोचा यह जरूर ही मेरी बेटी का पति होगा क्योंकि वही उसके साथ रह सकता है।

राजा कमरे में घुसा और उससे पूछा — "तुम कहाँ से आये हो और तुम हो कौन?"

राजकुमार बोला — "मैं फलाँ फलाँ देश के राजा का बेटा हूँ।"

जब राजा ने यह सुना तो वह बहुत खुश हुआ और उसको अपने महल में रख लिया। राजकुमार राजा के पास एक साल से ज़्यादा रहा। फिर उसने अपने देश जाने की इजाज़त माँगी जो राजा ने उसको तुरन्त दे दी। राजा ने उसको उसके पिता के लिये भेंट में हाथी घोड़े जवाहरात और बहुत सारे पैसे दे कर उसे विदा किया। राजकुमार चल दिया।

रास्ते में वह अपने बहनोई के देश से हो कर गुजरा तो उसके देश में आने की खबर राजा को लगी तो वह अपने हाथ रस्सी से बँधे राजकुमार के सामने आया। उसने बहुत ही विनम्रता से उसको अपने महल में ठहरने के लिये कहा और जो कुछ भी खातिरदारी वह उसकी कर सकता था उसको स्वीकार करने के लिये कहा।

जब राजकुमार महल में ठहरा हुआ था तो उसने अपनी बहिन को देखा तो उसने उसको मुस्कुराते हुए नमस्ते की। जब वह वहाँ से चला तो उसने उसको बताया कि जब वह पहले वहाँ आया था तो उसने और उसके पति ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया था।

फिर वह कैसे वहाँ से बच कर भाग निकला। उसने अपनी बहिन को दो हाथी दो शानदार घोड़े पन्द्रह सिपाही और दस लाख के हीरे जवाहरात दिये और वहाँ से चला गया।

वहाँ से निकल कर वह अपने पुराने दोस्त के घर गया जिसने उसके साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया था। उसने उसके घर से कुछ

दूरी पर अपना कैम्प लगाया और अपने दोस्त को अपने पास बुलाया पर उसका दोस्त तो उससे मिलने जाये ही नहीं।

पूछने पर कि वह उससे मिलने क्यों नहीं जा रहा वह बोला — “क्योंकि अब उसको मेरी सहायता की जरूरत नहीं है।”

यह सुन कर राजकुमार खुद उससे मिलने के लिये उसके महल पहुँचा और उसको अपनी जरूरत के समय सहायता करने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

इसके बाद वह अपने घर गया और अपने माता पिता को अपने आने की खबर दी। पर अफसोस कि अपने बेटे को बाहर निकाल देने के बाद वे उसकी जुदाई में रोते रोते अन्धे हो गये थे।

राजा बोला — “उसको अन्दर ले आओ। वह जब अपना हाथ हमारी ऑखों पर रखेगा तब हम फिर देखने लगेंगे।”

राजकुमार अन्दर आया तो बूढ़े माता पिता ने उसका बड़े प्यार से स्वागत किया। उसने अपने दोनों हाथ अपने माता पिता की अन्धी ऑखों पर रखे तो उनको फिर से दिखायी देना शुरू हो गया। तब राजकुमार ने राजा को अपनी सारी कहानी सुनायी और बताया कि किस प्रकार वह उस ब्राह्मणी की सलाह मान कर कितनी बार बचा।

राजा ने उसको बाहर निकाल देने पर अपना दुख प्रगट किया और फिर सब खुशी खुशी शान्ति से रहने लगे।

8 राक्षसी रानी[33]

लोग एक ऐसे राजा की कहानी कहते हैं जिसके सात पत्नियॉ थी पर उनमें से बच्चा किसी के नहीं था। जब उसने अपनी पहिली पत्नी से शादी की थी तो सोचा था कि वह जरूर ही उसको एक बेटा देगी पर ऐसा नहीं हुआ।

फिर उसने दूसरी से शादी की तीसरी से शादी की फिर चौथी पॉचवीं छठी और सातवीं से शादी की पर किस्मत की बात किसी के भी कोई लड़का नहीं हुआ जो उसको खुश करता और उसके बाद उसका राज्य सॅभालता। इस बात को ले कर वह बहुत दुखी था।

एक बार वह पास के एक जंगल से कुछ कराहता सा गुजर रहा था कि उसको बहुत सुन्दर परी दिखायी दी। उसने राजा से पूछा "तुम कहॉ जा रहे हो?"

राजा बोला — "मैं बहुत दुखी और अभागा हूॅ। हालॉकि मेरे सात पत्नियॉ हैं पर अपना कहने के लिये मेरा कोई बेटा नहीं है जिसे मैं अपना वारिस कह सकूॅ। मैं इस जंगल में आज इसलिये चला आया ताकि मुझे कोई संत मिल जाये और वह मेरी इच्छा पूरी कर दे।"

---

[33] Ogress Queen (Tale No 8)
An Ogre (feminine ogress) is a being usually depicted as a large, hideous, manlike monster that eats human beings.

परी ने हॅसते हुए पूछा — "और तुम क्या सोचते हो कि तुम्हें यहॉ इस बियाबन जंगल में कोई संत मिलेगा? यहॉ केवल मैं रहती हूॅ। पर मैं तुम्हारी सहायता कर सकती हूॅ। अगर मैं तुम्हारे दिल की इच्छा पूरी कर दूॅ तो बताओ तुम मुझे क्या दोगे?"

राजा बोला — "तुम मुझे एक बेटा दे दो मैं तुमको अपना आधा राज्य दे दूॅगा।"

परी बोली — "मुझे तुम्हारा न तो सोना चाहिये और न देश ही चाहिये। तुम मुझसे शादी कर लो तो तुम्हें बेटा भी मिल जायेगा और राज्य का वारिस भी।"

राजा राजी हो गया और परी को ले कर अपने महल चला गया। वहॉ जा कर उसने जल्दी ही उसको अपनी आठवीं पत्नी बना लिया। राजा की खुशी का कोई ठिकाना न रहा जब उसे कुछ दिन बाद यह पता चला कि उसकी दूसरी सातों पत्नियों के बच्चा होने वाला था।

पर वह परी जिसको राजा ने अपनी आठवीं पत्नी बनाया था परी नहीं थी बल्कि एक राक्षसी थी जो उस जंगल में राजा के सामने परी के रूप में इसलिये प्रगट हुई थी ताकि वह उसको धोखा दे कर उसके महल में खुराफात मचा सके।

हर रात जब शाही घराने के सब लोग सो जाते वह उठती और अस्तबल में जाते समय और बाहर नौकरों के घरों की तरफ जाते समय एकाध हाथी खा लेती या फिर तीन चार घोड़े या कुछ भेड़ें या

ऊँट खा लेती और अपनी भूख प्यास बुझाने के बाद सुबह होने से पहिले पहिले अपने कमरे में आ कर लेट जाती जैसे कुछ हुआ ही न हो।

पहिले तो राजा के नौकर इस बात को बताने में डरते रहे पर जब उन्होंने देखा कि जानवर तो हर रात गायब होते रहे हैं तो उनको राजा के पास जाना पड़ा। तुरन्त ही महल की इमारत की सुरक्षा की कड़ा हुक्म सुना दिया गया और उसके हर कमरे की रक्षा के लिये चौकीदार नियुक्त कर दिये गये।

पर सब बेकार था। जानवर हर रात गायब होते रहे और कोई यह नहीं बता सका कि यह सब कैसे हो रहा था।

एक रात राजा अपने कमरे परेशान सा घूम रहा था कि वह इस बारे में क्या करे कि उसकी आठवीं पत्नी नकली परी ने कहा — "तुम मुझे क्या दोगे अगर मैं तुम्हारा चोर ढूँढ दूँ तो।"

राजा बिना सोचे समझे बोला — "कुछ भी। हर चीज़।"

परी बोली — "ठीक है। तो अभी तुम जा कर सोओ कल सुबह मैं तुम्हें बताऊँगी कि यह सब खुराफात किसने मचा रखी है।"

यह सुन कर राजा सोने चला गया और जल्दी ही गहरी नींद सो गया। उसके सोते ही उसकी नीच पत्नी उस कमरे से निकली भेड़ों के बाड़े में गयी एक भेड़ ली उसको मारा और उसका खून एक मिट्टी के बर्तन में भर दिया।

वह खून भरा बर्तन ले कर वह वापस महल लौटी और दूसरी पत्नियों के कमरों में गयी। वहाँ जा कर उसने वह खून उनके मुँह पर लगा दिया और उसमें से कुछ खून उनके कपड़ों पर छिड़क दिया। इसके बाद वह अपने कमरे में आ कर लेट गयी। राजा तभी भी गहरी नींद सो रहा था।

जैसे ही सुबह हुई उसने राजा को जगाया और बोली — "मैंने तुम्हारा चोर पकड़ लिया है। तुम्हारी जो दूसरी पत्नियाँ हैं उन्होंने ही जानवर चुराये हैं और खाये हैं। वे लोग इन्सान नहीं हैं बल्कि राक्षसी हैं। अगर तुम अपनी ज़िन्दगी बचाना चाहते हो तो तुम्हें उनसे बच कर रहना चाहिये। अगर तुम्हें मेरी बात झूठ लग रही हो तो तुम खुद जा कर देख लो।"

राजा अपनी सब पत्नियों के कमरों में गया तो देखा कि सचमुच ही उनके मुँह पर खून लगा है और उनके कपड़ों पर भी खून के धब्बे हैं। यह देख कर राजा बहुत गुस्सा हो गया।

उसने उनके लिये यह हुक्म सुना दिया कि उन सबकी आँखें निकाल ली जायें और उनको शहर के बाहर वाले सूखे कुँए में फेंक दिया जाये। ऐसा ही किया गया।

अगले दिन ही उनमें से एक रानी ने एक लड़के को जन्म दिया जिसको खाने की जगह सबने खा लिया। उसके अगले दिन एक और रानी ने एक लड़के को जन्म दिया उसको भी उसी तरह से खाने की जगह सबने खा लिया।

तीसरे दिन तीसरी रानी ने चौथे दिन चौथी रानी ने पॉचवे दिन पॉचवीं रानी ने और छठे दिन छठी रानी ने एक एक लड़के को जन्म दिया और वे सब बच्चे खा लिये गये।

सातवीं रानी का अभी समय नहीं आया था। उसने अपने हिस्से के बच्चों के टुकड़े नहीं खाये थे बल्कि उनको सॅभाल कर रख लिया था जब तक उसका अपना बच्चा जन्म लेता।

जब उसके बच्चे का जन्म हुआ तो उसने दूसरी रानियों से प्रार्थना की कि वे उसके बच्चे को न खायें। बल्कि उस बच्चे के हिस्से के बदले में उसने उनके बच्चों के हिस्से जो उन्होंने उसको खाने के लिये दिये थे वे ले लें। छहों रानियॉ मान गयीं और इस तरह उस बच्चे की भी जान बच गयी और सब रानियों की जान भी बच गयी।

बच्चा धीरे धीरे बढ़ने लगा और बड़ा हो कर वह एक ताकतवर और सुन्दर लड़का बन गया। जब वह छह साल का हुआ तो सातों रानियों ने सोचा कि उसको कुछ बाहर की दुनियॉ दिखायी जाये। पर वे यह काम कैसे करें। कुॅआ बहुत गहरा था और उसकी दीवारें बिल्कुल सीधी खड़ी थीं।

आखिर उन्होंने एक तरकीब निकाल ही ली। वे एक दूसरे के कन्धे पर खड़ी हो गयीं। सातवीं रानी जो सबसे ऊपर खड़ी थी उसने बच्चे को उठा कर कुॅए के किनारे पर बिठा दिया।

कुँए से बाहर निकलते ही बच्चा महल की तरफ भाग गया। शाही रसोईघर में पहुँच कर उसने रसोइये से खाना माँगा। रसोइये ने उसको बहुत सारा खाना दिया जिसमें से कुछ उसने खाया और बाकी बचा खाना वह अपनी माँ और राजा की दूसरी रानियों के लिये ले आया।

कुछ दिनों तक ऐसे ही चलता रहा कि एक दिन रसोइये ने उससे वहीं रुक जाने के लिये और राजा के लिये कुछ खाना बनाने के लिये कहा। उसने उससे कहा कि उसकी माँ मर गयी है और उसको उसका अन्तिम संस्कार करने जाना जरूरी था तो आज वह उसकी जगह खाना बना दे।

लड़का राजी हो गया। उसने कहा कि वह अपनी तरफ से भरसक कोशिश करेगा कि राजा के लायक खाना बना सके और रसोइया उसे खाने का काम सौंप कर चला गया।

उस दिन के खाने से राजा बहुत खुश हुआ। खाना ठीक से पका हुआ था। उसमें खुशबू भी बहुत अच्छी आ रही थी और वह ठीक से परोसा गया था।

शाम को रसोइया लौट आया। राजा ने उसको बुला कर उसके खाने की बहुत तारीफ की और कहा कि आज का खाना बहुत अच्छा था और वह आगे भी वैसा ही खाना बनाया करे।

यह सुन कर रसोइये ने ईमानदारी से स्वीकार किया कि उस दिन का खाना तो उसने बनाया ही नहीं था। उस दिन तो वह सारा दिन

महल में ही नहीं था क्योंकि उसकी माँ मर गयी थी। उसने एक लड़के को यह जिम्मेदारी सौंप दी थी उसने ही वह खाना बनाया था।

जब राजा ने यह सुना तो उसने रसोइये को उस लड़के को अपने रसोईघर में नियमित रूप से नौकरी देने के लिये कहा। अब क्या था राजा के रसोईघर में रोज नये नये पकवान बनने लगे और राजा उनसे खुश हो कर उस लड़के को अक्सर भेंटें देने लगा। वह लड़का ये सब भेंटें और खाना अपनी माँ और अपनी सौतेली माँओं के लिये ले कर जाने लगा।

जब यह लड़का महल से कुँए की तरफ जाता था तो रास्ते में एक फ़कीर पड़ता था जो हमेशा उसे आशीर्वाद देता और उससे भीख माँगता तो लड़का भी उसको कुछ न कुछ दे ही देता था।

इस तरह से फिर कुछ साल निकल गये। लड़का कुछ और जवान और सुन्दर हो गया कि एक दिन उस नीच रानी की निगाह उस पर पड़ी। वह उसकी सुन्दरता देख कर दंग रह गयी और उससे पूछा कि वह वहाँ कहाँ से आया था और कब आया था।

लड़के को रानी के चरित्र के बारे में कुछ पता नहीं था न उसे उस पर कोई शक ही हुआ सो उसने अपने बारे में अपनी माँ और अपनी सौतेली माँओं के बारे में उसे सब कुछ बता दिया। उसी समय से वह उसकी जान लेने की योजना बनाने लगी।

उसने बीमारी का बहाना बनाया और एक हकीम[34] को बुलाया। उसको उसने राजा से यह कहने के लिये रिश्वत दी कि "रानी बहुत बीमार है और केवल मादा चीते का दूध ही उसकी जान बचा सकता है।"

राजा ने जब यह सुना तो वह तुरन्त उसके पास आया और उससे कहा — "प्रिये यह मैं क्या सुन रहा हूँ। हकीम जी कह रहे हैं कि तुम बीमार हो और तुम्हारे इलाज के लिये मादा चीते के दूध की जरूरत है। यह हमें कैसे मिल सकता है? किसकी हिम्मत है जो उसका दूध ला सके?"

रानी बोली — "यह काम वह लड़का कर सकता है जो अपने यहाँ रसोईघर में काम करता है। वह बहुत बहादुर है। तुमने उसके लिये जो कुछ भी किया है उसके बदले में वह यह काम तुम्हारे लिये खुशी खुशी कर देगा। उसके अलावा मैं किसी और को नहीं जानती जो तुम्हारा यह काम कर सके।"

"ठीक है मैं उसको बुला कर पूछूँगा।"

लड़का तुरन्त ही तैयार हो गया और अगले दिन अपनी इस खतरे भरी यात्रा पर चल दिया। रास्ते में वही फकीर पड़ता था। उसने लड़के से पूछा — "किधर चल दिये?"

[34] Traditional doctor who knows Greek medical system

उसने राजा का हुक्म फ़कीर को बता दिया और साथ में यह भी कहा कि राजा की इच्छा पूरी कर के उसे कितनी खुशी होगी जिन्होंने उसके ऊपर इतनी दया की है।

फ़कीर बोला — "तुम वहाँ मत जाओ। तुम ऐसा काम करने की हिम्मत भी कैसे कर सकते हो। तुम्हें मालूम है कि यह कितनी जोखिम का काम है?"

पर लड़के को अपनी ज़िन्दगी की चिन्ता नहीं थी तो फकीर बोला — "अगर तुम नहीं मानते तो मेरी सलाह मानो इससे तुम सुरक्षित भी रहोगे और अपने काम में कामयाब भी होगे। जब तुम किसी मादा चीते को देखो तो एक तीर उसके एक थन में मारना। इससे वह बोल पड़ेगी और पूछेगी कि तुमने उसको तीर क्यों मारा।

तब तुम उससे कहना कि यह तीर तुमने उसको मारने के लिये नहीं चलाया बल्कि इसलिये चलाया था ताकि उसके थन में एक छेद हो जाये और उससे दूध आसानी से बह सके। तुम उससे यह भी कहना कि तुमको उसके बच्चों पर दया आती है जो कम दूध की वजह से कमजोर दिखायी दे रहे हैं।"

फिर फकीर ने उसे आशीर्वाद दिया और उसको उसकी यात्रा पर भेज दिया। इस तरह प्रोत्साहित हो कर लड़का खुशी खुशी जंगल की तरफ बढ़ा। जल्दी ही उसको एक मादा चीता मिल गयी। फकीर की सलाह के अनुसार उसने तुरन्त ही एक तीर उसके एक थन में मारा।

जब मादा चीता ने उससे उसके इस तीर मारने की वजह पूछी तो उसने वही कहा जो फकीर ने उससे कहने के लिये कहा था। पर साथ में उसने यह भी कहा कि महल में रानी जी बहुत बीमार हैं उनके इलाज के लिये मादा चीते का दूध चाहिये।

मादा चीता बोली — "मेरा दूध चाहिये और रानी जी को? क्या तुम्हें यह मालूम नहीं कि वह एक राक्षसी है। तुम उससे दूर ही रहना कहीं ऐसा न हो कि वह तुमको मार डाले और खा जाये।"

लड़का बोला — "मुझे उससे कोई खतरा नहीं है। उसकी मुझसे कोई दुश्मनी नहीं है।"

"तब ठीक है। मैं तुम्हें अपना दूध जरूर दूँगी पर तुम रानी से बच कर रहना।" कह कर मादा चीता उसको एक बहुत बड़ी चट्टान के पास ले गयी जो एक चट्टान से टूट कर अलग हो गयी थी।

वहाँ जा कर वह बोली — "इधर देखो। यहाँ मैं अपने दूध की एक बूँद गिराती हूँ।" कह कर उसने अपने दूध की एक बूँद उस चट्टान पर गिरा दी तुरन्त ही वह चट्टान टुकड़े टुकड़े हो कर बिखर गयी।

वह फिर बोली — "तुमने देखी मेरे दूध की ताकत। पर अगर रानी जितना दूध मैं तुम्हें दे रही हूँ वह सब भी पी जायेगी तो भी उसका उसके ऊपर कोई असर नहीं होगा क्योंकि वह राक्षसी है और ऐसी चीज़ों का उसके ऊपर कोई असर नहीं होगा। अगर तुमको मेरा विश्वास न हो तो तुम खुद देख लेना।"

मादा चीता का दूध ले कर लड़का वापस लौट आया और वह दूध उसने राजा को दे दिया। राजा उसको अपनी पत्नी के पास ले गया। रानी ने वह सारा दूध पी लिया और कहा कि वह अब ठीक हो गयी।

राजा उस लड़के से बहुत खुश हुआ और अपने महल के नौकरों में उसकी तरक्की कर दी पर रानी का उद्देश्य तो अभी पूरा नहीं हुआ था। वह तो उसको मारना चाहती थी और वह अभी भी ज़िन्दा था। वह फिर सोचने लगी कि वह उसको राजा को बिना गुस्सा किये कैसे मार सकती थी।

कुछ दिनों के बाद उसने बीमारी का फिर से बहाना किया और राजा को बुला कर उससे कहा — "लगता है मैं फिर बीमार पड़ गयी हूँ पर तुम चिन्ता न करो। मेरे दादा उसी जंगल में रहते हैं जहाँ से वह लड़का मादा चीते का दूध लाया गया था।

उनके पास एक खास दवा है शायद मैं उससे ठीक हो जाऊँ। अगर तुम मँगवा सकते हो तो वह दवा मुझे मँगवा दो। वह लड़का जो मेरे लिये यह दूध ले कर आया था वही वहाँ भी जा सकता है और वह दवा उनसे ला सकता है।"

सो वह लड़का दोबारा रानी के दादा से दवा लाने के लिये भेज दिया गया। रास्ते में फिर से फकीर पड़ा तो फकीर ने उससे फिर पूछा — "किधर चले?" लड़के ने फिर से सब कहानी उसको सुना दी।

फकीर बोला — "तुम वहॉ मत जाओ वह आदमी तो राक्षस है। वह तुम्हें खा जायेगा।" लेकिन लड़का तो पिछली बार की तरह से फिर से अपनी जिद पर अड़ा रहा।

फकीर बोला — "तो ठीक है जाओ मगर मेरी सलाह सुनते जाओ। जब तुम उस राक्षस को देखो तो उसको नाना जी कह कर पुकारना। वह तुमसे अपनी पीठ खुजलाने के लिये कहेगा तो तुम उसकी पीठ जरूर खुजलाना और बहुत ही ज़ोर से खुजलाना।"

लड़के ने वायदा किया कि वह वैसा ही करेगा और जंगल की तरफ चल दिया। जंगल बड़ा था और घना था उसको लगा कि वह तो उस राक्षस तक कभी पहुँच ही नहीं पायेगा। पर तभी उसको उस राक्षस का मकान दिखायी दे गया और साथ में राक्षस भी।

उसको देखते ही वह तुरन्त चिल्लाया — "नाना जी मैं आपकी बेटी का बेटा हूँ। मैं आपसे यह कहने आया हूँ कि आपकी बेटी बहुत बीमार है और वह जब तक ठीक नहीं हो सकतीं जब तक कि वह वह दवा न लें जो आपके पास है। उन्होंने मुझे इसी लिये आपके पास भेजा है। मेहरबानी कर के वह दवा मुझे दे दीजिये।"

राक्षस बोला — "ठीक है। मैं तुम्हें वह दवा देता हूँ पर पहले तुम ज़रा मेरी पीठ खुजला दो। यहॉ बहुत खुजली आ रही है।"

राक्षस ने झूठ बोला था। उसकी पीठ में बिल्कुल भी खुजली नहीं आ रही थी। वह तो बस यह देखना चाहता था कि वह लड़का

उसकी बेटी का असली बेटा था या नहीं। फकीर के बताये अनुसार उसने राक्षस की पीठ बहुत ज़ोर से खुजला दी।

जब लड़के ने राक्षस की पीठ में अपने नाखून गड़ाये जैसे कि वह उसकी पीठ खुरच देना चाहता हो तभी राक्षस ने उसे रोक दिया "ठीक है ठीक है।" और दवा दे कर उसे वापस भेज दिया।

महल पहुँच कर उसने वह दवा राजा को दे दी। राजा उसको अपनी रानी के पास ले कर गया। उसने उसको लिया और बताया कि वह अब पहले से बेहतर थी।

राजा उस लड़के से अब और भी ज़्यादा खुश था। बदले में उसने उसको कई भेंटें दीं और उसको और भी कई चीज़ें दीं।

नीच रानी की अब समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह ऐसे लड़के के साथ क्या करे। वह तो मादा चीते से भी बच कर आ गया था उसके पिता से भी बच कर आ गया था। भगवान ही जानता है कि ऐसा कैसे हुआ। पर अब वह उसका क्या करे।

आखिर उसने उसको अपनी एक बूढ़ी दादी के पास भेजने का प्लान बनाया जो उसी जंगल में उसके पिता के घर के पास ही रहती थी। उसको पूरा भरोसा था कि इस बार वह ज़िन्दा वापस नहीं आ पायेगा।

सो उसने राजा को बुलाया और उससे कहा कि मेरे घर में मेरी एक बहुत ही कीमती कंघी है मुझे वह चाहिये। मेहरबानी कर के उस लड़के को मेरी वह कंघी लाने भेज दो। जब वह जाने के लिये

तैयार हो तो मुझे बता देना मैं उसको अपनी दादी के नाम चिट्ठी दे दूॅगी।"

राजा ने उसकी बात मान ली और लड़का उससे उसकी दादी के नाम चिट्ठी ले कर चल दिया। रास्ते में फिर वही फकीर पड़ा तो उसने पूछा — "अब कहाॅ चल दिये?"

लड़के ने उसको फिर से सब कुछ बता दिया। उसने उसको रानी की दी हुई चिट्ठी भी पढ़ने के लिये दी।

फकीर बोला — "ज़रा मैं भी तो पढ़ूॅ कि इसमें क्या लिखा है।"

पढ़ कर वह बोला — "क्या तुम जान बूझ कर मौत के मुॅह में जाना चाहते हो यह चिट्ठी तो तो तुम्हारी मौत का परवाना है। कंघी का तो केवल बहाना है।

सुनो इसमें क्या लिखा है — "इस चिट्ठी का लाने वाला मेरा बहुत खास दुश्मन है। मैं अपना कोई भी काम तब तक पूरा नहीं कर पाऊॅगी जब तक यह ज़िन्दा है। जैसे ही यह तुम्हारे पास पहुॅचे इसको मार देना ताकि मैं इसके बारे में फिर कुछ न सुनूॅ।"

जैसे ही लड़के ने यह शब्द सुने वह तो डर के मारे थर थर कॉपने लगा पर वह राजा को दिया हुआ अपना वायदा नहीं तोड़ सकता था। उसने यह पक्का इरादा कर लिया था कि वह राजा का काम पूरा करेगा चाहे उसकी जान खतरे में ही क्यों न हो।

सो फकीर ने वह चिट्ठी तो फाड़ कर फेंक दी और एक दूसरी चिट्ठी इस तरह लिखी — “यह मेरा बेटा है। जब यह तुम्हारे पास पहुँचे तो इसका खास ख्याल रखना और इसको बहुत प्यार से रखना।” यह लिख कर उसने यह चिट्ठी लड़के को दी और कहा कि वह उसको नानी कह कर पुकारे और उससे बिल्कुल डरे नहीं।

लड़के ने वह चिट्ठी ली और जंगल की तरफ चल दिया। राक्षसी के घर पहुँच कर उसने जैसा कि फकीर ने उसे सलाह दी थी राक्षसी को नानी कह कर पुकारा और फकीर की लिखी हुई चिट्ठी उसको थमा दी।

चिट्ठी पढ़ कर उसने लड़के को गले लगाया और अपनी बेटी और उसके शाही पति के बारे में काफी कुछ बातें पूछी। राक्षसी ने जितना अपनी तरफ से सोच सकती थी लड़के पर पूरा ध्यान दिया और उसकी सुख सुविधा का भी पूरा ख्याल रखा।

जब वह वहॉ से चलने लगा तो उसने उसको बहुत सारी भेंटें दीं। जिनमें से एक साबुन की शीशी थी जिसकी अगर एक बूँद भी जमीन पर गिर जाये तो वहॉ एक बहुत बड़ा पहाड़ खड़ा हो जाता था।

एक शीशी भर कर सुइयॉ थीं जिसकी अगर एक सुई नीचे गिर जाये तो एक बड़ी पहाड़ी खड़ी हो जायेगी जिस पर नुकीलें कीलें गड़ी होंगी। एक शीशी भर कर पानी था जिसमें से अगर पानी जमीन पर डाला जाये तो समुद्र बन सकता था।

उसने उसको ये चीज़ें भी दिखायीं और उनका मतलब भी समझाया — सात बढ़िया किस्म के मुर्गे, एक चरखा, एक कबूतर, एक चिड़िया[35] और एक दवा।

उसने कहा इन सात मुर्गों में तुम्हारे सात मामाओं की आत्मा है जो कुछ दिनों के लिये बाहर गये हुए हैं। जब तक ये सात मुर्गे ज़िन्दा हैं तब तक तुम्हारे मामा ज़िन्दा हैं और उनको कोई नुकसान नहीं पहुँच सकता।

इस चरखे में मेरी आत्मा बन्द है। अगर यह टूटा तो मैं भी टूट जाऊँगी यानी मैं मर जाऊँगी नहीं तो मैं अमर हूँ। इस कबूतर में तुम्हारे नाना की ज़िन्दगी बन्द है और इस चिड़िया में तुम्हारी माँ की ज़िन्दगी बन्द है। यह कबूतर और यह चिड़िया जब तक कुशल मंगल हैं तुम्हारे नाना और माँ भी सकुशल हैं। और इस दवा को लगाने से एक अन्धा भी देख सकता है।

लड़के ने राक्षसी को जो कुछ उसने उसको दिया था और जो कुछ उसने उसको दिखाया था उस सबके लिये धन्यवाद दिया और सोने चला गया।

सुबह को राक्षसी जब नदी पर नहाने गयी लड़के ने सातों मुर्गों और कबूतर को मारा और चरखे को जमीन पर मार कर तोड़ दिया। उसी समय राक्षसी उसका पति और सातों बेटे मर गये। फिर

[35] Translated for the word “Starling” – a small to medium sized bird – see its picture above.

उसने पिंजरे में बन्द चिड़िया को पकड़ा वह कीमती दवा ली और राजा के महल की तरफ चल दिया।

रास्ते में वह अपनी माँ और राजा की दूसरी रानियों का अन्धापन दूर करने के लिये रुका। जैसे ही उसने वह दवा उनकी आँखों पर लगायी उनके देखने की ताकत वापस आ गयी। उसने उन सबको कुँए से बाहर निकाला। अब सब मिल कर राजा के महल की तरफ चले।

महल जा कर लड़के ने उनको एक कमरे में इन्तजार करने के लिये कहा और फिर वह राजा के पास गया और उसको अपनी माँओं से मिलने के लिये तैयार किया। उसने कहा — "राजा साहब मैं आपको कई भेद बताना चाहता हूँ। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप उन्हें ध्यान दे कर सुनें।

आपकी पत्नी एक राक्षसी है और वह मुझे मारने का प्लान बना रही है क्योंकि वह यह जानती है कि मैं आपकी कई पत्नियों में से एक पत्नी का बेटा हूँ जिनको आपने अन्धा कर के एक सूखे कुँए में डलवा दिया था।

वह डरती है कि मैं एक दिन आपकी राजगद्दी का वारिस बन जाऊँगा इसलिये वह वह चाहती है कि मैं जल्दी से जल्दी मर जाऊँ। मैंने उसके पिता माता और सात भाइयों को मार दिया है और अब मैं उसको मारने वाला हूँ। उसकी ज़िन्दगी इस चिड़िया में बन्द है।"

कह कर उसने उस चिड़िया का गला घोंट दिया। रानी तुरन्त ही मर गयी। फिर वह राजा को अपने साथ ले गया और उसकी सातों रानियों को दिखा कर बोला — “ये आपकी सातों असली रानियाँ हैं। आपके घर में आपके सात बेटे पैदा हुए जिनमें से छह बेटे खाने की कमी की वजह से मार कर खा लिये गये। मैं सातवाँ अकेला ज़िन्दा बच रहा।”

यह सुन कर राजा बिलख बिलख कर रो पड़ा — “ओह यह मैंने क्या किया। मुझे धोखा दिया गया।”

इसके बाद राजा ने अपने बेटे को राजा बना दिया। वह भी अपनी साबुन की सुइयों की और पानी की जादुई बोतलों के सहारे अपने राज्य से लगे हुए राज्यों को जीतने में सफल रहा।

बूढ़ा राजा अपनी सातों पत्नियों के साथ शान्तिपूर्ण ज़िन्दगी बिताता रहा और आनन्द करता रहा।

9 एक सुनार और उसके दोस्त[36]

एक बार की बात है कि एक सुनार था जिसमें कई बुरी आदतें थीं उनमें से उसकी दो बुरी आदतें खास थीं — एक तो वह बहुत पियक्कड़ था और दूसरे बहुत खर्चीला था।

इस तरह हम सोच सकते हैं कि कुछ ही समय में उसके पास उसका सारा पैसा खत्म हो गया होगा। अब उसके पास एक पैसा भी ऐसा नहीं था जिसको वह अपना कह सके।

जब वह गरीबी की इस हालत से गुजर रहा था तो उसके ससुर ने उसकी सहायता की। उसने उसकी पत्नी को यानी अपनी बेटी को घर का खर्च चलाने के लिये सौ रुपये दिये।

जब सुनार का ससुर अपनी बेटी को सौ रुपये दे कर चला गया तो वह अपनी पत्नी से बोला — "अगर मेरे पास पच्चीस रुपये होते तो में उससे एक ऐसा गहना बना सकता था जिसको में आसानी से सौ रुपये का बेच सकता था।"

पत्नी ने पूछा — "क्या तुम सचमुच ऐसा कर सकते हो?"

सुनार ने जवाब दिया — "हॉ बिल्कुल कर सकता हूँ।"

उसकी पत्नी ने तुरन्त ही पच्चीस रुपये निकाल कर देते हुए उससे कहा — "तो यह लो पच्चीस रुपये और कर के दिखाओ।"

---

[36] The Goldsmith and His Friends (Tale No 9)

सुनार ने वे रुपये लिये अपनी दूकान पर गया और अपनी पूरी होशियारी लगा कर एक कंगन बनाया। वह उसकी कारीगरी का अच्छा नमूना था। उसको देख कर खुश होते हुए उसने सोचा कि वह जरूर उसके लिये कुछ अच्छा भाग्य ले कर आयेगा। वह उसको काफी ऊँचे दाम पर बेच सकेगा।

उसको बनाने के तुरन्त बाद ही वह उसको बेचने के लिये चल दिया।

रास्ते मे उसको वज़ीर का एक बेटा मिला। वज़ीर के बेटे ने उसको नमस्ते की और पूछा — "दोस्त क्या तुम्हारे पास कोई अच्छा सा कंगन है?"

सुनार बोला — "हाँ है। और क्योंकि आपने मुझे अपना दोस्त कहा है इसलिये मैं उसे आपको ऐसे ही दे देता हूँ।"

कंगन उसको दे कर खाली हाथ वह घर लौटा तो उसने अपनी पत्नी से पच्चीस रुपये इस शर्त पर और माँगे कि वह उनको भारी ब्याज सहित वापस कर देगा। उसकी पत्नी ने उसको पच्चीस रुपये और दे दिये।

इन पच्चीस रुपयों से उसने पहले जितना ही सुन्दर एक और कंगन बनाया और उसको बेचने चल दिया। वह कुछ ही दूर गया था कि उसको दीवान साहब का बेटा मिल गया। उसने भी सुनार को नमस्ते की और पूछा — "ओ दोस्त क्या तुम्हारे पास कोई सुन्दर कंगन है बेचने के लिये?"

सुनार बोला — “हॉ साहब है।” कह कर उसने वह नया कंगन उसको दिखा दिया।

नौजवान ने पूछा — “इसकी क्या कीमत है?”

सुनार बोला — “कुछ भी नहीं। क्योंकि आपने मेरे साथ इतना अच्छा बर्ताव किया है इसलिये मैं भी आपसे उतने ही अच्छे तरीके से बर्ताव करूॅगा। लीजिये यह कंगन लीजिये यह आप ही के लिये है।”

वह घर फिर से खाली हाथ लौट आया और अपनी पत्नी को पच्चीस रुपये और देने पर मना लिया। पर उसकी पत्नी को अब अपना पैसा फायदे पर लगाने में कुछ कुछ शक सा होने लगा था सो उसने इस बार उसको पैसे देने से मना किया।

“यह बताओ तुमने मेरे पैसों का किया क्या? तुमने मुझसे कहा था कि तुम मेरे पच्चीस रुपयों के सौ रुपये बना कर दोगे पर तुम मुझसे पचास रुपये ले चुके हो और तुमने मुझे एक पैसा भी वापस नहीं किया है। और तुम मुझसे और पैसे मॉग रहे हो।”

सुनार बोला — “बेवकूफ मत बनो। मुझे मालूम है कि मैंने क्या कहा था और मैंने क्या किया है। मैंने तुम्हारा पैसा बिल्कुल नहीं खोया है। मुझे थोड़ा समय दो तुम देखोगी कि इस बिजनस में मैं तुम्हें कितना सारा पैसा कमा कर दूॅगा।”

पत्नी ने उसकी प्रार्थना पर तरस खा कर उसको पच्चीस रुपये और दे दिये। इन पैसों का भी उसने एक और नया कंगन बनाया

जो पहले जैसा ही सुन्दर था। कंगन बना कर और उसको ले कर वह फिर पहले की तरह से उसको बेचने के लिये चला।

इस बार रास्ते में उसको इत्तफाक से एक चोर मिला। उसने भी उससे कहा — "दोस्त क्या तुम्हारे पास कोई कंगन बेचने के लिये है?" इस पर सुनार ने वह कंगन उसको दे दिया। उसकी कीमत पूछने पर उसने उसकी भी उससे कोई कीमत नहीं ली। और एक बार फिर सुनार खाली हाथ घर वापस आ गया।

घर जा कर उसने अपनी पत्नी को वह सब बताया जो कुछ अब तक उसने किया था।

कुछ दिन बाद बचे हुए पच्चीस रुपये घर के खर्चे में खर्च हो गये। तो एक दिन उसकी पत्नी बोली — "अब मेरे पास घर के खर्च के लिये एक पैसा भी नहीं है।"

सुनार ने सोचा "अब मुझे अपने दोस्तों को जॉचना चाहिये।"

उसने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहिने और वज़ीर के घर गया पर उसको वज़ीर का बेटा नहीं मिला। फिर वह दीवान के घर गया तो वहॉ उसको दोनों मिल गये। उसको तुरन्त ही उनके सामने ले जाया गया। उन्होंने भी उससे अपने दोस्त की तरह से बर्ताव किया।

इत्तफाक से उसी समय वहॉ राजा की बेटी आ गयी। वह भी आ कर वहीं बैठ गयी और बात करने लगी। बातों ही बातों में

उसने पूछा कि क्या कोई ऐसा है जो उस पर एक मेहरबानी कर सके।

वह अपने पिता के बागीचे से एक खास नाशपाती के पेड़ की नाशपाती चाहती थी पर वह यह नहीं जानती थी कि उस पेड़ से फल कैसे तोड़ें जायें। क्योंकि उस पेड़ के चारों तरफ केसर के पाउडर के सात गड्ढे थे।

जो कोई भी उस पेड़ तक जाता निश्चित रूप से उसके पैर केसर से रंग जाते और इस तरह वह पकड़ा जाता। और यही वह राजकुमारी चाहती नहीं थी। यह सुन कर तीनों ने कहा कि वे बिना पकड़े उस पेड़ के फलों को लाने की अपनी भरसक कोशिश करेंगे।

कुछ देर बाद सुनार वहाँ से चला आया। वह तुरन्त चोर के पास पहुँचा। चोर उसको देख कर बहुत खुश हुआ और उससे खाना खा कर जाने की जिद की।

पर सुनार बोला — "इस समय नहीं फिर कभी। अभी तो मेरे दिमाग में कुछ दूसरी ही बात घूम रही है।"

चोर कुछ उत्सुकता के साथ बोला — "मुझे उम्मीद है कि वह कोई बहुत बड़ी बात नहीं होगी।"

सुनार बोला — "है तो। मुझे राजा के बागीचे में लगे एक नाशपाती के पेड़ से राजकुमारी के लिये उसकी नाशपातियाँ तोड़नी हैं। उस पेड़ के चारों तरफ केसर के पाउडर के सात गड्ढे हैं। जो

कोई भी उस पेड़ तक उसकी नाशपाती तोड़ने जायेगा उसके पैर केसर से रंग जायेंगे और वह पकड़ा जायेगा।

राजकुमारी चाहती है कि बिना पकड़े गये उस पेड़ की नाशपातियाँ तोड़ी जायें। क्या तुम इसमें मेरी कुछ सहायता कर सकते हो? मैं इस चक्कर में अपनी जान गँवाना नहीं चाहता सो तुम्हारी सहायता से अगर मैं अपनी जान बचा सकूँ तो।"

चोर बोला — "तुम चिन्ता न करो मैं तुम्हारे लिये उस पेड़ की नाशपाती तोड़ लाऊँगा।" और वह उस पेड़ की नाशपातियाँ तोड़ लाया। हालाँकि उसने यह कैसे किया यह किसी को नहीं पता।

एक दिन बीतने से पहिले ही उस पेड़ की नाशपातियाँ सुनार की दूकान में एक टोकरी में रखी थीं।

तुरन्त ही राजकुमारी वज़ीर और दीवान के बेटों और सुनार के बीच मुलाकात का समय तय किया गया और उस समय वे नाशपातियाँ उनके सामने लायी गयीं।

राजकुमारी ने तुरन्त ही वे नाशपातियाँ खाने की इच्छा प्रगट की सो दीवान के बेटे ने एक नाशपाती छीली और उसके छोटे छोटे टुकड़े काटे। उसने एक टुकड़े में चाकू की नोक घुसायी और उसको राजकुमारी को खिलाने की कोशिश की।

जब वह ऐसा कर रहा था तो अचानक राजकुमारी को छींक आ गयी। इससे वह चाकू उसके गले में लग गया और वह मर गयी।

दीवान का बेटा चिल्ला पड़ा — "अरे यह मैंने क्या किया? मैंने तो राजकुमारी को मार दिया।"

वजीर का बेटा बोला — "इसमें तुमने कुछ नहीं किया यह सब मेरा कुसूर है।"

सुनार बोला — "नहीं नहीं तुम लोगों ने कुछ नहीं किया यह मेरी गलती है। अगर मैं नाशपाती न लाता तो उनको राजकुमारी को इस तरह से न खिलाया जाता। खैर अब हमको इस बात का इन्तजार नहीं करना चाहिये कि कोई हमको इस हालत में देख ले।

हमको तुरन्त ही एक मटका[37] लेना चाहिये और राजकुमारी को उसमें रख कर नदी में फेंक देना चाहिये नहीं तो उसका शरीर फूल जायेगा। इससे लोगों को पता चल जायेगा और फिर हमें फाँसी पर चढ़ा दिया जायेगा।"

तुरन्त ही एक कुम्हार के घर से मटका लाया गया और उसमें राजकुमारी के शरीर को रख कर नदी में फेंक दिया गया। शाम को देखा तो राजकुमारी का कहीं पता नहीं था। महल की सब इमारतों में उसकी खोज की गयी और दूसरी जगह भी उसको ढूँढा गया जहाँ जहाँ वह अक्सर जाया करती थी। पर उसका कहीं कोई पता नहीं था।

राजा ने एक शाही फरमान निकाल दिया कि जो कोई भी राजकुमारी के बारे में कुछ बतायेगा उसको भारी इनाम दिया

[37] A large earthenware in which people used to keep grains.

जायेगा। अगले ही दिन एक आदमी राजा के सामने आया और उसको बताया कि पिछली शाम उसने एक आदमी को नदी में मटका फेंकते देखा था।

यह सुनते ही राजा ने नदी में राजकुमारी की ढूँढ शुरू करवा दी। नदी में मटका भी मिल गया और मटके में रखी सुन्दर राजकुमारी की लाश भी।

राजा ने फिर हुक्म सुनाया कि राज्य भर के सब कुम्हारों को उसके सामने पेश किया जाये और इस मामले की जाँच अच्छी तरह से की जाये।

सो राज्य के सारे कुम्हार राजा के सामने इकट्ठे हुए। राजा ने उनसे पूछा कि हाल में ही किसने मटका बेचा था। एक कुम्हार सामने आया कि दो दिन हुए उसने एक मटका एक सुनार को बेचा था। इस पर सुनार को बुलवाया गया।

राजा ने सुनार से पूछा — "तुमने राजकुमारी को क्यों मारा? बोलो।"

सुनार चुप रहा तो राजा बोला — "सुनार की चुप्पी सुनार को मुजरिम बताती है। दो दिन के अन्दर अन्दर इसको फाँसी पर चढ़ा दिया जाये।" तब तक के लिये सुनार को जेल में बन्द कर दिया गया।

अब क्योंकि सुनार ने कोई जवाब नहीं दिया था तो राजा ने उसकी फाँसी की सजा तो सुना दी पर उसका मन नहीं माना। उसने

उसकी फाँसी को दो दिन के लिये और टाल दिया ताकि वह राजकुमारी की इस बुरी तरह से की गयी हत्या की सही सही वजह पता कर सके।

उसने एक गार्ड का वेश रखा और रात को जेल में सुनार के पास जा पहुँचा। उसने उससे कहा — "तुमको कल फाँसी लगने वाली है। क्या सब कुछ ठीक है या तुम्हारा कोई रिश्तेदार या कोई दोस्त ऐसा है जो इस समय तुम्हारी सहायता कर सके।"

सुनार बोला — "पूछने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद। मरने से पहले मैं अपने दो तीन दोस्तों से मिलना चाहूँगा।"

गार्ड बोला — "ठीक है। आओ मैं तुम्हें उनसे मिलवाता हूँ।"

सुनार उसके साथ चल दिया। सबसे पहिले सुनार वज़ीर के घर गया वहाँ उसने वजीर के बेटे से कुछ बात की। उसने उससे कहा — "ओ मेरे दोस्त जब मैं फाँसी के फन्दे की तरफ जा रहा होऊँगा तब तुम मेरे लिये क्या कुछ कर सकते हो?"

वजीर का बेटा बोला — "हाँ हाँ जरूर। तुम खुश रहना। ठीक समय पर मैं कमान्डर इन चीफ़ अपने सिपाहियों को इशारा करूँगा और वे राजा को मार देंगे।"

इसके बाद सुनार दीवान के घर गया और उसके सबसे बड़े बेटे से बहुत देर तक बातें करता रहा — "मेरे अच्छे दोस्त तुम मेरी रिहाई के लिये क्या कर सकते हो?"

नौजवान बोला — "तुम डरो नहीं। मैं तुम्हारी मेहरबानियों को नहीं भूल सकता। मैं ठीक समय पर आऊँगा और राजा को मार दूँगा।" गार्ड ने भी यह सब सुना तो वह तो डर के मारे कॉप गया।

इसके बाद सुनार अपने तीसरे दोस्त चोर के पास गया। उसने उससे भी वही सवाल किया जो उसने अपने पहिले दोनों दोस्तों से किया था। चोर ने उसकी नमस्ते का जवाब दिया और उसको कुछ देर बैठने के लिये कहा क्योंकि उस समय वह कोई बहुत जरूरी काम कर रहा था।

उसने सुनार की बात सुनी और महसूस किया कि सुनार बहुत कष्ट में है। उसने उसकी सहायता करने का इरादा किया हालॉकि इसमें उसकी जान का खतरा था।

वह उसी पल वहॉ से चला गया और राजा के महल की खिड़की से हो कर महल की छत पर चढ़ गया। वहॉ से फिर वह राजा के सोने के कमरे में चला गया और उस आदमी का सिर काट दिया जो उस रात वहॉ राजा की जगह सो रहा था।

यह कर के उसने सोचा "अब सुनार को किसी बात का डर नहीं होना चाहिये।" यह सोच कर वह उस आदमी का सिर अपने हाथ में ले कर सुनार के पास दौड़ आया।

उसने वह सिर सुनार और गार्ड के सामने फेंकते हुए कहा — "यह लो। अब तुम्हारी सारी मुसीबतें खत्म हो गयीं। अब राजा

तुम्हें बिल्कुल परेशान नहीं कर सकता।" इसके बाद सुनार गार्ड के साथ जेल में लौट आया।

अगले दिन वह सब लोगों और सिपाहियों के सामने फाँसी के फन्दे की तरफ ले जाया गया। जैसे ही वह फाँसी के चबूतरे के पास पहुँचा तो दीवान का बेटा अपनी तलवार खींच कर राजा को मारने के लिये आगे बढ़ा। उधर वज़ीर के बेटे ने भी अपनी सेना को इशारा किया कि वह इस काम में उसकी सहायता करे।

पर इस सबकी जरूरत ही नहीं थी क्योंकि राजा ने सोच रखा था कि उसको क्या करना है। वह चिल्लाया — "सुनार को छोड़ दो उसे आजाद कर दो। उसको माफ किया जाता है।"

इस पर वहाँ खड़े सब लोग चिल्ला पड़े — "राजा की जय हो। राजा अमर रहे।"

10 एक राजकुमारी की कहानी[38]

एक बार की बात है कि एक राजा अपने पड़ोसी राजा से लड़ाई में हार गया तो उसको अपना देश छोड़ कर भागना पड़ गया। वह जितनी तेज़ भाग सकता था भाग गया और उसने अपने शहर से करीब 12 मील दूर एक गाँव में जा कर शरण ली। वह इतनी जल्दी में था कि वह अपने साथ कोई पैसा भी नहीं ले जा सका।

खुशकिस्मती से उसकी बहू राजकुमारी के पास 11 लाल थे जिनमें से एक लाल उसने राजा को उस गाँव में पहुँचते ही दे दिया जहाँ वे रात को ठहरने वाले थे। उसने उनसे उस लाल को बेच कर कुछ खाना खरीदने के लिये कहा।

राजा ने लाल लिया और एक दूकानदार के पास पहुँचा और उससे उस लाल के बदले में एक रुपये का खाना माँगा। जाहिर था कि दूकानदार तुरन्त ही तैयार हो गया। उसने राजा से अपने घर चलने के लिये कहा जहाँ वह उसको उसके लाल का पैसा दे देगा।

पर यह दूकानदार एक बहुत ही नीच आदमी था। हालाँकि वह राजा को उसका पैसा वहीं की वहीं दे सकता था पर वह उसको अपने घर ले जाना चाहता था क्योंकि अपने घर के एक कमरे में

[38] The Tale of a Princess (Tale No 10)

उसने एक जाल बिछा रखा था जिससे उसने कई लोगों को कैद कर रखा था।

वह जाल ऐसा था कि जो कोई उस पर बैठता था वह उसमें से नीचे गिर जाता था और फिर वहॉ से वह निकल नहीं पाता था जब तक वह दूकानदार का मॉगा हुआ पैसा नहीं दे देता था। यही उसने राजा के साथ किया।

जब कई घंटे गुजर गये और राजा नहीं लौटा तो राजकुमारी ने एक और लाल अपने पति को दिया ताकि वह उससे कुछ खाना खरीद सके और उससे राजा का पता लगा सके। राजकुमार भी इत्तफाक से उसी दूकानदार की दूकान पर पहुॅच गया क्योंकि बाजार में वही एक सबसे बड़ी दूकान थी। उसने भी उससे उस लाल को खरीदने के लिये कहा।

दूकानदार बोला — "ठीक है। तुम मेरे घर चलो मैं इसके पैसे तुम्हें घर चल कर ही दूॅगा। यहॉ मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं।" सो वह राजकुमार को अपने घर ले गया और उससे जाल पर बैठने के लिये कहा। इस तरह राजकुमार भी उसके जाल में फॅस गया।

ॲधेरा हो गया था तो न तो राजा लौटा न राजकुमार ही लौटा। यह देख कर राजकुमारी ने अपने पास से तीसरा लाल निकाला और रानी को देते हुए उससे कुछ खाना खरीदने के लिये कहा। रानी उस लाल को ले कर गयी तो उसका भी वही हाल हुआ जो उसके पति और बेटे का हुआ था।

राजकुमारी ने उसका कुछ देर तो इन्तजार तो किया फिर उसको लगा कि राजा रानी और उसके पति तीनों पर कोई मुसीबत आ पड़ी है इसी लिये ऐसा हुआ। सो उसने अपने पति के कपड़े पहिने और बाजार चली। राजा रानी और अपने पति की तरह उसने भी सबसे बड़ी दूकान देखी तो वह भी उसी दूकान पर पहुँच गयी।

उसने भी दूकानदार से अपने लाल के बदले में पैसे माँगे। दूकानदार ने उससे भी वही कहा — "चलो मेरे घर चलो पैसे मैं तुम्हें वहीं दूँगा।"

घर पहुँचने पर उसने उससे भी अपने जाल वाले कमरे में घुसने के लिये कहा और कहा कि वह वहाँ उसका इन्तजार करे वह अभी पैसे ले कर आता है। कह कर दूकानदार चला गया।

पर राजकुमारी दूकानदार के लिये बहुत तेज़ थी। उसको दूकानदार की शक्ल कुछ अच्छी नहीं लगी। उसको यह भी कुछ अजीब सा ही लगा कि उसने अपनी दूकान में रोजमर्रा के लिये कुछ रुपये भी नहीं रखे थे। इसलिये वह उस कमरे में नहीं गयी।

पर जब वह वहाँ दूकानदार का इन्तजार कर रही थी तो उसने उसके फर्श में से कुछ आदमियों की आवाजें आती सुनी। उसने वे आवाजें पहचान लीं वे राजा रानी और उसके पति की आवाजें थीं वे सहायता के लिये चिल्ला रहे थे। यह सुन कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह चिल्लायी — "ओ चोर ओ खूनी तू कहाँ है?"

दूकानदार यह कहते हुए उसकी तरफ आया "क्या हुआ?"

राजकुमारी बोली — “तूने इन लोगों के साथ क्या किया है? जहाँ कहीं भी ये लोग हैं इनको यहाँ से बाहर निकाल नहीं तो मैं अभी राजा को खबर करती हूँ।”

यह सुन कर दूकानदार डर गया और उसने तुरन्त ही उन सब को छोड़ दिया। उसने उनके लाल भी वापस कर दिये जो उसने उनसे लिये थे। उसके बाद राजा रानी और राजकुमार तो चले गये पर राजकुमारी ने जो अभी भी राजकुमार के वेश में थी दूकानदार का खाने का न्यौता स्वीकार कर लिया।

राजा रानी और राजकुमार तुरन्त ही उस जगह लौटे जहाँ वे राजकुमारी को छोड़ कर गये थे पर वहाँ तो उनको राजकुमारी कहीं दिखायी नहीं दी तो राजकुमार रोते हुए बोला — “उफ़ लगता है उसके ऊपर कोई मुसीबत आ पड़ी है।”

राजा बोला — “नहीं नहीं ऐसा नहीं है। वह हम लोगों को ढूँढने गयी होगी अभी थोड़ी देर में आ जायेगी।”

पर वह थोड़ी देर में नहीं आयी। उसको राजा रानी और राजकुमार के पास लौटने में कई साल लग गये।

वह अगले दिन सुनार के यहाँ से चली और कई दिन चलने के बाद एक दूसरे राज्य में आ पहुँची। क्योंकि वह एक लड़के के वेश में थी सो उसने अपने आपको एक बनिये का लड़का बताया और अपना नाम गनपत राय रख लिया।

एक दूकानदार उसके साफ बोलने के तरीके से प्रभावित हो गया और उसको अपनी दूकान पर काम पर रख लिया। इस दूकानदार के तीन पत्नियाँ थीं पर कोई बेटा नहीं था। इसकी वजह यह थी कि जब भी उसकी किसी पत्नी ने एक बेटे को जन्म देती तो उसके अगले दिन ही एक राक्षसी आती और उसको खा जाती।

हुआ यह कि जब गनपत राय उसके यहाँ काम कर रहा था तो दूकानदार की एक पत्नी ने एक बेटे को जन्म दिया।

दूकानदार अपने बिजनैस के लिये गनपत पर काफी भरोसा करने लग गया था सो उसने उससे कहा — "मेरी इच्छा है कि तुम आज की रात मेरी पत्नी के कमरे के दरवाजे पर उसका पहरा दो ताकि वह राक्षसी वहाँ न आये और मेरा बच्चा बच जाये। वह यकीनन वहाँ आयेगी और उसको खाने की कोशिश करेगी।"

गनपत राय राजी हो गया। रात को राक्षसी आयी और कमरे का दरवाजा खोलने के लिये दौड़ी। गनपत राय चौकन्ना खड़ा था उसने तुरन्त ही उसके बाल पकड़ कर उसको नीचे गिरा दिया।

राक्षसी चिल्लायी — "मुझे छोड़ दो मुझे छोड़ दो। मैं वायदा करती हूँ कि मैं इस घर में फिर कभी नहीं आऊँगी। मुझे छोड़ दो मुझे जाने दो। लो यह रूमाल लो यह मेरे इस वायदे की निशानी है।" गनपत राय ने उससे रूमाल ले कर उसे छोड़ दिया और वह चली गयी। इस तरह गनपत राय की वजह से दूकानदार का बच्चा बच गया।

अगली सुबह जब दूकानदार ने सुना कि रात को क्या हुआ था तो वह बहुत खुश हुआ और बोला — "तुमने जो मेरी यह सेवा की है मैं तुम्हें इसका बदला कभी नहीं चुका सकता। तुम जब तक चाहो मेरे मकान में मेरे साथ रह सकते हो। मैं अपनी बहिन की शादी तुमसे कर दूँगा।"

सो दूकानदार ने अपनी बहिन की शादी गनपत राय से कर दी। कुछ दिन बाद ही गनपत राय ने दूकानदार से अपनी पत्नी के साथ अपने माता पिता के पास जाने की इच्छा प्रगट की। पहले तो दूकानदार ने आनाकानी की पर फिर राजी हो गया।

अपने देश जा कर गनपत राय ने राजा रानी और अपने पति की बहुत खोज की। आखीर में वे उसको एक गाँव में भीख माँगते मिल गये।

उन लोगों ने तो उसको नहीं पहचाना क्योंकि वह एक आदमी के कपड़े पहिने थी पर उसने उनको पहिचान लिया। एक शाम उसने अपने कपड़े पहिने और उनके पास गयी तब उन्होंने उसको तुरन्त ही पहचान लिया।

राजकुमार बोला — "प्रिये तुम कहाँ थीं?"

राजा और रानी बोले — "बेटी तुम कहाँ थीं? तुम्हें क्या हो गया था? हमको लगा कि या तो तुमको कोई बहका कर ले गया है या फिर तुम मर गयी हो। हमने तो तुम्हारे मिलने की आशा ही छोड़ दी थी।"

राजकुमार अपनी पत्नी से मिल कर और राजा रानी अपनी बहू से मिल कर बहुत खुश थे। वह रात सब लोगों ने खुशी खुशी गुजारी।

अगले दिन राजकुमारी उन तीनों को वहाँ ले गयी जहाँ वह अपनी पत्नी के साथ ठहरी हुई थी और उससे उनको मिलाया। फिर उसने उनको वह सब बताया जो उनको आजाद कराने के बाद उसके साथ घटा था।

कैसे वह दूसरे देश आयी वहाँ कैसे एक दूकानदार के यहाँ काम किया कैसे अल्लाह ने उसको अमीर बनाया फिर कैसे उसकी उस दूकानदार की बहिन से उसकी शादी हुई और कैसे वह बहुत सारे पैसे की मालकिन बन गयी।

उसके बाद उसने अपने लड़की होने का भेद दूकानदार की बहिन पर खोला और उससे इस बात पर नाराज न होने की प्रार्थना की और अपने पति से शादी करने के लिये कहा जो एक राजकुमार था और अब वहीं रह रहा था।

इस तरह से घर ठीक करने के बाद उसने अपने ससुर के बिखरे हुए सिपाहियों को इकट्ठा किया। उनको बहुत सारे पैसे दिये और उनको लड़ाई के लिये तैयार किया ताकि वे अपना राज्य वापस ले सकें। सेना में एक नया उत्साह भर गया था अब वे अपने राजा के लिये कुछ भी करने के लिये तैयार थे।

हमला बोल दिया गया लड़ाई हुई और उस विदेशी को हरा कर अपना राज्य वापस ले लिया गया। सब लोग अपने राज्य वापस लौट गये और खुशी खुशी रहे।

इसी कहानी का दूसरा रूप

एक बार की बात है कि एक राजकुमार की शादी हुई। अगले दिन उसके पिता ने उसको बुला कर कहा कि अपनी पत्नी से कहना कि राजा ने उसे सलाम भेजा है। राजकुमार ने वैसा ही किया तो राजकुमारी ने कहा "ठीक है।"

शाम को राजा ने पूछा कि राजकुमारी ने क्या जवाब दिया। जब उसे राजकुमारी का जवाब पता चला तो वह बोला — "अफसोस मैंने राजकुमार की शादी पर बेकार ही पैसा खर्च किया।"

कुछ दिन बाद राजकुमार की दोबारा शादी की गयी तो राजा ने उस राजकुमारी को भी वही सन्देश भेजा कि राजकुमारी से कहना कि राजा ने तुम्हें सलाम भेजा है। इस राजकुमारी ने भी वही कहा "ठीक है।"

जब राजा ने राजकुमारी का यह जवाब सुना तो राजा के मुँह से फिर निकला — "उफ़ मैंने राजकुमार की शादी पर बेकार ही पैसा खर्च किया।"

कुछ समय बाद राजा ने राजकुमार की तीसरी शादी की तो राजा ने उस राजकुमारी को भी वही सन्देश भेजा कि राजकुमारी से कहना कि राजा ने तुम्हें सलाम भेजा है।

यह राजकुमारी थोड़ी सी शर्मीली और भले घर की थी। राजा का यह सन्देश सुन कर वह अपने पति से बोली कि वह राजा को जा कर यह कहे — "मैं उनकी क्या लगती हूँ जो उन्होंने मुझे देखा और सलाम भेजा।"

उसने ऐसा इसलिये कहा क्योंकि न तो वह राजा की बेइज़्ज़ती करना चाहती थी और न ही उसे वह करना ठीक लगा जैसा कि पहिली दोनों राजकुमारियों ने किया था।

राजकुमारी का यह जवाब सुन कर राजा बहुत खुश हुआ। उसने राजकुमार से कहा — "तुम्हारी यह पत्नी बहुत अच्छी और समझदार है। तुम्हारी इस शादी पर मैंने अपना पैसा बेकार खर्च नहीं किया।

राजकुमार की इस तीसरी शादी के कुछ साल बाद एक दूसरे ताकतवर राजा ने उनके राज्य पर हमला किया और उनका राज्य जीत लिया इससे राजा को अपन राज्य छोड़ कर भाग जाना पड़ा। शाही घराना तितर बितर हो गया। राजा रानी और राजकुमार किसी दूसरे एक देश भाग गये और तीनों राजकुमारियॉ अपने अपने मायके चली गयीं।

देश छोड़ने से पहले सबसे छोटी राजकुमारी ने सात रोटियॉ बनायीं। उनमें हर एक रोटी में उसने एक एक लाल रखा और अपने साथ ले गयी।

घूमते घूमते राजा रानी और राजकुमार उस देश में आ निकले जिसमे सबसे छोटी राजकुमारी रहती थी। किसी तरह से राजकुमारी ने उन्हें देख लिया और अपने घर बुला लिया। उन्होंने राजकुमारी को सब कुछ बताया कि जबसे उन्होंने देश छोड़ा उन पर क्या क्या बीती।

राजकुमारी को उन पर दया आ गयी तो उसने राजा को एक रोटी दी और कहा — "यह रोटी तो बहुत पुरानी है पर इसके बीच में एक लाल रखा है। इसको बाजार में बेच कर आप अपने लिये जरूरत का सामान खरीद लें।"

राजा ने राजकुमारी को धन्यवाद दिया और तुरन्त ही उस लाल को बेचने के लिये बाजार चल दिया। वह बाजार की सबसे बड़ी दूकान पर गया और वहॉ उससे लाल खरीदने के लिये कहा।

दूकानदार उस लाल की सारी कीमत देने में सकपकाया तो राजा ने कहा कि ठीक है अगर तुम अभी मुझे इसके पूरे पैसे नहीं दे सकते तो न सही मुझे कुछ पैसे दे दो बाकी पैसे मैं कल आ कर ले जाऊॅगा।

दूकानदार ने उसको कुछ पैसे दे दिये और राजा से अगले दिन आने के लिये कहा। अगले दिन जब राजा अपने बाकी के पैसे लेने

उसकी दूकान पर गया तो दूकानदार ने उसको डॉट पिलायी — "कैसे पैसे किसके पैसे। चले जाओ यहाँ से। बेकार की बातों में मेरा समय बर्बाद मत करो।

बहुत सारे लोगों ने इसी तरह से मेरा समय बर्बाद किया है जैसे कि तुम कर रहे हो। वे सोचते थे कि इस तरीके से वे मुझे धोखा दे लेंगे पर मैं धोखा खाने वाला नहीं था।

पर हममें से कुछ की याद बहुत अच्छी है। तुमने मुझे लाल बेचा ही कब? तुम जैसे गरीब आदमी के पास लाल आया ही कहाँ से? मैं तो तुम्हें जानता तक नहीं। चले जाओ यहाँ से वरना मैं तुम्हें जबरदस्ती बाहर निकलवा दूँगा।"

राजा ने देखा कि वह उससे बाकी का पैसा नहीं निकलवा सकता था सो वह वहाँ से चला आया। अब इस जवाब के साथ मैं रानी राजकुमार और राजकुमारी के पास कैसे जाऊँ वे तो मेरे ऊपर विश्वास ही नहीं करेंगे। बजाय इसके कि वे मेरे ऊपर शक करें और फिर मैं उनको सफाई दूँ अच्छा हो कि मैं महल से भाग जाऊँ और कहीं और जा कर अकेला ही रहूँ।

यही सोच कर राजा वहाँ से महल न जा कर एक जंगल में चला गया और अपने बुरे भाग्य को कोसता रहा।

कई घंटे बीत जाने के बाद भी जब राजा घर वापस न लौटा तब राजकुमारी ने एक और रोटी निकाली और उसे अपने पति को देते हुए कहा कि यह रोटी तो बहुत पुरानी है पर इसके अन्दर एक

लाल है वह उसको ले जा कर बाजार में बेच दे और उन पैसों से अपनी जरूरत का सामान खरीद ले।

राजकुमार ने रोटी ली उसमें से लाल निकाला और उसे बाजार में बेचने चल दिया। वह भी उसी दूकान वाले के पास पहुँचा जिसके पास उसके पिता गये थे। उसने भी उस नीच के हाथों धोखा खाया और अपने पिता की तरह महल वापस न जा कर कहीं अकेले ही ज़िन्दगी गुजारने का फैसला किया।

इत्तफाक से वह भी उसी जंगल में चला गया जहाँ उसके पिता गये थे। वहाँ जा कर उसको उसके पिता मिल गये। उसने उनको अपनी कहानी बतायी तो पता चला कि उसके पिता के साथ भी वैसा ही हुआ था।

जब कुछ हफ्ते गुजर गये और राजा और राजकुमार का कोई अता पता न चला तो राजकुमारी ने सोचा कि उसके ससुर और उसके पति उसको छोड़ कर चले गये हैं। उसने एक और रोटी निकाली और रानी को दे कर कहा कि रोटी तो बहुत पुरानी है पर इसमें एक लाल ही जिसको बेच कर कुछ पैसा मिल सकता है। सो वह उसे बाजार में बेच कर उसका पैसा बना ले।

इत्तफाक से वह भी उसी दूकानदार के पास पहुँच गयी और उसके साथ भी वही हुआ जो राजा और राजकुमार के साथ हुआ था। उसने भी यही सोचा कि वह अब बिना लाल के या बिना पैसे

के राजकुमारी के पास कैसे जाये सो वह भी जंगल में अकेली रहने चली गयी जहाँ उसको उसका पति और बेटा मिल गये।

वहाँ जा कर उसने भी उनको अपनी कहानी सुनायी तो वह भी वैसी ही थी जैसी कि उन दोनों के साथ हुई थी।

राजकुमारी ने रानी का कई दिनों तक इन्तजार किया फिर एक आदमी का वेश बना कर वह अपने पिता के घोड़े पर उन सबकी खोज में चल दी। वह रास्ते में सबसे पूछती जाती कि क्या उन्होंने किसी भिखारी को देखा है पर कहीं से उसको कोई सन्तोषजनक जवाब नहीं मिला।

वह चलती गयी चलती गयी कि वह एक दूसरे देश में आ निकली। वहाँ का राजा अपने महल के बरामदे में टहल रहा था कि उसने उस नौजवान सवार को देखा। उसने उसको बुला कर पूछा कि क्या वह उनके महल में काम करना चाहेगा।

वह तैयार हो गया और तुरन्त ही उसको महल में कुछ खास कामों के लिये लगा लिया गया। उसकी चतुराई और अक्लमन्दी से राजा बहुत प्रभावित हुआ। वह उसको अक्सर उससे अपने सभी मामलों में सलाह लिया करता था।

जब वह महल में रह रही थी तो उस शहर में एक बहुत बड़ा अजगर आया और उसने कई लोगों को मार दिया। कोई भी आदमी अपने घर के दरवाजे से बहुत दूर जाने से डरता था। राजा से ले कर नीचे से नीचे आदमी तक को उसके काटने का खतरा था।

राजा बहुत दुखी था सो ऐसे समय में उसको अपने सलाहकार की याद आयी सो उसने राजकुमारी को बुला भेजा और उससे पूछा कि ऐसी हालत में उसको क्या करना चाहिये। राजकुमारी तुरन्त बोली — "मैं उस जानवर को मार देता हूँ।"

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ उसने कहा — "जाओ और अगर तुमने उसे मार दिया तो मैं अपनी बेटी की शादी तुमसे कर दूँगा।"

राजकुमारी गयी और उसने अजगर को मार दिया। जैसे ही वह इस अच्छी खबर के साथ महल लौटी राजा ने अपनी बेटी की शादी उसके साथ कर दी। राजकुमारी ने कहा कि वह यह सब अपने पीर साहब की सलाह पर करने के लिये तैयार हुई थी सो उसको और उसकी पत्नी को अलग अलग महलों में रखा जाये।

जो घर राजकुमारी को दिया गया था वह एक चौराहे के एक कोने पर था। कभी कभी जब उसके पास कुछ काम करने के लिये नहीं होता था तो वह अपनी छज्जे पर बैठ जाती और बाहर आते जाते लोगों को देखती रहती।

एक दिन उसने रास्ते पर राजा रानी और अपने पति को जाते देखा तो वह तो भौंचक्की रह गयी। उसने उनको आवाज लगा कर पूछा कि वे कौन थे कहाँ जा रहे थे और वहाँ क्या कर रहे थे।

उन्होंने देखा कि लड़का कुछ दयालु है सो उन्होंने उसको सब कुछ बता दिया। उसने उनको अन्दर बुला लिया और बताया कि

वह कौन थी। उसने कहा — "देखिये मैं आपकी बहू हूँ। मुझे नहीं मालूम कि आपके ऊपर क्या गुजरी सो मैंने अपना वेश बदला और आप लोगों की खोज में निकल पड़ी।

भगवान का लाख लाख धन्यवाद है कि आप लोग मुझे मिल गये। आप यहाँ शाम तक इन्तजार करें तब मैं आपके साथ चलूँगी। हम सब उस नीच दूकानदार के पास चलेंगे। उसको इसकी सजा मिलनी ही चाहिये और हमारा सामान हमको वापस मिलना ही चाहिये।"

उस शाम को राजकुमारी राजा रानी और राजकुमार के साथ उस दूकानदार की तरफ चल दी। जल्दी ही वे उसके घर पहुँच गये और उसको इतने ज़ोर की धमकी दी कि उसने राजा की सजा से डर कर अपनी सारी चीज़ें बेच कर उनका सामान उनको लौटा दिया।

उसके बाद राजकुमारी ने उस राजा के पास सब बातों को समझा कर सन्देश भेजा जिसकी बेटी से उसने शादी की थी कि उसको माफ कर दिया जाये और वह अपनी बेटी की शादी अब उसके पति राजकुमार से कर दे।

राजा राजी हो गया। उसने अपनी बेटी की शादी राजकुमार से कर दी। फिर उसने राजकुमारी के ससुर को बहुत सारी सहायता दी जिससे उन्होंने अपना राज्य फिर से पा लिया और फिर चारों तरफ शान्ति ही शान्ति रही।

11 एक राजकुमार जिसको भैंसा बना दिया[39]

एक बार की बात है कि एक देश में एक राजा रहता था जिसके सोलह सौ रानियाँ थीं पर उनसे उसके बेटा केवल एक ही था। उसका यह बेटा बहुत सुन्दर था। राजा अपने इस बेटे की शादी किसी ऐसी राजकुमारी से करना चाहता था जो उसके बेटे जैसी ही सुन्दर हो।

इत्तफाक से एक और राजा था। उसके भी सोलह सौ रानियाँ थीं और एक बेटी थी। वह भी उसके राजकुमार जितनी ही सुन्दर थी। उस राजा की भी उतनी ही इज़्ज़त थी जितनी इसकी।

जिस राजा के लड़का था उस राजा के पास एक बहुत ही अक्लमन्द और वफादार तोता था। राजा उससे बहुत सारे मामलों में सलाह लिया करता था और उसकी सलाह वह मानता भी था। बड़ी बड़ी मुश्किल समस्याओं में वह उसकी सलाह लेता था।

यही सोच कर इस समय भी उसने अपने तोते को बुलाया और उसको अपनी इच्छा बतायी। उसने उससे जाने के लिये कहा और वैसी ही बहू ढूँढने के लिये कहा जैसी वह अपने बेटे के लिये चाहता था।

---

[39] The Prince Who Was Changed into a Ram (Tale No 11)

तोता राजी हो गया। उसने राजा से कहा कि वह राजकुमार की पसन्द लिख कर उसके पैर में बाँध दे। राजा ने वैसा ही किया और वह वहाँ से उड़ चला।

वह एक पड़ोसी देश में पहुँचा जहाँ बहुत भारी बारिश हो रही थी सो उसको एक जंगल में शरण लेनी पड़ी। उसको एक पुराना खोखला पेड़ मिल गया जहाँ उसको लगा कि वह जगह उसके आराम के लिये ठीक रहेगी।

जैसे ही वह उसके अन्दर जाने के लिये उड़ा तो उसके अन्दर से एक आवाज आयी — "तुम अन्दर नहीं घुसना नहीं तो तुम अन्धे हो जाओगे।" सो तोता पेड़ के जड़ के पास एक टहनी उग रही थी उस पर जा कर बैठ गया और बारिश खत्म होने का इन्तजार करने लगा।

इतने में उस खोखली जगह में से एक मैना निकली और आ कर तोते के पास बैठ गयी। दोनों बहुत देर तक बात करते रहे। इस बीच तोते ने उसको बताया कि वह कहाँ जा रहा था। जैसा कि हम आगे चल कर देखेंगे उनकी यह मुलाकात बहुत अच्छी रही।

मैना उस राजकुमारी के लिये जो अपने पिता की अकेली बेटी थी बहुत सुन्दर राजकुमार की तलाश में थी। इस राजा के भी सोलह सौ रानियाँ थीं। तोता बोला तब तो हमारा राजा ही वह राजा होना

चाहिये जिसके बेटे से उस राजकुमारी की शादी होनी चाहिये। तोते ने मैना को राजकुमार की पसन्द भी बतायी।

सो वे दोनों राजकुमारी के देश गये। जब वे वहाँ पहुँचे तो महल के एक नौकर ने उनको देखा तो राजा को जा कर बताया कि जिस मैना पर वह बहुत विश्वास करता था वह तो एक तोते के साथ घूम रही है और राजा के हुक्म को तो बिल्कुल भूल ही गयी है।

जब राजा ने यह सुना तो उसने दोनों चिड़ियों को मारने का हुक्म दे दिया। महल के नौकर मैना से जलते थे इसी लिये उन्होंने मैना की बुराई राजा से कर दी थी।

मैना को इस बात का कुछ कुछ पता चल गया था सो वह ऊपर की खिड़की से उड़ी। उड़ते समय उसने राजा का बेरहम हुक्म सुन लिया था।

वह तोते से बोली — "आओ राजा ने हमारे ऊपर झूठा इलजाम लगा कर हमको मारने का हुक्म दे दिया है। इससे पहिले कि राजा के तीर हमको मारें चलो हम यहाँ से दूर भाग चलें।" और वे दोनों वहाँ से दूर उड़ गये।

राजा के नौकर उनको मारने गये तो बहुत देर तक ढूँढने पर भी उनको न पा सके तो अपने आपको यह तसल्ली देते हुए वापस आ गये कि लगता है कि उन चिड़ियों को शाही हुक्म का पता चल गया इसलिये वे किसी सुरक्षित जगह चली गयी हैं।

तोता और मैना ने कुछ दिन तक इन्तजार किया ताकि लोग उस बात को भूल जायें फिर उसके बाद वे महल वापस आये और आ कर तोता राजा के दॉये घुटने पर और मैना राजा के बॉये घुटने पर जा कर बैठ गये।

उन्होंने राजा से पूछा — "आप हमको क्यों मारना चाह रहे थे? हम तो आपके वफादार हैं। वे लोग हमसे जलते हैं इसी लिये उन्होंने आपसे हमारी बुराई की। हम लोग दोनों बड़ी शान वाले उन राजाओं के नौकर हैं जो अक्लमन्द भी हैं और अमीर भी।

दोनों राजाओं के सोलह सोलह सौ रानियॉ है। उनमें से एक के केवल एक बेटा है और दूसरे के केवल एक बेटी है। इन दोनों राजाओं ने हालॉकि एक दूसरे को कभी देखा नहीं है पर ये दोनों अपने बच्चों की एक दूसरे के बच्चों से शादी करना चाहते हैं।

एक राजा को ऐसी ही बहू चाहिये जैसी दूसरे राजा की बेटी है और दूसरे राजा को वैसा ही दामाद चाहिये जैसा कि दूसरे राजा का बेटा है। देखिये हम दोनों उन्हीं दोनों राजाओं के नौकर हैं। भगवान की कृपा से हम लोग आपके राज्य के बाहर एक जंगल में मिले थे और अब यह अच्छी खबर ले कर आपके पास आये हैं।"

यह कह कर तोते ने अपना पैर राजा की तरफ बढ़ा दिया जिसमें राजकुमार की पसन्द लिखी हुई थी। वह सब पढ़ कर राजा को आश्चर्य भी हुआ और खुशी भी। पहले तो उसको चिड़ियों पर

विश्वास ही नहीं हुआ फिर दोनों का एकसापन देख कर उसे उन पर विश्वास हो गया।

उसने तस्वीर ले कर अपने शाही जनानखाने[40] में भेज दी और अपनी सोलह सौ पत्नियों से कहा कि वे उस तस्वीर को देख कर बतायें कि वह अपनी राजकुमारी के लिये उस राजकुमार को पसन्द करती हैं या नहीं।

कुछ दिन बीत गये पर तस्वीर वापस नहीं आयी। राजकुमारी को तो वह तस्वीर इतनी पसन्द आयी कि वह उसको अपने हाथ में ही लिये रखती। खैर कुछ दिन बाद जनानखाने से जवाब आया कि राजकुमार सबको बहुत पसन्द है। अब उसकी शादी जल्दी ही हो जानी चाहिये क्योंकि राजकुमारी तो राजकुमार को देखे बिना जी ही नहीं पा रही है।

जैसे ही यह जवाब राजा के पास पहुँचा तो राजा ने तोते को यह कह कर वापस भेज दिया कि वह अपने मालिक से कह दे कि राजकुमार की मनपसन्द लड़की मिल गयी है और वे चार महीने के अन्दर अन्दर शादी के लिये यहाँ आ जायें।

तोते ने आदर के साथ राजा को झुक कर नमस्कार किया और अपने देश उड़ गया। अपने देश पहुँच कर उसने राजा को अपनी यात्रा की सफलता के बारे में बताया। राजा यह सुन कर बहुत खुश

[40] Used for "Harem" or "Royal Household" where queens live.

हुआ। उसने तुरन्त ही इस शानदार मौके को शानदार तरीके से मनाने का हुक्म दे दिया।

राजकुमार के लिये सबसे कीमती और बढ़िया कपड़े बनवाये गये। घोड़ों के लिये बहुत शानदार जीन बनवायी गयीं। सिपाहियों की भी नयी और बढ़िया यूनीफार्म बनवायी गयी। बहुत सारे तरह की भेंटें जैसे अनमोल हीरे जवाहरात बढ़िया कपड़े मुश्किल से मिलने वाले फल कीमती मसाले और बढ़िया किस्म के इत्र इकट्ठा किये गये। हर चीज़ को याद कर कर के इकट्ठा किया गया।

महीने जल्दी ही गुजर गये। इतनी तैयारियों में समय कब निकल गया पता ही नहीं चला।

पर अफसोस शादी के कुछ दिन पहले ही राजकुमार का पिता बीमार पड़ा और मर गया। परिवार वालों के लिये यह एक बहुत बड़ा धक्का था। राजकुमार को अपना जाना टालना पड़ा क्योंकि ऐसे समय पर वहाँ से चलना उसका अपने पिता का अपमान करना दिखाता था सो उसने कुछ समय तक इन्तजार किया।

जैसे ही उसके पिता की मौत का अफसोस का समय बीता वह वहाँ से चल दिया। तोते ने उसको रास्ता दिखाया। राजकुमारी के देश कोई बहुत दूर नहीं था सो वे जल्दी ही वहाँ पहुँच गये। राजकुमार ने अपने डेरे महल के पास वाले बागीचे में डाल दिये।

अगर राजकुमार उस बागीचे में न घुसा होता तो अच्छा होता क्योंकि वहाँ उसका तोता मर गया। उस वफादार चिड़िया को वहाँ

के माली ने मार डाला क्योंकि वह कुछ खजूर तोड़ कर राजकुमार की तरफ फेंक रहा था।

जैसे ही राजकुमार के ऊपर यह मुसीबत आयी उसके कुछ देर बाद ही उसने सुना कि राजकुमारी के पिता ने अपनी बेटी की शादी उससे करने से इनकार कर दिया क्योंकि उसका पिता मर गया था।

बागीचे में डेरा डालने के कुछ दिन बाद ही राजकुमारी बाहर सैर करने के लिये अपनी पालकी में जा रही थी कि इत्तफाक से वह उसी रास्ते से गुजरी जिस रास्ते पर वह बागीचा था। उसने बागीचे पर नजर डाली तो वहाँ राजकुमार को देखा तो वह उसे पहचान गयी क्योंकि उसकी तस्वीर अभी भी उसके पास थी।

उसने उस समय तो उससे कुछ नहीं कहा और अपनी पालकी ढोने वाले कहारों को वापस महल चलने के लिये कहा। उसको अपना प्रेमी मिल गया था। उसी समय से उसको सब कुछ बहुत अच्छा लगने लगा।

शाम को खाने के समय उसने अपने खाने में से आधा खाना खाया और बचा हुआ आधा खाना राजकुमार की तस्वीर के साथ राजकुमार को भेज दिया। उसने अपनी नौकरानी से कहा कि वह राजकुमार से कहे कि वह उसे खा ले और अगर वह न खाये तो उसमें अपनी उँगली घुसा दे।

नौकरानी ने वैसा ही किया। राजकुमार ने खाना नहीं खाया तो नौकरानी ने उसको खाने की प्लेट में उँगली घुसाने के लिये कहा।

जब उसने प्लेट में रखे चावल में अपनी उँगली घुसायी तो वहाँ उसको अपनी तस्वीर मिली।

उसने सोचा कि राजकुमारी तो मुझे प्यार करती है। ऐसा सोच कर उसने अपने हाथ पोंछे एक चिट्ठी राजकुमारी के नाम लिखी और उसे नौकरानी को दे कर वापस भेज दिया।

जब राजकुमारी ने वह चिट्ठी पढ़ी तो उसके मन में राजकुमार से मिलने की इच्छा ने जोर पकड़ लिया। उसने आधी रात को अपना घोड़ा तैयार करवाया अशर्फियों[41] से भरा एक थैला लिया और उस बागीचे की तरफ चल दी जहाँ राजकुमार ठहरा हुआ था।

राजकुमार तो उसको देख कर आश्चर्य में पड़ गया। राजकुमारी बोली — "तुम आश्चर्य में मत पड़ो मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूँ और इसी लिये मैं छिप कर तुम्हारे पास आयी हूँ। मेरे पिता तुमसे मेरी शादी की इजाज़त नहीं देंगे। चलो अपना घोड़ा तैयार कर लो और मुझे अपने साथ अपने देश ले चलो। वहाँ हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा।"

सो दोनों घोड़ों पर सवार हो कर राज्य से बाहर की तरफ चल दिये। कुछ घंटों तक तो वे काफी तेज़ी से चले पर फिर एक पेड़ के नीचे आराम करने के लिये लेट गये।

अगले दिन सुबह तरोताजा हो कर वे फिर से अपनी यात्रा पर चल दिये।

[41] Gold coins

वे लोग बहुत दूर नहीं गये थे कि उनको घोड़े पर सवार सात डाकू मिल गये। राजकुमार बोला — "चलो हम तेज़ी से भाग चलते हैं क्योंकि हम इनसे लड़ नहीं सकते।"

सो दोनों ने अपने अपने घोड़ों को एड़ लगायी और उनको भगा दिया पर डाकू भी घुड़सवारी में होशियार थे और उनके घोड़े अभी अभी निकले थे थके नहीं थे सो वे भी उनके पीछे पीछे भाग लिये।

राजकुमार बोला — "इस तरह भागने से कोई फायदा नहीं है। वे हमारे पास ही आ रहे हैं। अब हम क्या करें?"

राजकुमारी बोली — "तब हमें उनका डट कर मुकाबला करना चाहिये।" कह कर वह अपनी जीन पर बैठी बैठी ही पीछे की तरफ मुड़ गयी और एक तीर उन डाकुओं पर चलाया। फिर दूसरा फिर तीसरा और इस तरह से उसने सात तीर चला कर सातों डाकुओं को मार डाला। खुशी खुशी वे अपनी यात्रा पर फिर से आगे बढ़ चले।

उस रात वे आराम करने के लिये एक गाँव में रुके। उस गाँव में एक जिन्न रहता था। जिन्न के एक बेटा था जिसका केवल आधा शरीर था। इसी गाँव में राजकुमार और राजकुमारी एक तालाब के किनारे रुक गये।

जब वे सो रहे थे तो जिन्न ने अपने बेटे से कहा — "तुम जल्दी से जाओ और राजकुमार को तो मार डालो और राजकुमारी घोड़े और खजाने को यहाँ ले आओ।"

बेटा यह सुन कर बहुत खुश हुआ कि अब उसको खून पीने को मिलेगा। बस उसने अपना काम खत्म किया ही था कि राजकुमारी जाग गयी। उसने चारों तरफ देखा तो उसको अपना प्रेमी मरा पड़ा दिखायी दिया और एक बदसूरत आधा आदमी उसकी लाश के पास खड़ा था। यह सब देख कर वह डर गयी।

फिर भी वह हँस कर बोली — "अच्छा हुआ तुमने उसे मार दिया। अब तुम मुझे अपने साथ ले चलो और मुझसे शादी कर लो। पर पहले इस मरे हुए शरीर को कहीं गाड़ दो तब हम यहाँ से जायेंगे।"

तुरन्त ही एक कब्र खोदी गयी। उस आधे आदमी ने राजकुमारी को उसे देखने के लिये बुलाया तो उसने कहा — "अरे यह तो बहुत छोटी है थोड़ी और गहरी खोदो।"

जिन्न के बेटे ने वह कब्र एक फुट गहरी और खोद दी। राजकुमारी बोली — "यह तो अभी भी छोटी है।"

जिन्न के बेटे ने कब्र और चौड़ी और और गहरी खोद दी। जब वह यह कर रहा था कि राजकुमारी ने उसकी तलवार निकाल ली और उसकी गर्दन उसके धड़ से अलग कर दी।

अपना बदला लेने के बाद वह फफक फफक कर रो पड़ी। उसका प्रेमी तो मर चुका था। उसने उसकी लाश ली और उसको तालाब के किनारे तक ले गयी। अब वह वहाँ बैठ कर रोने लगी।

यह उसके लिये बड़े दुख का समय था। उसको लगा कि वह भी मर जाती तो अच्छा था।

जब वह वहॉ बैठी रो रही थी तो इत्तफाक से वहॉ से एक साधु की पत्नी गुजरी। उसको बहुत दुखी देख कर वह उसके पास रुकी और उससे पूछा कि क्या बात थी वह क्यों रो रही थी। राजकुमारी ने राजकुमार की लाश की तरफ इशारा करते हुए उसे बताया कि वह क्यों रो रही थी।

स्त्री बोली — "बेटी धीरज रखो शायद मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकूँ। तुम तब तक यहीं इन्तजार करो जब तक मैं वापस लौट कर आती हूँ।" कह कर वह वहॉ से चली गयी।

घर जा कर उस स्त्री ने अपने पति को राजकुमारी का सारा हाल बताया और उससे राजकुमार को ज़िन्दा कर देने की प्रार्थना की। साधु बोला — "अफसोस। वह जगह तो शैतान औरत और उसके भयानक बेटे की है। मैं अभी राजकुमारी के पास जाता हूँ और उसको तसल्ली देने के लिये राजकुमार को ज़िन्दा करता हूँ।"

साधु तुरन्त ही राजकुमारी के पास गया तो वह तो सहायता का इन्तजार ही कर रही थी जो साधु की पत्नी उससे वायदा करके गयी थी। साधु बोला — "मुझे तुम्हारे बारे में सब पता चल चुका है और मैं तुम्हारी सहायता करने के लिये आया हूँ। मैं तुम्हारा राजकुमार तुमको वापस कर दूँगा।"

उसने राजकुमार की लाश का सिर अपने एक हाथ में लिया और उसका शरीर दूसरे हाथ में लिया और दोनों को जोड़ दिया। दोनों जुड़ गये तो लाश ज़िन्दा हो गयी। पहले उसके हाथ पैर हिले फिर उसने ऑखें खोलीं फिर होठ खोले और वह बोल पड़ा।

जब राजकुमारी ने यह देखा तो उससे न रहा गया वह दौड़ कर राजकुमार के गले लग गयी और खुशी को मारे रो पड़ी। सबके लिये यह बहुत ही खुशी का मौका था यहॉ तक कि उस साधु के लिये भी जिसने उसको ज़िन्दा किया था।

उस रात राजकुमार और राजकुमारी किसी दूसरी जगह चले गये। यहॉ राजकुमारी की जान बहुत बड़े खतरे में थी। इस जगह एक जादूगरनी रहती थी। उसके एक बेटी थी। जैसे ही उसकी बेटी ने राजकुमार को देखा तो वह उससे प्रेम कर बैठी और उससे शादी करनी चाही।

इसके लिये उसने एक तरकीब सोची। उसने अपनी मॉ से राजकुमार और राजकुमारी को अपने घर खाने के लिये बुलाने के लिये कहा। जादूगरनी ने उनको अपने घर खाने के लिये बुलाया। जब राजकुमार उनके घर के कमरे देख रहा था तो जादूगरनी ने उसके गले में रस्सी का फन्दा डाला और उसको एक भैंसे में बदल दिया।

सारा दिन वह भैंसा जादूगरनी की बेटी के पीछे पीछे घूमता रहा। जहॉ वह जाती वह उसके पीछे जाता। रात को वह उसके

गले से रस्सी का फन्दा निकाल लेती तो वह राजकुमार बन जाता और उसके साथ सोता।

इस तरह कई दिन बीत गये। राजकुमारी बहुत दुखी थी। उसको पता ही नहीं था कि वह क्या करे। कभी वह सोचती कि राजकुमार ने उसको छोड़ दिया है। कभी वह सोचती कि शायद उसका कत्ल हो गया है।

जब वह और न सह सकी तो उसने एक आदमी का रूप रखा और उस देश के राजा के पास गयी और उससे कोई काम माँगा। राजा उसकी शक्ल सूरत और बोलने के ढंग से बहुत प्रभावित हुआ तो उसने उसको अपना डिप्टी इन्सपैक्टर आफ पुलिस यानी कोतवाल रख लिया।

इस कोतवाल को बहुत सारे घरों के बहुत सारे भेद मालूम थे। उसके नीचे बहुत तेज़ और कोई भी काम करने के लिये तुरन्त तैयार सिपाही काम करते थे।

कोतवाल को केवल आदमी की ऊँचाई और उसकी शक्ल सूरत बतानी होती थी और उसको उसे ढूँढने के लिये कहना होता था। बस सारा राज्य तब तक छान मारा जाता जब तक कि वह आदमी मिलता।

पर राजकुमारी को राजकुमार के बारे में कुछ पता न चल सका हालाँकि उसको यह पता चल गया कि जिस घर में वह और राजकुमार ठहरे थे वह घर एक जादूगरनी का था। वह उसके घर

बार बार गयी। वहाँ उसने एक भैंसा इधर उधर घूमता हुआ देखा तो पर उसको यह पता न चल सका कि वह उसका अपना प्यारा राजकुमार था और उस जादूगरनी ने उसको भैंसे में बदल दिया था।

धीरे धीरे इस कोतवाल और जादूगरनी की बेटी में दोस्ती बढ़ती गयी। जादूगरनी की बेटी ने सोचा कि यह कोतवाल सचमुच में आदमी था जबकि वह तो आदमी के वेश में राजकुमारी थी।

वह कोतवाल को चाहने लगी और उसने उसको कई भेंटें दीं। इन भेंटों में एक ऐसा कपड़ा भी था जैसा पहले कभी किसी ने नहीं देखा था। राजकुमारी ने यह कपड़ा ला कर अपनी एक खिड़की में टॉग लिया। अभी हम देखेंगे कि यह कपड़ा राजकुमारी के भविष्य के लिये क्या करने वाला है।

एक सुबह महल का एक नौकर उस खिड़की के नीचे से गुजरा जिसमें कोतवाल ने अपना यह कपड़ा टॉग रखा था। वह नौकर उस कपड़े के रंग और उसकी बनावट देख कर दंग रह गया। घर आ कर वह रानी से मिलने गया और जो कुछ उसने देखा था वह सब उसको बताया।

रानी को भी उस सुन्दर कपड़े को देखने की इच्छा हो आयी सो उसने राजा से प्रार्थना की कि वह उस कोतवाल को बुलाये और उसमें से कुछ कपड़ा उसके लिये मॅगवा कर दे।

राजा ने ऐसा ही किया तो कोतवाल ने उसको वह सारा का सारा कपड़ा ही भेज दिया जो उसके पास था। जब रानी ने उसको

देखा तो वह उसको इतना अच्छा लगा कि उसने राजा से कहा कि वह कोतवाल से कहे कि वह उसको वैसा ही कपड़ा और ला कर दे।

जब राजा ने रानी का हुक्म कोतवाल को सुनाया तो उसने कहा कि यह काम ज़रा मुश्किल है पर वह अपनी पूरी कोशिश करेगा।

राजा के महल से वह सीधे जादूगरनी के घर गया और उससे वैसा ही कपड़ा और माँगा। जादूगरनी ने कहा कि अफसोस वह इसमें उसकी कोई सहायता नहीं कर सकती। उसका एक भाई है वह भी जादूगर है। बहुत दिनों पहले वह किसी दूर देश चला गया था वहीं से उसने उसको यह कपड़ा भेजा था।

कोतवाल ने कहा कि वह अपने भाई को लिखे कि वह वैसा ही कपड़ा और भेज दे।

जादूगरनी ने कहा कि वह यह नहीं कर सकती क्योंकि जहाँ वह गया है वहाँ के सारे आदमियों को उसने खा लिया है और अब वहाँ उसके और शेरों के अलावा और कोई नहीं रहता। इन शेरों को भी वह एक तरह की घास खिला कर आधा भूखा रखता है। हालाँकि वे उस घास को खाना पसन्द नहीं करते।

इस तरह से जो कोई भी वहाँ जाता है कोई भी शेर या तो किसी झाड़ी में से निकल आता है या फिर किसी चट्टान के पीछे से निकल आता है और आने वाले को खा जाता है। इस तरह से वहाँ कई लोगों की जानें जा चुकी हैं। ऐसे में मैं किसी को वहाँ कैसे भेज

सकती हूँ। ऐसे खतरे वाले काम के लिये मैं वहाँ किसी को नहीं भेज सकती।

कोतवाल बोला — "अच्छा तो तुम मुझे बस यह बता दो कि तुम्हारा भाई कहाँ रहता है। मैं वहाँ जाऊँगा और उससे कपड़ा ले कर आऊँगा। क्योंकि मुझे तो उसके पास जाना ही है नहीं तो राजा मेरी जान ले लेगा।

जब तक कि मैं वह कपड़ा ले कर नहीं आता मैं तो यहाँ भी सुरक्षित नहीं हूँ। इसलिये तुम मुझे बताओ कि तुम्हारा भाई कहाँ रहता है मैं उसके पास जा कर उससे मिलूँगा और कपड़ा ले कर आऊँगा।"

जादूगरनी बोली — "ठहरो अगर तुम्हारी यह हालत है तो मैं तुम्हारी सहायता अवश्य करूँगी। मेरे पास मिट्टी का एक छोटा सा बर्तन है जिससे मेरे भाई की ज़िन्दगी बँधी है।

जब तक यह बर्तन मेरे पास सुरक्षित है तब तक मेरा भाई भी सुरक्षित है पर जैसे ही यह बर्तन टूटेगा तो मेरा भाई मर जायेगा। मैं अपनी बेटी की खातिर इस बर्तन को तोड़ दूँगी क्योंकि मेरी बेटी तुमको बहुत प्यार करती है।"

ऐसा कह कर उसने मिट्टी का वह बर्तन जमीन पर मार कर तोड़ दिया और बोली — "जाओ अब तुम निडर हो कर जाओ अब तुम्हें कोई डर नहीं है। वहाँ के शेर अब चाहे घास खायें या कुछ और

पर अब वे हर उस आदमी को नहीं खायेंगे जो वहाँ जायेगा। जाओ भगवान तुम्हें सुखी और धनवान बनाये।"

जादूगरनी ने तो यह सोचा ही नहीं था कि यह कोतवाल राजकुमारी है – उस राजकुमार की होने वाली पत्नी जिसको उसने भैंसा बना कर रखा हुआ है।

अगली सुबह राजकुमारी ने थोड़े से सिपाही लिये राजा से जाने की इजाज़त माँगी और अपने काम पर चल दी। उस देश में पहुँच कर उसने तुरन्त ही जादूगर का घर ढूँढा जो उसे जल्दी ही मिल गया। उसके घर में वैसे कपड़ों के बहुत सारे ढेर लगे हुए थे।

इनके अलावा वहाँ और भी बहुत सारा खजाना था। राजकुमारी ने उसका वह सारा कपड़ा और खजाना लिया और राजा के महल की तरफ लौट चली। राजा उसके इस काम से इतना खुश हुआ कि उसने उसको बहुत सारी भेंटें दीं और उसको अपना वारिस घोषित कर दिया।

कुछ साल गुजर गये। राजा मर गया। अब वह कोतवाल उस राज्य पर राज कर रहा था। उसको कुछ कुछ पता चल गया था कि राजकुमार को क्या हुआ था सो उसने अपने राज्य भर के सारे भैंसों को अपने सामने पेश होने का हुक्म दिया।

सारे भैंसे एक जगह आ कर इकट्ठे हुए। राजकुमारी ने खुद ने उन सबकी जाँच की। वह उनसे बोली पर उनमें से किसी भी भैंसे ने उसकी बात का जवाब नहीं दिया और न उसको पहचाना। फिर

उसने पुलिस को हुक्म दिया कि वे लोग सब जगह जा कर देखें कि किसने उसका हुक्म नहीं माना।

पुलिस के कुछ आदमी जादूगरनी के घर भी आये तो उन्होंने देखा कि उसने अपना भैंसा राजा के पास नहीं भेजा था। उन्होंने उसके भैंसे को रस्सी से पकड़ा और राजा के पास ले गये।

जादूगरनी ने उसकी जादुई रस्सी को अपने हाथ में पकड़े रखने की बहुत कोशिश की पर सब बेकार। पुलिस ने उसको छोड़ा ही नहीं। वे उस भैंसे को रस्सी से पकड़ कर जादूगरनी से दूर ले गये।

राजा ने देखा कि उसके भेजे हुए पुलिस के लोग एक भैंसा पकड़ कर ला रहे हैं तो वह उनसे मिलने के लिये आगे तक आयी कि लो भैंसे की रस्सी तो अचानक टूट गयी और उसकी जगह एक सुन्दर राजकुमार खड़ा था।

राजकुमारी बोली — "यकीनन यह जादूगरनी तो बहुत ही नीच औरत है। इसको इस दुनियाँ में रहने का कोई हक नहीं है। कल सुबह इसको मार दिया जाये और राजकुमार को हमारे महल में ठहराया जाये।

अब आगे की कहानी तो बिल्कुल साफ है। राजा यानी राजकुमारी ने अपनी सच्चाई राजकुमार को बतायी। फिर उसने अपनी जनता को बुलाया और उससे कहा — "देखो तुम्हारा राजा एक स्त्री है। इस वेश बदलने का मेरा उद्देश्य अपने राजकुमार को

ढूँढना था। मेरा उद्देश्य अब पूरा हो गया इसलिये अब तुम लोग राजकुमार को अपना राजा और मुझे अपनी रानी मान लो।"

लोगों ने उनको अपना राजा और रानी मान लिया और फिर सब खुशी खुशी रहे।

12 सैयद और सईद[42]

एक बार की बात है कि एक गरीब गॉव वाला था जो जंगल से लकड़ी काट कर और उसको बाजार में बेच कर अपना और अपने परिवार का गुजारा करता था।

सुबह सुबह वह लकड़ी काटता था फिर उनके गट्ठर बनाता था फिर शाम को उनको सबसे पास वाले बाजार ले जा कर बेच आता था।

इस गरीब आदमी की शादी हुई और उसके दो बेटे हुए। बड़े बेटे का नाम उसने सैयद रखा और छोटे वाले का नाम उसने रखा सईद। पर जब उसके ये दोनों बेटे छोटे ही थे तभी उनकी मॉ मर गयी और उस लकड़हारे ने दूसरी शादी कर ली। उसकी दूसरी पत्नी उसकी पहली पत्नी से ज़्यादा होशियार थी।

एक दिन उसने अपने पति से कहा — "आप मुझसे और अपने दोनों बेटों से क्यों नहीं कहते कि हम भी लकड़ी काटने में आपकी सहायता करें। हम लोग बहुत कम पैसों में रह रहे हैं। पर अगर मैं और हमारे ये दोनों बेटे भी हमारी सहायता करेंगे तो हम लोग ज़्यादा पैसा कमा पायेंगे।"

आदमी ने कहा — "यह तो बिल्कुल ठीक है।"

---

[42] Saiyid and Said (Tale No 12)

सो इस प्लान के अनुसार अब चारों रोज सुबह सुबह लकड़ी काटने जाने लगे। उन्होंने सबने इतनी मेहनत कर के काम किया कि कुछ ही महीनों में उनके पास काफी पैसा जमा हो गया। इसके अलावा उन्होंने जाड़ों के लिये काफी सारी लकड़ी भी जमा कर ली। वह लकड़ी उन्होंने घर के पास ही एक जगह ठीक से लगा कर रख दी।

कुछ ही दिन बाद बहुत ज़ोर से बारिश शुरू हो गयी। उसी समय तीन यात्री जंगल से गुजरे। बारिश से बचने के लिये उन तीनों ने एक पेड़ के खोखले हिस्से में शरण ली।

बारिश ने हवा ठंडी कर दी थी सो उन यात्रियों ने लकड़ियों के उस ढेर में से कुछ लकड़ी ली जो उस लकड़हारे ने इकट्ठी करके रखी थी और उससे एक बहुत बड़ी आग जलायी। पूरे दो दिन तक वे वहॉ ठहरे और उस उतनी बड़ी आग को बनाये रखा। जब बारिश खत्म हो गयी तो उन्होंने अपनी यात्रा फिर से शुरू कर दी।

लकड़हारा भी अपनी लकड़ी को देखने के लिये बाहर आया तो उसके आश्चर्य का तो ठिकाना ही न रहा जब उसने देखा कि उसकी लकड़ी तो वहॉ थीं नहीं उनकी जगह केवल राख पड़ी है।

तभी उसकी पत्नी और बेटे भी वहॉ आ गये। उसने उनसे कहा — "भगवान नहीं चाहता कि हम लोग अमीर बनें। अब हम क्या करें? अब हम क्या करें? हमारी तो सारी लकड़ियॉ जल गयीं।"

यह बोलते बोलते उसने एक डंडा राख में घुमाया।

पत्नी ने राख में पड़ी किसी चमकती चीज़ को देख कर पूछा — "वह क्या है? देखो न वह क्या है। वहाँ देखो वहाँ देखो।"

इस पर उन सबने राख के पूरे के पूरे ढेर को देखा तो उनको उसमें चाँदी के कई टुकड़े मिले। इस बात के डर से कि कहीं उनको रास्ते में कोई आदमी न मिल जाये और उनसे वे चाँदी के टुकड़े न छीन ले उन्होंने वे चाँदी के टुकड़े अपनी अपनी काँगड़ियों[43] में रख लिये उनको कोयलों से ढक लिया और घर को चल दिये।

किसी को उनके ऊपर कोई शक न हो इसलिये लकड़हारे ने अपने दोस्तों और पड़ोसियों को अपने खजाने के बारे में बता दिया। कुछ समय बाद उसने लकड़ी काटने का काम छोड़ दिया और व्यापार करने लगा। व्यापार में उसकी बहुत तरक्की हुई। आखिर वह एक बहुत बड़ा आदमी बन गया।

इस बीच उसके दोनों बेटे भी स्कूल जाने लगे और बहुत पढ़ लिख गये।

एक दिन वह सौदागर अपने दोनों बेटों के साथ किसी मेले से लौट रहा था कि रास्ते में उनको एक जमींदार मिला जो एक पिंजरा ले जा रहा था।

उस पिंजरे में एक बहुत सुन्दर चिड़िया बन्द थी जो बहुत मीठा गाती थी। बेटों ने जब उस चिड़िया को देखा और उसका मीठा गाना सुना तो अपने पिता से उसे खरीदने के लिये कहा।

[43] A small portable brazier

सौदागर ने जमींदार से पूछा — “यह चिड़िया तुम कितने में बेचोगे?”

जमींदार बोला — “दो मुहर[44] में।”

सौदागर जमींदार को दो मुहर दे कर बोला — “लो यह लो दो मुहरें और यह चिड़िया मेरे बच्चों को दे दो।”

जमींदार ने सौदागर से दो मुहरें लीं और चिड़िया का पिंजरा बच्चों को थमा कर चला गया। सैयद और सईद ने पिता को उनके लिये चिड़िया खरीदने के लिये धन्यवाद दिया। वे चिड़िया को बहुत प्यार करते थे। स्कूल से लौटने के बाद वे उसके साथ खेलते थे।

कुछ समय बाद उस चिड़िया ने एक अंडा दिया। दोनों बेटे उस अंडे को बहुत देर तक देखते रहते थे। क्योंकि वे चाहते थे कि उनके पास वैसी ही एक चिड़िया और हो जाये।

एक दिन वे लोग उस पिंजरे को साफ करने के लिये नदी के किनारे ले गये और यह काम ठीक से होना चाहिये इसलिये उन्होंने चिड़िया को बाहर निकाल कर सैयद के हाथ में दे दिया और उसके अंडे को एक पत्थर पर सँभाल कर रख दिया।

जब सईद पिंजरे को साफ कर रहा था तो एक आदमी ने जो नदी के दूसरे किनारे पर नहा रहा था वह सब देखा जो नदी के इस किनारे पर हो रहा था।

---

[44] Gold coins

उसने यह भी देखा जो शायद सौदागर और उसके बेटों ने ध्यान नहीं दिया कि जिस पत्थर पर अंडा रखा था वह पत्थर चाँदी का हो गया था। उस आदमी को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ। उसने सोचा कि इस अंडे की शायद यही खासियत होगी यह जिसको छुए उसको चाँदी का बना दे।

उसने ऐसी बातें पहले सुनी तो थीं पर उसको उन बातों पर विश्वास नहीं था। पर यहाँ तो सबूत मौजूद था सो इसमें शक की कोई गुंजायश ही नहीं थी। उसने सोचा कि किसी तरह से वह उस अंडे को ले लेगा।

वह आदमी वहीं से चिल्लाया — "हे हे। क्या तुम यह अंडा मुझे बेचोगे? मैं इससे कुछ दवा बनाना चाहता हूँ।"

सौदागर बोला — "नहीं। अभी मैं इतना गरीब नहीं हूँ कि मुझे इसको बेचने की जरूरत पड़े। मैं तुमको इसे खुशी से दे देता अगर मेरे बेटे ऐसी ही दूसरी चिड़िया के लिये इतने उत्सुक न होते।"

पर उस आदमी ने उससे उसकी प्रार्थना सी करते हुए कहा — "मेहरबानी कर के इसे मुझे दे दीजिये। मैं आपको इसका एक रुपया दूँगा।"

सौदाागर बोला — "अफसोस मैं इसे तुम्हें नहीं दे सकता।"

आदमी ने देखा कि यह सौदागर तो इतनी जल्दी मानने वाला नहीं है सो उसने फिर कहा — "मैं आपको इसके पाँच... दस... बीस... सौ... चलिये एक हजार रुपये तक दे दूँगा।"

सौदागर बोला — "नहीं। पर हॉ अगर तुम मुझे दस हजार रुपये दो तो मैं तुमको इसे दे दूॅगा।"

आदमी मन ही मन खुश हो कर बोला — "एक अंडे को लिये इतने पैसे बहुत ज़्यादा हैं पर जब आप इससे कम में देने के लिये तैयार ही नहीं हैं तो मैं आपको इसके दस हजार ही दे दूॅगा क्योंकि इससे बनी दवा के बिना तो मैं मर जाऊॅगा।"

इस तरह यह सौदा पक्का हो गया। वे सब वहॉ से सौदागर के घर की तरफ को चले। वहॉ जा कर उस आदमी ने सौदागर को पैसा दिया और सौदागर ने उसको वह अंडा दे दिया।

अब जैसा कि होना चाहिये था आदमी को अंडा खरीदने के बाद सबसे पहले नदी के किनारे उस पत्थर के पास जाना चाहिये था जो उस अंडे के छूने से चॉदी का बन गया था। पर उसने सोचा कि अब उसको इसकी कोई जरूरत नहीं है।

जैसा कि उसने इस बात को बाद में साबित भी कर दिया। क्योंकि हर पत्थर जो उस अंडे ने छुआ वही चॉदी का बन गया।

इसके कुछ दिनों बाद एक योगी इस आदमी से मिला जिसने उस अंडे को देखा तो कहा कि यह तो बड़ा कीमती अंडा है। पर वह चिड़िया कहॉ है जिसने इसको दिया है। अगर हो सके तो तुम उस चिड़िया को पाने की कोशिश करो।

क्योंकि जो कोई भी उसका सिर काटेगा पकायेगा और खायेगा वह दुनियॉ का सबसे अमीर राजा होगा। चिड़िया का सिर उस

आदमी की छाती में रहेगा जो उसे खायेगा। जब वह आदमी सुबह उठेगा तो उसको अपने नीचे दस हजार मुहरें मिलेंगीं। उसको चिड़ियों और जानवरों की भाषा भी समझ आने लगेगी।

उस चिड़िया की छाती भी बहुत खास है। जो उसको पकायेगा और खायेगा वह राजा बन जायेगा। पर वह उतना बड़ा राजा नहीं बनेगा जितना कि उसका सिर खाने वाला बनेगा।

जब आदमी ने योगी से यह सब सुना तो वह तो तुरन्त ही सौदागर के घर की तरफ चल दिया। वहॉ जा कर उसने सौदागर से उस चिड़िया को बेचने की प्रार्थना की। उसने उसको जो भी वह चाहे उसकी वही कीमत देने का वायदा किया।

पर सौदागर ने उससे यह कह कर जाने के लिये कहा कि वह उसे किसी हालत में भी नहीं बेचेगा चाहे उसको उसके बदले में सारी दुनियॉ दे दी जाये। इसलिये वह जा सकता था।

पर आदमी तो उस चिड़िया को लेने के लिये उतने ही पक्के इरादे से आया था जितने पक्के इरादे से वह पिछली बार उससे अंडा खरीदने आया था।

सो जब उसने सौदागर का जवाब सुना तो अपने मन में कहा "मुझे मालूम है मुझे क्या करना है। मैं उसे इस सौदागर की पत्नी से खरीदॅूगा। मैं अभी जा कर उससे मिलता हॅू।"

सो वह एक अक्लमन्द बूढ़ी स्त्री के पास गया और इस बारे में उससे सलाह की। उसने उससे यह भी कहा कि अगर वह उसको

सौदागर की पत्नी से मिलवा देगी तो वह उसको बहुत सारा इनाम देगा। उस अक्लमन्द बुढ़िया ने हामी भर दी।

वह सौदागर के घर गयी और यह देख कर कि वह घर में नहीं था वह उसके घर में घुसी और उसकी पत्नी से बातें करने लगी।

सौदागर की पत्नी उसको देख कर बहुत खुश हुई और कुछ देर बात करने के बाद उसने उससे फिर आने के लिये कहा। इस तरह से उन दोनों की अच्छी दोस्ती हो गयी। आखिर सौदागर की पत्नी ने उससे अपने पास ही रहने के लिये कहा।

इस सारे समय में बुढ़िया उससे उस आदमी के बारे में उससे बहुत अच्छी अच्छी बातें करती रही जिसने उसे वहाँ भेजा था। और इस तरह से उसने बेचारे सौदागर की पत्नी के मन में उससे मिलने की इच्छा पैदा कर दी।

बुढ़िया ने उससे यह भी कहा कि वह आदमी भी उससे मिलने के लिये कितना उत्सुक था। जब सौदागर की पत्नी यह पक्का कर लिया कि फलाँ दिन उसका पति घर में नहीं रहेगा तो वह दिन उस आदमी से मिलने के लिये तय कर लिया गया।

अपना उद्देश्य ज़्यादा आसानी से पूरा करने के लिये और अपना बहुत दिनों का सोचा हुआ प्लान पूरा करने के लिये उसने अपने पति से कहा कि वह कुछ दिनों के लिये बाहर हो आये। फिर उसने उससे पूछा "आप वहाँ से क्या क्या अच्छी चीज़ें खरीदेंगे?" "कहाँ कहाँ जायेंगे?"

सौदागर ने जवाब दिया — “हाँ मैं जाऊँगा और अच्छी चीज़ें भी खरीदूँगा। यह मेरी बेवकूफी थी कि यह मैंने पहले नहीं किया।” और कुछ दिन में ही वह कुछ लोगों के साथ अपनी यात्रा पर रवाना हो गया।

तब उस सौदागर की पत्नी ने बुढ़िया से कहा — “जाओ और जा कर उस आदमी से कह दो जो मुझसे मिलना चाहता है कि वह मुझसे कल सुबह 12 बजे आ कर मिल ले।”

बुढ़िया वहाँ से चली गयी और जा कर उस आदमी को सौदागर की पत्नी का सन्देश दिया। वह आदमी भी यह सुन कर बहुत खुश हो गया।

उसने बुढ़िया से कहा — “उनको मेरा आदर देना और कहना कि वह अगर मेरे लिये अच्छा खाना बनाने का इरादा रखती हों तो मेरे लिये एक सुन्दर सी चिड़िया पका दें और उसको मेरे लिये अलग से रख दें।

उनको यह भी कहना कि मेरा दिल उस सुन्दर चिड़िया पर आ गया है जो उनके पास है और अगर वह मेरे लिये उन्होंने पका कर अलग नहीं रखी तो मैं बहुत नाउम्मीद हो जाऊँगा।”

अगली सुबह 12 बजे से पहले ही वह चिड़िया और दूसरे अच्छे खाने तैयार रखे थे और सौदागर की पत्नी तो बड़ी उम्मीदें लगाये बैठी थी कि यह अजनबी किस तरह का आदमी होगा और वह उससे क्यों मिलना चाह रहा था।

इसी समय सैयद ओर सईद दोनों स्कूल से घर आये और जैसे कि रोज वे भूखे होते थे उस दिन भी थे सो रोज की तरह से ही वे खाने के लिये अपनी माँ की तरफ दौड़े।

उसने उनसे कहा कि खाना तैयार था। वे खाने के कमरे में जायें और जो उनको अच्छा लगे वह खाना खा लें। सिवाय उस सुन्दर चिड़िया के और कुछ और चीज़ों के जो उसने खास कर के अपने खास मेहमान के लिये बनायी थीं।

वे तुरन्त ही वहाँ चले गये और सारी प्लेटों की तरफ देखा। और जैसे कि बच्चे करते हैं वे वे सारे खाने भी चखना चाहते थे जिनको खाने के लिये उनको मना किया गया था। सो उन्होंने कई प्लेटों में से खाना ले लिया। कुछ खाना उनको बहुत अच्छा लगा तो उन्होंने उन प्लेटों का सारा खाना खत्म कर दिया।

जिस प्लेट में वह कीमती चिड़िया बनी रखी थी वह भी उन खत्म हुई प्लेटों में से एक प्लेट थी। सैयद ने उसका सिर खा लिया था और सईद ने उसकी छाती। जब उन्होंने खाना खा लिया तो उनको लगा कि यह उन्होंने क्या कर दिया। उनकी माँ उन पर नाराज होगी और उन्हें पीटेगी सो वे वहाँ से भाग गये।

आखिर मेहमान आये। कुछ देर के बाद सौदागर की पत्नी उस आदमी को खाने के कमरे में ले गयी जहाँ सारा खाना लगा हुआ था।

उसको एक कुरसी पर बिठाते हुए उसने उसके आगे कुछ खाना परोसा तो वह आदमी बोला — “मुझे बहुत ज़्यादा भूख नहीं है। यह तो आपकी बहुत मेहरबानी है कि आपने इतना सब बनाया पर अगर आप मुझे वह चिड़िया दे सकें जो मैंने आपसे अपने बनाने के लिये कहा था तो मैं उसी को खा कर सन्तुष्ट हो जाऊँगा। वह तो मैं खा ही सकता हूँ।”

सो सौदागर की पत्नी ने वह प्लेट जिसमें चिड़िया पकी रखी थी उसमें की बची हुई चिड़िया उसके सामने रख दी।

वह बोला — “अरे यह आपने क्या किया इसमें तो आधी चिड़िया भी नहीं है। इसका सिर और इसकी छाती किसने खायी।”

वह परेशान होते हुए बोली — “पता नहीं।”

आदमी बोला — “जरूर ही किसी ने खाना छुआ है।” और गुस्से में भर कर वह घर छोड़ कर चला गया। उसके इस तरह अचानक घर छोड़ कर चले जाने से सौदागर की पत्नी तो बहुत दुखी हुई। क्या यही वह आदमी था जिससे मिलने के लिये उसने इतने दिन इन्तजार किया था पर उसकी समझ में नहीं आया कि उससे ऐसा क्या हो गया जो वह इस तरह से गुस्सा हो कर चला गया।

उधर सैयद और सईद घर से निकल कर चलते रहे चलते रहे, दूर और तेज़ जब तक कि वे एक बड़े से मैदान में नहीं आ गये। वहाँ उन्होंने रात को आराम करने का विचार किया हालाँकि वहाँ डरने की हर चीज़ मौजूद थी।

वहाँ बहुत सारे जंगली जानवर रहते थे। पर ये दोनों नौजवान तो किसी से डर नहीं रहे थे क्योंकि उस चिड़िया का सिर और छाती खा कर वे बहुत हिम्मत वाले हो गये थे।

वे उस चिड़िया के गुणों से तो अभी भी बिल्कुल अनजान थे पर फिर भी वह कोई भी साहसिक काम करने का साहस रखते थे ऐसा उन्होंने महसूस किया।

उस रात वे सुरक्षित रूप से बड़ी गहरी नींद सोये। सुबह को जब वे उठे तो बड़े भाई सैयद ने वहाँ दस हजार मुहरें देखीं जहाँ वह सोया था। यह देख कर उनको बहुत खुशी हुई। उन्होंने वे सोने की मुहरें उठायीं और अपनी यात्रा फिर से शुरू की।

उस मैदान के दूसरे किनारे पर पहुँच कर वे एक ऐसी जगह पहुँच गये जहाँ दो सड़कें मिलती थीं। उनमें से एक सड़क की तरफ एक पत्थर रखा था जिस पर लिखा था "इस तरफ मत जाना नहीं तो पछताओगे।"

सैयद उन दोनों में से ज़्यादा हिम्मत वाला था क्योंकि उसने चिड़िया का सिर खाया था सो उसकी इच्छा थी कि वह वह खतरे वाला रास्ता ले। उसने सईद से कहा कि वह उसके साथ चले पर सईद नहीं माना।

वह बोला — "नहीं। मैं मौत से इतनी जल्दी मिलने वाला नहीं हूँ। मैं यह रास्ता नहीं लूँगा।"

पर सैयद ने तो उधर जाने का इरादा बना रखा था सो दोनों भाई वहाँ से अलग अलग रास्ते चल दिये। सैयद खतरे वाली सड़क से गया और सईद साधारण सड़क से गया।

सईद की किस्मत

छोटा भाई सईद उस साधारण सड़क पर चलते चलते एक शहर में आ पहुँचा जो समुद्र के किनारे था। वहाँ उसने एक बहुत बड़े सौदागर और जहाज़ के मालिक के पास नौकरी कर ली।

अभी सईद को उस सौदागर के यहाँ नौकरी किये हुए बहुत दिन नहीं हुए थे कि सौदागर ने उससे पूछा कि क्या वह समुद्र देखना पसन्द करेगा। सईद बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं।" क्योंकि वह बाहर घूमने और नयी नयी जगह देखने का बहुत शौकीन था। सो वह सौदागर के साथ चल दिया।

कुछ दिन तक तो सब कुछ बहुत शान्त रहा सब कुछ बहुत शानदार था। उस यात्रा में सौदागर ने पैसा भी बहुत कमाया।

एक सुबह बहुत ही बुरी हवा चल पड़ी और इतनी तूफानी हो गयी कि जहाज़ पानी में इधर उधर उछलने लगा और आखिरकार जहाज़ टूट गया।

जितने भी लोग उस जहाज़ पर थे सब डूब गये सिवाय सईद के। सईद एक लकड़ी के तख्ते के सहारे तैरता तैरता एक अकेले टापू के किनारे जा कर लग गया।

बेहोश और नाउम्मीद सा वह वहीं किनारे पर जा कर लेट गया और बोला — “उफ़ मैं पैदा ही क्यों हुआ? मेरी मॉ ने जो खाना खाने से मुझे मना किया था वह मैंने क्यों खाया? फिर मैं घर से क्यों भागा? मैंने अपने भाई का साथ भी क्यों छोड़ा?

वह भी ज़्यादा अच्छा होता अगर मैं इस बेकार की जगह में धीरे धीरे मरने की बजाय सौदागर के साथ ही मर जाता।”

तभी सब रोगों की एक दवा नींद उसके ऊपर छा गयी और वह सो गया। रात भी हो गयी थी।

वह सुबह तक आराम से सोता रहा। जब वह सुबह नींद से जागा तो उसने अपने चारों तरफ देखा कि वह किस तरह की जगह थी। तभी उसको एक जहाज़ पास से गुजरता हुआ दिखायी दे गया।

वह वहीं से चिल्लाया और उसने अपना हाथ भी हिलाया ताकि वह उन जहाज़ वालों को वहॉ अपनी उपस्थिति बता सके। किस्मत से उन्होंने उसको देख भी लिया। जहाज़ का कैप्टेन जहाज़ को उस टापू के पास ले आया और उसको अपने जहाज़ में बिठा कर अपने साथ ले चला।

जहाज़ को जहॉ जाना था वह वहॉ सुरक्षित रूप से पहुॅच गया। वहॉ जा कर सईद ने जहाज़ के कैप्टेन और मल्लाहों को धन्यवाद के साथ विदा कहा और वहॉ से चला गया।

कुछ समय तक तो वह शहर में ही इधर उधर घूमता रहा और अपने देश शहर पिता और भाई के बारे में पूछताछ करता रहा पर किसी से उनके बारे में कोई पता नहीं चला।

तो उसने सोचा कि अब इस शहर में रहने से कोई फायदा नहीं सो वह बराबर के देश चल दिया जिसके बारे में उसने कई मजेदार बातें सुन रखी थीं। कुछ दिनों में ही वह वहाँ पहुँच गया और उसे वाकई मजेदार पाया। उस देश की राजधानी इतनी ऊँची चहारदीवारी से घिरी हुई थी कि उस पर चढ़ना मुश्किल था।

उसमें केवल एक ही दरवाजा था जिसको हमेशा बन्द रखा जाता था। इस तरह से उसकी सुरक्षा का पूरा इन्तजाम था। ऐसा क्यों था यह हम तुम्हें अभी बतायेंगे।

इस शहर का यह रिवाज था कि इस राज्य के मन्त्री लोग हर दिन अपना एक राजा चुनते थे और हर रात उसको मार देते थे। इस बुरे रिवाज की वजह से लोग वहाँ से झुंडों में शहर छोड़ छोड़ कर भागने लगे।

इसलिये मन्त्रियों ने एक बार आपस में बैठ कर इसके लिये प्लान बनाने की सोची ताकि शहर खाली न हो जाये। वे इस नतीजे पर पहुँचे कि सब तरफ यह नोटिस भेज दिया जाये कि जो लोग इस शहर से चले गये हैं वे सब लोग शहर वापस लौट आयें और वहाँ आ कर अपना राजा चुन लें जो उनके देश पर जीवन भर राज

करेगा। सो जब सईद इस शहर के दरवाजे पर पहुँचा तो वहाँ बहुत सारे ताकतवर लोग खड़े हुए थे।

प्रधान मन्त्री ने आगे आते हुए कहा — "पुराने रिवाज को देखते हुए कि दिन में राजा चुन लिया जाये और रात को उसे मार दिया जाये यह आपके लिये ठीक नहीं है।

इसलिये अब हमने आप सबको यहाँ इसलिये बुलाया है ताकि आप लोग अपना राजा अपने आप चुन लें जो हमारे ऊपर अपनी ज़िन्दगी भर राज करेगा। अब यह मामला आप लोगों के हाथ में है सो बोलें अब हमारा राजा कौन होगा।"

लोग चिल्लाये — "दरवाजा बन्द कर दो। फिर जो भी सबसे पहले शहर में घुसेगा वही हमारा राजा होगा।"

लोगों ने ऐसा ही किया उन्होंने शहर का दरवाजा बन्द कर दिया। हर आदमी अपने साथियों से बाहर के किसी भी आदमी का नाम लेने से डरता था कि कहीं ऐसा न हो कि उनका अपना आदमी नाराज हो जाये और वह उसको मार दे।

सो जब सईद इस शहर में आया तो शहर का दरवाजा बन्द था। इसलिये यह पहला आदमी था जो दरवाजा बन्द होने के बाद शहर में घुसा था सो लोगों ने इसे ही अपना राजा चुन लिया।

इसको बड़ी इ़ज़्ज़त के साथ अन्दर ले जाया गया और राजा के सिंहासन पर बिठाया गया। लोग बहुत ज़ोर से चिल्लाये — "यही हमारा राजा है। हमारा राजा अमर रहे।"

सैयद की किस्मत

अब सैयद की कहानी सुनो। सैयद अपने रास्ते पर बढ़ चला। उसके ऊपर रास्ते पर लिखी हुई चेतावनी का कोई असर नहीं था वह निडर हो कर आगे चलता चला जा रहा था।

वह जहाँ भी सोता था वहीं उसे अगली सुबह दस हजार मुहरें मिल जाती थीं। इस तरह से वह रोज अमीर पर अमीर होता जा रहा था। उसके पास अब इतना धन हो गया था कि उसको ले कर चलने के लिये उसे कई मजदूर रखने पड़े।

अभी तक उसको कहीं कुछ नहीं हुआ वह सुरक्षित था सो उसको लगने लगा कि सड़क के शुरू होने पर जो कुछ लिखा हुआ था वह सब ऐसे ही लोगों को डराने के लिये लिखा था।

चलते चलते वह एक बहुत ही सुन्दर बागीचे के दरवाजे पर आ पहुँचा जिसमें बहुत तरह के बहुत सुन्दर और प्यारे फूल लगे हुए थे। वह उस बागीचे में चला गया तो उसने वहाँ एक घर देखा।

उस घर की दीवारें चाँदी की बनी हुई थीं। उसके खम्भे सोने के बने हुए थे और वह पूरा का पूरा घर धूप में इतना चमक रहा था कि उसकी तरफ देखना भी मुश्किल था।

उसी बागीचे में उसको एक बुढ़िया मिल गयी तो उसने उससे पूछा — "यहाँ कौन रहता है? कौन रहता है यहाँ? कोई देवदूत? या फिर कोई पवित्र आदमी[45]?"

---

[45] Translated for the words "Holy Man"

बुढ़िया बोली — “यहॉ एक बहुत सुन्दर लड़की रहती है और मैं उसकी दाई[46] हूॅ। तुम इस महल की चमक धमक पर आश्चर्य कर रहे होगे। मेरी मालकिन के पास इस तरह के कई मकान और बागीचे हैं जो इतने ही अच्छे हैं।”

“क्या तुम्हारी मालकिन घर में हैं? क्या मैं उनसे मिल सकता हूॅ?”

“हॉ हॉ क्यों नहीं। उनसे तो कोई भी मिल सकता है बस दस हजार रुपये का सवाल है। जो उनको दस हजार रुपये दे सके वही उनसे मिल सकता है।”

सैयद बोला — “बिल्कुल ठीक। मैं उनको यह पैसे दे दूॅगा तुम मुझे उनके पास ले चलो।”

सो वह बुढ़िया उसको अपनी मालकिन के पास ले गयी। उस प्यारी सी लड़की को देख कर तो सैयद इतना आश्चर्यचकित रह गया कि उसके मुॅह से बोली ही नहीं निकली।

वह लड़की उसको उसका हाथ पकड़ कर अन्दर ले गयी और उसको बिठाया। फिर बोली — “दाई ने तुम्हें मेरी शर्त तो बता ही दी होगी। हर दिन जब भी तुम मुझसे मिलने आओगे तो तुम मुझे दस हजार रुपये दोगे। और जब तुम्हारा सारा पैसा खत्म हो जायेगा तब तुमको मरवा दिया जायेगा।”

---

[46] Daai means very personal maidservant

सैयद बोला — "मंजूर है। मैं तुमको दस हजार रुपये नहीं बल्कि दस हजार मुहरें दूँगा।" क्योंकि वह तो उस समय उसकी सुन्दरता के नशे में पागल हो रहा था।

यह सुन कर वह लड़की बहुत खुश हुई। उसने उसको अपने मकान में काफी दिनों तक रखा। सैयद के पास रोज दस हजार मुहरें आती रहीं और वह उनको उस लड़की को देता रहा।

कुछ समय बाद उस लड़की को आश्चर्य हुआ कि यह किस तरह का आदमी है जो रोज इस तरह उसको इतना पैसा देता रहता है। उसने सोचा जरूर ही यह कोई जादूगर होगा सो उसने उसके ऊपर नजर रखनी शुरू की।

उसकी इस सम्पत्ति का राज़ बहुत जल्दी ही खुल गया। जब सैयद सो कर उठा तो उस लड़की ने उसके बिस्तर पर ये मुहरें देखीं तो उसने सोचा कि जरूर ही उसने सुनहरी चिड़िया का सिर खाया होगा। वह ऐसा इसलिये सोच सकी क्योंकि वह खुद भी एक जादूगरनी थी।

जिस पल उसको इस बात का पता चला तो उसने अपने साथी यानी उस लड़के को बर्बाद करने की सोची।

एक दिन उसने सैयद से कहा — "मेरे पास अभी अभी एक नयी शराब आयी है आओ उसका स्वाद चखते हैं।" यह कह कर वह अन्दर चली गयी और शराब और प्याले उठा लायी और ला कर उसके सामने रख दिये।

सैयद ने वह शराब खूब जी भर कर पी। वह शराब लड़की ने भी पी पर बहुत थोड़ी सी। यह शराब बहुत तेज़ थी सो जल्दी ही सैयद का क्योंकि उसने यह शराब बहुत सारी पी थी जी घबराने लगा और इतना घबराया कि वह तो बिल्कुल पागल सा हो गया। साथ में उसको बहुत ज़ोर की प्यास भी लगने लगी।

वह चिल्लाया — "मुझे थोड़ा पानी दो मुझे प्यास लगी है।"

लड़की ने उसको थोड़ा तरबूज का रस और कुछ अंगूर ला कर दिये। उसने उनको लड़की के हाथों से जल्दी से छीन लिया और जैसे ही उसने तरबूज का रस पिया और अंगूर खाये तो वह तो बीमार पड़ गया। उसने तुरन्त ही जो कुछ उसके पेट में था वह सब उगल दिया।

चिड़िया का सिर जो सैयद ने निगला था सैयद के पेट तक नहीं पहुँच पाया था और न ही वह दूसरे खानों की तरह से पच पाया था। सो वह भी बाहर निकल आया। लड़की को इसी की तो उम्मीद थी सो उसने उसको तुरन्त ही उठा लिया और अपने एक डिब्बे में छिपा कर रख लिया।

अगले दिन जब सैयद सो कर उठा तो उसको यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि रोज की तरह से आज उसके बिस्तर पर मुहरें नहीं थीं। उसकी समझ में ही नहीं आया कि ऐसा क्यों हुआ और वह अब क्या करे।

अब क्योंकि वह उस लड़की को दस हजार मुहरें नहीं दे सकता था सो लड़की ने उसको मारने की धमकी दी कि अगर उसने दस हजार मुहरों का शाम तक इन्तजाम न किया तो वह उसको मरवा देगी।

सारा दिन सैयद बहुत परेशान रहा। वह क्या करे। जब शाम हुई तो वह एक कमरे में बन्द हो कर बैठ गया और दरवाजे को ताला लगा दिया।

लड़की ने कुछ देर तक तो इन्तजार किया पर जब वह खुद नहीं आया तो उसने उसको बुलवाया। उसने कहलवा दिया कि उस शाम उसकी तबियत ठीक नहीं है सो उस दिन उसको माफ किया जाये। पर आखिर तो उसको लड़की के पास जाना ही पड़ा।

जब वह वहाँ पहुँचा तो उसने सैयद का बड़ी बेरहमी से स्वागत किया। सैयद बोला — "मेरे पास तुम्हें देने के लिये अब कुछ नहीं है। मुझे नहीं मालूम कि ऐसा मेरे साथ कैसे हुआ कि मेरे पास अब बिल्कुल भी पैसे नहीं है। मैं अपना दुख तुम्हें बता भी नहीं सकता। मैं तो अपने इस मामले पर खुद ही इतना ज़्यादा दुखी हूँ कि मैं तो मुश्किल से चल पा रहा हूँ।"

लड़की बोली — "मुझे खुद भी बहुत दुख है पर यह सब अब और आगे नहीं चल सकता। पर क्योंकि तुमने मुझे इतनी दरियादिली से पैसे दिये हैं इसलिये मैं तुम्हारी मौत का हुक्म हटा लेती हूँ और तुमको जाने देती हूँ।

अब तुम यहाँ से चले जाओ और फिर अपना चेहरा मुझे मत दिखाना जब तक कि तुम्हारे पास बहुत सारा पैसा न हो जाये।" सैयद ने उसको धन्यवाद दिया और वहाँ से चला गया।

बागीचे के दरवाजे से बाहर जाते जाते वह बोला — "उफ़ यह तो बहुत बड़ा दुख है। काश मैंने अपने भाई की बात मान कर यह रास्ता न लिया होता।

अब तो मेरे लिये वापस जाना भी बेकार है। अब यहाँ से मुझे सीधे जाना चाहिये और देखना चाहिये कि अब मेरी यह किस्मत मुझे कहाँ ले जाती है।"

ऐसा सोच कर वह आगे चल दिया। चलते चलते वह एक जंगल के एक मैदान से गुजरा। मैदान पार करने के बाद उसे तीन आदमी मिले जो अपने गुरू की जो एक फ़कीर था चार चीज़ों के बँटवारे पर बहुत ज़ोर ज़ोर से लड़ रहे थे।

उसने उनसे पूछा — "तुम लोग ऐसे क्यों लड़ रहे हो? क्या बात है।"

वे बोले — "हमारे गुरू जी की चार चीज़ें हमारे पास हैं। उनको हम अपने चारों में कैसे बाँटें। इसी बात पर झगड़ा हो रहा है।"

"अच्छा मुझे वे चीज़ें दिखाओ।"

तीनों ने अपने अपने बोझे खोले और उनमें से एक भद्रपीठ[47] एक थाल एक सुरमे का डिब्बा और एक फटा सा ओढ़ने का कपड़ा निकाला।

उन्हें देख कर सैयद को हॅसी आ गयी वह बोला — "ये चीज़ें तो कोई ऐसी कीमती चीज़ें नहीं लगतीं जिनके ऊपर लड़ा जाये।"

वे बोले — "तुम इनकी कीमत नहीं जानते। हम तुम्हें बताते हैं। जो कोई भी इस भद्रपीठ पर बैठेगा यह उसको वहॉ ले जायेगा जहॉ वह जाना चाहेगा। वह जगह कितनी भी दूर क्यों न हो और किसी की भी पहॅुच से कितनी भी बाहर क्यों न हो।

यह थाल अपने मालिक को किसी भी समय बहुत तरीके के स्वादिष्ट खाने देगा। जो कोई यह सुरमा ऑख में लगायेगा वह दूसरे की ऑखों से तो ओझल हो जायेगा पर वह सब कुछ देख पायेगा।

इस पुराने कपड़े में चार जेबें हैं। इसकी एक जेब से आप कितने भी पैसे निकाल सकते हैं। इसकी दूसरी जेब चॉदी देती है। इसकी तीसरी जेब सोना देती है। इसकी चौथी जेब जवाहरात देती है।"

जब तीनों ने उन चारों चीज़ों को समझा दिया तो सैयद बोला — "यह तो बड़ी मजेदार बात है। ये तो वाकई बड़ी कीमती चीज़ें

[47] A splendid seat or low stool. See its picture above.

हैं। अब तुम लोग अपना झगड़ा खत्म करो। मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुमको क्या करना चाहिये।

तुम लोगों को इस आखिरी चीज़ यानी कपड़े के बारे में ज़्यादा चिन्ता करने की जरूरत नहीं। उसको तो तुम मुझे दे दो और भद्रपीठ तुम ले लो सुरमा तुम ले लो और थाल तुम ले लो।"

वे सब बहुत ज़ोर से चिल्लाये — "नहीं कभी नहीं। यह हम कभी नहीं कर सकते। क्योंकि हमारे गुरू ने इसी शर्त पर ये चीज़ें हमको दी हैं कि हम इनको अपने से कभी अलग नहीं करेंगे। सो हम लोगों ने यह कसम खायी है कि हम इन चीज़ों को कभी अपने से अलग नहीं करेंगे।

नहीं नहीं तुम हमको अकेला छोड़ दो। हमारी तो बस केवल यही एक उम्मीद है कि हममें से एक जल्दी ही मर जायेगा और तब हम लोगों को ये चीज़ें बाँटने में कोई परेशानी नहीं होगी। चार चीज़ें दो आदमियों में आसानी से बाँटी जा सकती हैं।"

सैयद बोला — "पर तुम लोग किसी के मरने का इन्तजार क्यों करते हो। तुम लोगों की शक्ल से लगता है कि तुम लोग तो अभी काफी साल जियोगे। मेरी सलाह तो यह है कि इन चीज़ों का तुरन्त ही बॅटवारा कर लिया जाये। तुममें से एक दो चीज़ें ले ले और दूसरे दो लोग एक एक चीज़ ले लें।

अच्छा ठीक है। देखो क्या तुम लोग इस बात पर राजी होगे कि मैं ये तीन तीर इतनी दूर फेंकता हूँ जितनी दूर मैं फेंक सकता

हूँ। एक तीर अपने सामने दूसरा तीर अपनी बॉयी तरफ और तीसरा तीर अपनी दॉयी तरफ।

जब मैं अपने सामने वाला तीर फेंकूँ तब तुम उसे लाने के लिये दौड़ जाना। जब मैं अपने बॉयी तरफ तीर फेंकूँ तब तुम उसे लाने के लिये दौड़ जाना और जब मैं अपने दॉयी तरफ वाला तीर फेंकूँ तब तुम उस तीर को लाने के लिये दौड़ जाना। और जो भी सबसे पहले तीर लायेगा वह दो चीज़ें पायेगा।

"हम राजी हैं।"

इस तरह सैयद ने तीन तीर फेंके और तीनों उनके पीछे दौड़ गये। जब वे तीनों वहॉ से चले गये तो सैयद ने सुरमे की डिबिया थाल और कपड़ा उठाया भद्रपीठ पर बैठा और इच्छा की कि वह उसको वहॉ ले चले जहॉ तीनों आदमी उसके पास न पहुँच सकें और तुरन्त ही वहॉ से गायब हो गया।

जब वे तीनों आदमी तीर ले कर लौट कर आये तो अजनबी और अपनी कीमती चीज़ों को वहॉ न पा कर बहुत दुखी हुए। वे बहुत रोये और बहुत देर तक अपनी चीज़ों के लिये रोते रहे।

वे बोले — "हमारे गुरू जी हमसे नाराज थे क्योंकि हम लड़ रहे थे। वह इस अजनबी के रूप में आये और हमारा खजाना ले गये।"

भद्रपीठ सैयद को उस जगह से बहुत दूर ले गयी जहाँ वे तीन आदमी थे। वहाँ पहुँच कर सबसे पहले उसने थाल से माँग कर खाना खाया।

उस समय उसे उस सुन्दर लड़की की याद आयी वह उसको फिर से देखना चाहता था। सो उसने अपनी सब चीज़ें भद्रपीठ पर रखीं उसके ऊपर बैठा और तुरन्त ही सोने चाँदी के बने महल की छत पर उतर गया।

यहाँ आ कर सबसे पहले उसने अपना खजाना छिपाया फिर वहाँ से सीढ़ियाँ उतर कर महल के कम्पाउन्ड में आया। वहाँ उसको दाई मिल गयी। उसने उससे कहा कि वह उस लड़की को जा कर यह कहे कि वह आ गया है और उससे मिलना चाहता है।

जब उस सुन्दर लड़की ने उसको देखा तो उसने जान लिया कि लगता है कि उसको कहीं से पैसा मिल गया है इसलिये वह लौट कर उसके पास आया है।

उसने उसका स्वागत किया और उसकी बहुत इज़्ज़त की। उसने उससे उसकी यात्राओं के बारे में पूछा जबसे वह वहाँ से गया था कि उसने कहाँ कहाँ क्या क्या किया।

सैयद बोला — "मैं तुम्हारे लिये पैसे लाने के लिये अपने देश गया था क्योंकि मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता।"

हालाँकि सैयद झूठ बोला था क्योंकि वह लड़की को अपनी सम्पत्ति को पाने का राज़ नहीं बताना चाहता था।

हर रोज वह उस फटे कपड़े के पास जाता था और उससे जितना पैसा चाहता ले लेता था। करीब एक महीना इस तरह से चलता रहा कि एक दिन सैयद को लगा कि उसके ऊपर नजर रखी जा रही है।

एक बार उसको लगा कि उसके पीछे एक फुटबाल सीढ़ी पर चढ़ रही थी। एक और समय पर उसको लगा कि छत पर कोई था जो उसको देख रहा था। सो उसने छत पर सोने का निश्चय किया और लड़की को बता भी दिया। उसने लड़की से कहा — "प्रिये मैं आज बाहर छत पर सोना चाहता हूँ। तुम भी चलो न।"

वह राजी हो गयी और दोनों छत पर कई रात सोये जब तक सैयद का शक फिर से नहीं जाग गया। उसने मन में सोचा "कहीं ऐसा न हो कि मेरा यह कपड़ा और दूसरी चीज़ें मुझसे चुरा ली जायें। मैं क्या करूँ। मैं आज रात ही यह जगह छोड़ देता हूँ और कोशिश करता हूँ कि यह लड़की मेरे साथ चले।"

सो उस रात जब वे सोने के लिये छत पर गये तो उसने लड़की को भद्रपीठ दिखाया और उससे उस पर अपने साथ बैठ जाने के लिये कहा तो वह उस पर बैठ गयी। सैयद ने इच्छा की वह उसको इस समाज से कहीं दूर ले चले।

तुरन्त ही भद्रपीठ उनको एक ऐसे टापू पर ले गया जहाँ कोई नहीं रहता था। वहाँ पहुँच कर सैयद ने लड़की से कहा — "प्रिये अब हम लोग यहाँ साथ साथ रहेंगे।"

लड़की बोली — "तुम्हारी इच्छा ही अब मेरी इच्छा है। जब तक तुम मेरे साथ हो मुझे कोई चिन्ता नहीं है।" सैयद को लड़की की यह बात सुन कर बहुत खुशी हुई क्योंकि उसको लगा कि वह लड़की सच बोल रही थी।

धीरे धीरे वह उस लड़की के प्यार में इतना फँस गया कि उसने अपने सारे खजानों के बारे में उसको बता दिया।

लड़की ने पूछा — "तुम इतना शानदार खाना रोज कहाँ से लाते हो?"

सैयद बोला — "अल्लाह देता है मुझे। मुझे बस यह थाल ले कर जाना होता है और अपनी इच्छा बतानी होती है बस इसमें वह खाना आ जाता है।

लड़की ने पूछा — "और इस सुनसान जगह में तुम इतना पैसा कहाँ से लाते हो?"

सैयद बोला — "इस फटे कपड़े से। मैं इसकी जेबों में हाथ डालता हूँ और पैसा सोना चाँदी जवाहरात जो कुछ मैं चाहूँ वह निकाल लेता हूँ।"

"और यह भद्रपीठ हमको कैसे उड़ा कर ले जाता है जैसे कि यह कोई चिड़िया हो?"

सैयद बोला — "यह तो मुझे पता नहीं कि यह कैसे उड़ता है। बस मुझे इतना मालूम है कि इस पर बैठ कर जहाँ की इच्छा करो यह वहीं ले जाता है।

मेरे पास एक और चीज़ है जो तुमने देखी नहीं है। वह है यह सुरमा। इसको ऑख में लगाने से आदमी अदृश्य हो जाता है जबकि वह आदमी सब कुछ देख सकता है।

लड़की बोली — "प्रिय मुझे कितनी खुशी है कि तुमने मुझे ये सब बातें बतायीं। अब हम कितने अमीर हैं और मैं भी कितनी खुशकिस्मत हूँ कि मुझे तुम मिले। तुमने मुझे पहले अपनी इस खुशकिस्मती के बारे में क्यों नहीं बताया। अब तो मेरी अपने घर जाने की बिल्कुल भी इच्छा नहीं है।"

बड़े मीठे शब्द थे। सीधे सादे सैयद के ऊपर ये शब्द अमृत की तरह पड़े तो वह तो बहुत खुश हो गया। पर अफसोस यह सच नहीं था। ये शब्द कह कर उस लड़की का उद्देश्य था कि वह अपने ऊपर से उसका शक हटा सके।

उसने उससे कभी प्यार नहीं किया और न ही वह उसके साथ कभी रहना ही चाहती थी। उलटे वह तो उसकी सारी सम्पत्ति हड़प कर उसे मार देना चाहती थी। सो उसने उसकी उन चारों चीज़ों को अपने कब्जे में कर लेना चाहा। इस मौके के लिये उसे बहुत देर तक इन्तजार नहीं करना पड़ा।

एक सुबह जब वे लोग समुद्र के किनारे एक साथ टहल रहे थे उसने सैयद से कहा कि वह समुद्र में नहाना चाहती है। सो वह समुद्र में पहले जाये और उसकी गहरायी का अन्दाजा लगा कर आये। सो सैयद समुद्र में चला गया और तैरने लगा।

जब वह समुद्र में तैर रहा था तो लड़की ने थाल लिया सुरमे का डिब्बा लिया फटा कपड़ा उठाया और भद्रपीठ पर बैठी और इच्छा की कि वह उसको उसके शानदार घर ले चले।

बेचारे सैयद को इस सबसे कितना धोखा लगा होगा। वह तो नंगा ठंडा और भूखा ही रह गया था। अपनी किस्मत पर रोता हुआ वह उस टापू पर दौड़ता फिरा। जब शाम हुई तो उसने सोचना शुरू किया कि वह रात के लिये क्या करे।

अगर उसके पास कपड़े भी न हुए और खाना भी न हुआ तो क्या हुआ फिर भी उसे कम से कम वहाँ की हवा से बचने के लिये एक झोंपड़ी तो चाहिये ही थी और हो सकता है कि कल उसको कोई जहाज़ आता जाता मिल जाये।

इस तरह से उसने अपने आपको तसल्ली दी और एक पेड़ से उसकी टहनियाँ तोड़नी शुरू कर दीं। जब वह पेड़ से टहनियाँ तोड़ रहा था तो उसका ध्यान तीन चिड़ियों पर गया जो तीन अलग अलग पेड़ों पर बैठी थीं। वे एक दूसरे को कुछ बता रही थीं। और वह समझ रहा था कि वे आपस में क्या बात कर रही थीं।

एक चिड़िया बोली — "मेरा वाला पेड़ तो बहुत गुणी पेड़ है। अगर कोई इसकी छाल छील कर उसका चूरा बना ले और फिर इसकी पत्तियों का रस मिला कर उसका एक लड्डू बना ले तो वह लड्डू सिर दर्द में बहुत फायदा करेगा।

सिर दर्द वाले को तो बस उसको एक बार बहुत अच्छी तरह से सूँघना पड़ेगा और उसका सिर दर्द बिल्कुल ठीक हो जायेगा।"

दूसरी चिड़िया बोली — "यह तो बहुत अच्छा है। अब मेरी सुनो। मेरा पेड़ तो तुम्हारे पेड़ से भी बहुत गुणी है। अगर कोई आदमी इस पेड़ की छाल को छील कर उसका चूरा करके इसी पेड़ की पत्तियों के रस को मिला कर उसका लड्डू बना ले तो उससे किसी के ऊपर भी जादू किया जा सकता है। उस लड्डू को बस उसको सुँघाना होगा। जो उसे सूँघेगा वह गधा बन जायेगा।"

तीसरी चिड़िया बोली — "अरे वाह तुम्हारे पेड़ का तो जवाब नहीं। पर ये दोनों ही पेड़ मेरे पेड़ जैसे नहीं हैं जिस पर मैं बैठी हूँ। अगर कोई आदमी इस पेड़ की छाल के साथ भी ऐसा ही करे तो उसके सूँघते ही वह जादू पड़ा गधा या फिर कोई और गधा हो तो वह भी आदमी बन जायेगा।"

सैयद ने उन चिड़ियों की बातों का एक एक शब्द समझ लिया। वह उनकी ये बातें समझ सका क्योंकि उसने एक बार सुनहरी चिड़िया का सिर निगल लिया था। तो तुम सोच सकते हो कि वह इस अच्छी खबर से कितना खुश हुआ होगा।

उसने तुरन्त ही तीनों पेड़ों की छालों को पीस कर और उनमें उनकी पत्तियों का रस मिला कर लड्डू बना लिये जैसा कि चिड़ियों ने कहा था।

उसने उन तीनों लड्डुओं के ऊपर निशान लगा लिये कि किस लड्डू से क्या काम होता था ताकि वह कहीं भूल न जाये। फिर वह लेट गया और सो गया। पर सुबह जब वह उठा तो बहुत दुखी था।

“ओ अल्लाह मुझे बचाओ ओ अल्लाह मुझे बचाओ।” अल्लाह ने उसकी प्रार्थना सुनी।

एक बहुत बड़ी चिड़िया उस जगह पर उड़ती हुई आयी जहाँ वह सो रहा था। सो वह डर के मारे अपने को उससे बचाने के लिये वहाँ से भाग कर एक पेड़ के खोखले तने में घुस गया। चिड़िया ने भी उसको छोड़ा नहीं वह उसके चारों तरफ चक्कर काटती रही और सैयद की तरफ बड़े प्यार से देखती रही।

सैयद ने सोचा “आखिर यह चिड़िया मेरे साथ क्या करना चाहती है। क्या यह मुझे खाना चाहती है।”

वह ऐसा सोच ही रहा था कि वह चिड़िया उस खोखले पेड़ के सामने जमीन पर बैठ गयी और उसकी तरफ देखा। फिर वह बोली — “एक आदमी इस टापू पर आया है। वह बहुत दुख में है बहुत परेशान है। अगर उसने मेरी बात नहीं सुनी तो वह मर जायेगा। मैं उसके बारे में बहुत चिन्तित हूँ।

अगर वह मेरी भाषा समझ रहा है तो वह मेरी टाँग पकड़ ले। मैं उसको ले कर कहीं और जहाँ लोग रहते होंगे उड़ जाऊँगी।”

अब सैयद तो उस चिड़िया ने जो कुछ भी कहा उसका एक एक शब्द समझ रहा था सो यह दिखाने के लिये कि वह उसकी बात समझ रहा था उसने उसकी एक टॉग अपने दोनों हाथों से पकड़ ली। तुरन्त ही चिड़िया ने अपने पंख फैलाये और सैयद को ले कर वहॉ से उड़ चली।

वह मीलों उड़ी और फिर एक बहुत सुन्दर से शहर में सैयद को छोड़ कर वहॉ से उड़ गयी।

चिड़िया को देखने के लिये शहर के बहुत सारे लोग वहॉ इकट्ठे हो गये थे। पर चिड़िया तो उड़ गयी थी वहॉ तो अब केवल सैयद ही खड़ा था सो उन लोगों ने सैयद से ही बहुत सारे सवाल पूछने शुरू कर दिये।

"तुम यहॉ कैसे आये?" "तुम्हारा नाम क्या है?" "तुम कहॉ से आये हो तुम्हारा घर कहॉ है?"

सैयद ने उनके इन सब सवालों का ठीक ठीक जवाब दे दिया। उसके जवाबों ने वहॉ के लोगों के दिलों को इतना छू लिया कि वे उसके लिये कपड़े और खाना ले कर आ गये और उसको अपने घर रहने के लिये कहा जब तक उसका कोई और इन्तजाम न हो जाये।

उसके वहॉ पहुॅचने के कुछ दिनों बाद ऐसा हुआ कि वहॉ के राजा की बेटी के बहुत ज़ोर से सिर में दर्द हुआ जो किसी तरह से ठीक ही नहीं हो रहा था।

शहर के सारे डाक्टर बुलाये गये पर कोई भी उसके सिर दर्द का इलाज न कर सका। उसे कई दवाइयाँ खिलायी गयीं पर कोई दवा काम नहीं की। उसका वह भयानक सिर दर्द चलता रहा।

अब राजा को अपनी बेटी की ज़िन्दगी की चिन्ता होने लगी सो उसने सारे राज्य में मुनादी पिटवा दी कि जो कोई राजकुमारी का सिर दर्द ठीक कर देगा वह उसे अपना आधा राज्य दे देगा और अपनी बेटी की शादी उससे कर देगा।

सैयद को यह सुन कर बहुत ख़ुशी हुई। अब उसको अपने सामने इज़्ज़त शान और ताकत का रास्ता खुलता दिखायी दिया। वह तुरन्त ही महल की तरफ चल पड़ा।

महल के दरवाजे पर पहुँच कर उसने चौकीदार से कहा कि वह राजा को खबर दे कि दरवाजे पर एक आदमी खड़ा है जो महल में आने की इजाज़त चाहता है। वह कहता है कि वह राजकुमारी का सिर दर्द ठीक कर देगा।

राजा ने जब सैयद का यह सन्देश सुना तो चौकीदार से कहा कि उस आदमी को तुरन्त यहाँ ले कर आओ।

सैयद राजा के पास गया तो राजा ने सैयद से पूछा — "ओ लड़के क्या तुम्हारे पास मेरी बेटी के सिर के दर्द की दवा है? मेरे राज्य के कई डाक्टरों ने उसको कई दवाइयाँ दे कर देख लीं पर उसे किसी से भी फायदा नहीं हुआ। तुम्हारे पास उनकी दवाओं से

अच्छी ऐसी कौन सी दवा है जो तुम यह दावा करते हो कि तुम उसका सिर दर्द ठीक कर दोगे?"

सैयद बोला — "योर मैजेस्टी मेरे पास बहुत अच्छी दवा है। आप राजकुमारी जी को बुलायें। अल्लाह ने चाहा तो पाँच मिनट के अन्दर अन्दर वह ठीक हो जायेंगी।"

"अल्लाह तुम्हारी भाषा सफल करें।" कह कर राजा ने अपनी बेटी को बुलाया।

राजकुमारी बहुत ज़ोर ज़ोर से कराहती हुई वहाँ आयी। वह बहुत कमजोर और परेशान दिखायी दे रही थी। सैयद ने उसको उस पेड़ की चूरा की गयी छाल का लड्डू देते हुए कहा जिस पर पहली चिड़िया बैठी थी —"इसे ज़ोर से सूँघो।"

राजकुमारी ने उसको ज़ोर से सूँघा तो तुरन्त ही उसका सिर दर्द चला गया। राजा राजकुमारी और जितने भी लोग वहाँ मौजूद थे सभी यह जादू देख कर आश्चर्यचकित रह गये।

राजा ने सैयद से पूछा कि वह कौन था। उसके राज्य में कब आया था। और वहाँ वह आया ही क्यों था। सैयद ने उसको सब कुछ बता दिया। उसकी कहानी सुन कर राजा को उसमें बहुत रुचि हो गयी। यहाँ तक कि उसने अपने नौकरों को अपने महल में ही उसके लिये कमरे तैयार करने का हुक्म दिया।

समय आने पर उसने अपनी बेटी की शादी उससे कर दी और दहेज में आधा राज्य भी दे दिया। धीरे धीरे सैयद पूरे राज्य पर ही

राज करने लगा क्योंकि राजा अब बूढ़ा हो चला था और अपनी इस ज़िन्दगी से छुटकारा पाना चाहता था।

अपनी इस इज़्ज़त मिलने और अमीर बनने में सैयद उस सुन्दर लड़की को नहीं भूला था जिसने उसके साथ इतना बुरा व्यवहार किया था।

उससे उसकी बदला लेने की बड़ी इच्छा थी। उसकी वह इच्छा इतनी बढ़ी कि वह अपने ससुर के पास गया और उससे प्रार्थना की कि वह उसको जाने दे ताकि वह उन डाकुओं को सजा दे सके जिन्होंने रास्ते में उसकी सारी सम्पत्ति हड़प ली थी।

राजा पहले तो उसको यह इजाज़त देने से कुछ हिचकिचाया पर जब सैयद ने उससे बार बार प्रार्थना की तो उसने उसको इजाज़त दे दी।

सैयद ने अपने साथ बहुत सारे आदमी लिये बहुत सारा पैसा लिया और सीधा उस लड़की के घर चल दिया जिसने उसको धोखा दिया था।

उससे मिलने पर उसने उससे कहा — "प्रिये मैं तुम्हें कहाँ कहाँ नहीं ढूँढता रहा। तुम मुझे इस तरह बर्बाद होने के लिये वहाँ क्यों छोड़ आयीं। अगर अल्लाह की मेहरबानी मेरे ऊपर नहीं होती तो मैं आज यहाँ नहीं होता।"

लड़की बोली — "यह तो मेरा सबसे बड़ा पाप था। मैं बेवकूफ थी मैं डर गयी थी और जो भी मैंने तुम्हारे साथ किया मैं तुमसे उसके

लिये बहुत शर्मिन्दा हूॅ। मैं तुमसे प्रार्थना करती हूॅ कि तुम मुझे माफ कर दो।"

ये शब्द उस लड़की ने कॉपते हुए कहे क्योंकि अब उसे उससे डर लगने लगा था। उसने सोचा "मैं दो बार तो बच चुकी हूॅ पर कौन जानता है कि अब यह मेरे साथ क्या करेगा।"

एक रात जब वह लड़की सो रही थी तो सैयद ने वह लड्डू निकाला जो गधा बना देता था और उसकी नाक के नीचे लगा दिया। धीरे धीरे उसका शरीर एक गधे के शरीर में बदलने लगा। जैसे ही उसका शरीर गधे के शरीर में बदला उसने रेंकना शुरू कर दिया।

सैयद को यह देख कर बहुत खुशी हुई। उसने अपना बदला उससे ले लिया था। उसने घर की सारी चाभियॉ ढूॅढीं उसके सारे कमरे आलमारियॉ और बक्से खोले और अपना सामान ढूॅढा। उसको अपना सब सामान भी मिल गया और चिड़िया का सिर भी।

उनको उसने गट्ठर में बॉधा और अपने नौकरों को दे दिया और उनसे अगले दिन वहॉ से चलने के लिये तैयार रहने के लिये कहा। वह गधा भी उसने उन्हीं की देखभाल में रखवा दिया।

जब बूढ़ी दाई ने उसको अगले दिन जाते देखा तो पूछा — "तुम इतनी जल्दी क्यों जा रहे हो?"

वह बोला — "तुम्हारी मालकिन ने मेरा सारा सामान लूट लिया। अब मैं यहाँ रुक कर क्या करूँ।" कह कर वह वहाँ से भाग गया।

दाई बोली — "नहीं कभी नहीं। मेरी मालकिन ऐसा नहीं कर सकती। जरूर यह काम किसी दूसरे ने किया होगा। या फिर अगर मेरी मालकिन ने तुम्हारा यह पैसा लूटा है तो वह मजाक में लूटा होगा। और इसमें कोई शक नहीं है कि वह उसे तुम्हें जल्दी ही लौटा देगी।

तुम मत जाओ मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ। मेरी मालकिन जब आयेगी और उसे पता चलेगा कि तुम छोड़ कर चले गये हो तो वह बहुत नाराज होगी।"

सैयद बोला — "मैं अब कुछ नहीं कर सकता मैं जा रहा हूँ।"

दोपहर तक सैयद चलता रहा और दोपहर को उसने कुछ बड़े पेड़ों के नीचे आराम किया जो एक सुन्दर नदी के किनारे लगे हुए थे।

उसने अपने पास खड़े एक नौकर से कहा कि वह उसको थोड़ा पानी ला कर दे। जब नौकर पानी लाने जा रहा था तो एक गाँव वाला चिल्लाया — "यह पानी तुम अपने मालिक को मत देना। यह बहुत ही तेज़ जहर है। तुम्हारे मालिक या कोई और भी इसका एक घूँट भी बरदाश्त नहीं कर पायेगा। यहाँ से कुछ दूर ऊपर की तरफ चले जाओ वहाँ तुम्हें पीने के लायक पानी मिल जायेगा।"

सो वह नौकर नदी के ऊपर की तरफ चल दिया। इधर सैयद ने देखा कि उसके नौकर को पानी लाने में देर हो रही है। इस देरी की वजह न जानते हुए सैयद उससे बहुत गुस्सा था और बहुत जल्दी में था।

सो उसने उससे पूछा — "तुमने इतनी देर कहाँ लगा दी?"

नौकर बोला — "मालिक जब मैं वहाँ से पानी ले रहा था तो एक गाँव वाले ने मुझसे वहाँ से पानी लेने मना किया। उसने कहा वहाँ का पानी जहरीला है। उसने यह भी कहा कि मैं नदी के ऊपर की तरफ जाऊँ और आपके पीने के लिये वहाँ से पानी ले कर आऊँ। मुझे इसी लिये देर हो गयी सरकार।"

सैयद बोला — "यह तो बड़ी अजीब सी बात है। गाँव के किसी आदमी को बुलाओ और इसकी वजह पता लगाओ।"

गाँव के कई लोगों को बुलाया गया और उनसे वहाँ के पानी के जहरीले होने की वजह पूछी गयी पर कोई भी उसकी ठीक वजह न बता सका। सारे गाँव वाले बस इतना ही जानते थे कि उस नदी में एक खास जगह का पानी जहरीला था।

सो सैयद ने वहाँ उस जगह को खोदने का हुक्म दिया। उसने गाँव से कुछ मजदूर बुलवाये और उनको उस जगह को खोदने पर लगा दिया। वहाँ की खुदी हुई मिट्टी उसने गधे पर लदवा कर दूर गड़वा दी। इस तरह उस नदी का पानी साफ करवा दिया गया। लोग उसके इस काम से बहुत खुश हुए।

गधे ने पूछा — “तुमने मुझे इतना नीचा काम करने के लिये क्यों दिया। क्या तुम्हारे लिये यही काफी नहीं था कि तुमने मुझे जानवर में बदल दिया। यह और बोझा मेरे सिर पर क्यों।”

सैयद ने उसकी किसी बात का जवाब नहीं दिया। अगले दिन उसने फिर अपनी यात्रा शुरू की और सीधा अपने ससुर के राज्य में ही जा कर रुका।

उसको देख कर शहर में बहुत खुशियाँ मनायी गयीं। उसने वहाँ बहुत अक्लमन्दी से राज्य किया और जल्दी ही वहाँ का बहुत लोकप्रिय राजा हो गया।

कुछ समय बाद जब वह बहुत लोकप्रिय हो गया और उसकी बहुत इज़्ज़त हो गयी जो एक सुन्दर और नीच लड़की को आकर्षित कर ले तो उसने उस गधे को फिर से लड़की में बदलने का निश्चय किया।

सो उसने उसको दूसरा लड्डू सूँघने के लिये दिया। दूसरा लड्डू सूँघते ही वह फिर से सुन्दर लड़की बन गयी। उसने पूछा — “प्रिय तुमने मेरे साथ ऐसा क्यों किया।”

सैयद बोला — “क्योंकि मैं तुम्हें पाठ पढ़ाना चाहता था। अब तुम मेरी ताकत के बारे में जानो और जानो कि मेरे खिलाफ जाना कितना खतरनाक है। साथ में मेरा प्यार भी देखो। मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारे लायक एक घर बनवा रखा है। तुम वहाँ जा कर रहो और जो तुम्हें चाहियेगा वह तुम्हें वहाँ मिल जायेगा।”

वह लड़की राजी हो गयी और फिर हमेशा के लिये सैयद की वफादार रही।

सैयद और सईद मिले

अब सैयद ने अपने भाई को ढूँढने में अपनी सारी कोशिशें लगा दीं। उसने अपने कई दूत दुनियाँ भर में भेजे और उसको बहुत सारा इनाम देने का वायदा किया जो भी उसके भाई को ढूँढ कर लायेगा।

खुशकिस्मती से इनमें से एक दूत उस देश में जा पहुँचा जहाँ सईद राज कर रहा था। उसने उसे इस तरह से ढूँढा —

एक रात वह एक बूढ़ी विधवा की झोंपड़ी में रुका। उसको सईद से सहायता मिलती थी। उसने उससे पूछा — "माँ तुम अपना गुजारा कैसे करती हो।"

बुढ़िया बोली — "हाँ तुम यह पूछ सकते हो। जैसा कि तुम देख रहे हो मैं तो कुछ कर नहीं सकती पर हमारा राजा बहुत ही न्यायपूर्ण और अच्छा है। वह रोज बूढ़ों गरीबों और बीमार लोगों को दान देता है। अगर वह यह दान न देता तो हममें से बहुत लोग मर जाते। अल्लाह का शुक्र है राजा का शुक्र है।"

"तुम्हारा राजा कौन है। क्या वह इसी देश का है। उसके माता पिता कहाँ रहते हैं।"

बुढ़िया बोली — "यह तो मुझे पता नहीं। लोगों का कहना है कि वह कहीं दूर देश से आया है। जब वह अपने भाई के साथ आ

रहा था तो वह रास्ते में उससे बिछड़ गया। वह अपने भाई को बहुत प्यार करता था। उसने चारों तरफ अपने बहुत सारे दूत भेजे पर उसको अपने भाई और पिता के बारे में कोई खबर नहीं मिली।"

"क्या मैं तुम्हारे राजा से मिल सकता हूँ।"

"हॉ हॉ क्यों नहीं। राजा हर समय सबकी सुनता है। जो भी चाहे उसके पास कभी भी जा सकता है और उससे बात कर सकता है।"

सो अगले दिन सुबह जैसे ही उसने सुना कि राजा जाग गया वह महल गया और प्रार्थना की वह राजा से मिलना चाहता है। नौकर ने सोचा कि वह शायद किसी खास काम से आया होगा सो वह उसको राजा के खास कमरे में ले गया।

वहॉ जा कर दूत ने राजा को बहुत नीचे तक झुक कर आदाब किया और बोला — "आपके भाई सैयद ने मुझे आपके पास भेजा है। अल्लाह ने उनको बहुत दौलत दी है और उनको एक बड़े और ताकतवर राज्य का राजा बना दिया है। पर उनको दिन और रात कभी भी चैन नहीं है जब तक वह आपके बारे में न जान लें।"

जब सईद ने यह सुना तो वह तो भाई के प्रेम में इतना डूब गया कि उसके मुॅह से तो बोली ही नहीं निकली।

उसने फिर कुछ देर तक दूत से बातें कीं फिर उसने अपने वज़ीर को बुलाया और उससे कहा कि वह उस दूत को बहुत बढ़िया

कपड़े पहनाये और देखे कि जो उसे चाहिये था वह उसको दे दिया जाये।

उसने वज़ीर को यह भी बताया कि उसको उसके कितने दिनों से खोये हुए भाई की खबर मिल गयी है। सैयद फलॉ फलॉ राज्य का राजा है और वह उसको तुरन्त ही देखने जाना चाहता है। सो उसकी यात्रा के लिये पूरा इन्तजाम किया जाये।

वज़ीर इस यात्रा के लिये कुछ अनमना था क्योंकि उस देश को जाने के लिये बीच में और कई देश पड़ते थे जिनके राजा राजा सईद के दुश्मन थे। इसलिये उन्होंने राजा से वहॉ न जाने के लिये कहा और केवल अपना सन्देश भेजने के लिये ही कहा क्योंकि उनको उसका भाई उससे ज़्यादा ताकतवर लगा।

सईद यह सुन कर बहुत नाउम्मीद हुआ हालॉकि यह जान कर खुशी हुई कि उसके वज़ीर बहुत अक्लमन्द थे। सो उसने दूत को तुरन्त ही अपने भाई के पास लौट जाने के लिये कहा और उसके बारे में सब कुछ बताने के लिये कहा। फिर उसको वापस आ कर उसको सब कुछ बताने के लिये कहा।

एक दो दिन आराम करने के बाद दूत वहॉ से चला गया। वह अपने देश सुरक्षित पहुॅच गया। वहॉ जा कर उसने अपने मालिक को बताया कि वह उनके भाई से मिल कर और उनको सुन कर आया है।

सैयद तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया उसने दूत को बहुत सारा इनाम दिया।

फिर उसने तुरन्त ही आसपास के देशों को जो उसके और उसके भाई के राज्यों के बीच में पड़ते थे जीतने का प्लान बनाया। उसने अपने भाई को खबर भेजी कि वह अपनी तरफ के देश जीत ले और वह अपनी तरफ के देश जीत लेगा।

क्योंकि वे दोनों ही अमीर और ताकतवर थे इसलिये उन देशों को उन्हें जीतने में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिये। और उन्होंने वे सब देश जीत लिये।

इन सब देशों को जीतने के बाद जब ये दोनों भाई मिले तो उनकी खुशी का अन्दाजा कौन लगा सकता है।

13 बेरहम सौदागर[48]

एक बार की बात है कि एक सौदागर था जो अपने नौकरों से बहुत ही बेरहमी का बर्ताव करता था। जब भी कोई उसके यहाँ नौकरी के लिये आता तो वह उसको इस शर्त पर अपने यहाँ नौकरी पर रखता कि अगर उसने कभी भी कोई बुरी भाषा इस्तेमाल की या वह गुस्सा हुआ तो उसकी नाक काट ली जायेगी।

अब नौकर लोग अपने मालिक से कोई ज़्यादा अच्छे तो होते नहीं थे तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि बहुत सारे नौकरों को उसकी नौकरी बिना नाक के ही छोड़नी पड़ी थी।

इनमें से उसका एक नौकर एक किसान था। क्योंकि उसकी अपनी खेती खराब हो गयी थी इसलिये उसको इस सौदागर की नौकरी करनी पड़ी।

यह आदमी पहाड़ों में रहता था जहाँ केवल मक्का ही उगती थी और कुछ नहीं। उस साल पानी बहुत कम बरसा सो उसकी मेहनत और पैसा दोनों ही बेकार गये।

वह एक बहुत ही अच्छे स्वभाव का आदमी था। अगर कोई आदमी उस सौदागर के यहाँ अपनी नौकरी जारी रख सका तो बस

[48] The Cruel Merchant (Tale No 13)

वह केवल यही आदमी था। मगर अफसोस यह भी उसके यहाँ बहुत दिनों तक नौकरी नहीं कर सका।

एक दिन की बात है कि किसी बात को ले कर वह बहुत परेशान था। वैसे तो उसका मालिक उससे जो कुछ भी कहता था वह वह कर देता था। पर उस दिन सौदागर ने उससे कुछ बुरे काम करने को कहा और उसको गुस्सा होने के लिये भी उकसाया। इससे वह गुस्से में बोला तो तुरन्त ही उसने उसकी नाक काट ली।

इस किसान का एक भाई भी था। उसको अपने भाई को बिना नाक के देख कर बहुत दुख हुआ सो उसने उस सौदागर से इसका बदला लेने की सोची। वह सौदागर के पास गया और उससे नौकरी की माँग की।

सौदागर बोला — "ठीक है। मैं तुम्हें काम पर रख लेता हूँ पर मेरी एक शर्त है कि अगर तुम कभी भी कुछ बुरा बोलते या गुस्सा होते पाये जाओगे तो तुम्हारी नाक काट ली जायेगी।"

भाई बोला — "मैं आपकी शर्त मंजूर करता हूँ आगर आप भी ऐसी ही शर्त मानें तो।"

सौदागर बोला — "मुझे मंजूर है।"

भाई ने सोचा कि अगर यह प्लान एक आदमी के ऊपर काम करता है तो दूसरे के ऊपर भी काम करना चाहिये।

काफी दिनों तक यह प्लान काम करता रहा। मालिक और नौकर दोनों ही अपने अपने शब्दों और कामों के बारे में सावधान रहे। और स्वभाव के ऊपर काबू रखे रहे।

पर एक दिन सौदागर ने भाई को कहा कि वह जल्दी से उसके बेटे को कपड़े पहना दे। भाई तुरन्त ही गया और मालिक के बेटे को कपड़े पहनाते समय उसको थोड़ा इधर उधर खींचा जिससे वह इधर उधर भागने लगा।

बेटे को उसका यह व्यवहार अच्छा नहीं लगा सो वह वहीं से चिल्लाया — "ओ पिता जी ओ माँ।"

सौदागर ने पूछा — "अरे तुम क्या कर रहे हो।"

भाई ने जवाब दिया — "जबकि मैं इसे कपड़े पहना रहा हूँ तो यह लड़का इधर उधर नहीं भाग रहा बल्कि बैठना चाहता है।"

अब मालिक ने तो उसको बच्चे को जल्दी से कपड़े पहनाने के लिये कहा था और इसका मतलब बीस में से उन्नीस लोग तो समझेंगे भी यही पर इन शब्दों से यह मानी भी निकलता था कि "इधर उधर दौड़ो और बच्चे को कपड़े पहनाओ।"

सो भाई ने यह सोच कर कि उसका मालिक उस पर नाराज हो जायेगा उसका यह दूसरा मानी ले लिया। वह मालिक को नाराज करने में सफल हो गया।

एक दूसरे मौके पर सौदागर अपने पूरे परिवार के साथ किसी जगह कुछ दिन के लिये ठहरने के लिये गया। वहाँ एक मेला लगने वाला था। यह भाई भी उनके साथ गया था।

सौदागर ने भाई को तो घर की देखभाल के लिये छोड़ा और जाने से पहले उसको घर के दरवाजों और खिड़कियों की देखभाल की खास हिदायत दी। भाई ने मालिक को वफादारी से ऐसा करने का वचन दिया।

मालिक को मेला देखने के लिये गये हुए कुछ ही देर हुई थी कि भाई का मन भी मेला देखने के लिये करने लगा। सो उसने घर का फर्नीचर और दूसरा सामान एक बड़े से गड्ढे में रख दिया। फिर उसने कई कुलियों को बुलाया और उनके ऊपर घर के दरवाजों और खिड़कियों को लाद कर मेले चल दिया।

सौदागर के आश्चर्य की तो सीमा ही नहीं रही जब उसने अपने नौकर को मेले में देखा और उसके साथ उसके पीछे आते कई कुलियों को दरवाजे और खिड़कियाँ उठा कर लाते देखा।

गुस्से के मारे उसका पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया। वह चिल्लाया — "ओ बेवकूफ यह तूने क्या किया।"

भाई नर्मी से बोला — "सरकार मैंने तो आपके हुक्म का पालन किया है। आपने मुझसे दरवाजे और खिड़कियों की ठीक से देखभाल करने के लिये कहा था।

आपके जाने के बाद मेरी भी मेला देखने की इच्छा हुई तो मैंने सोचा कि ये मेरे साथ ही सबसे ज़्यादा सुरक्षित रहेंगे सो मैं इनको अपने साथ ही ले आया। आपका फर्नीचर भी सुरक्षित है मैंने उसको एक बड़े से गड्ढे में छिपा दिया है।"

सौदागर चिल्लाया — "अरे बेवकूफ।" और उसके चेहरे पर एक चॉटा मारा।

भाई उसकी गरदन पीछे से पकड़ कर और उसकी नाक काट कर बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा और बोला — "अब हम बराबर हो गये। अब मैं जा कर यह सब अपने भाई से कहता हूॅ।"

14 शीराज़ का एक आदमी[49]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार एक शीराज़ी काश्मीर घूमने गया। वहॉ जा कर वह अपने किसी दोस्त से मिलने गया और उसके घर तीन दिन ठहरा।

इस दोस्त को अपनी मेहमाननवाज़ी पर बहुत घमंड था। सो उसने अपने मेहमान की खातिर करने के लिये शाम को एक बहुत शानदार दावत का इन्तजाम किया।

जब वे खाना खा रहे थे तो उसको यह आशा थी कि उसका मेहमान उसके खाने की तारीफ करेगा। शीराज़ी ने भी यह भॉपते हुए कि उसका दोस्त उससे क्या आशा कर रहा था कुछ देर बाद बोला — "तुम्हारा खाना बहुत अच्छा था बहुत ही अच्छा था पर हमारे देश के खाने से इसका कोई मुकाबला नहीं था।"

फिर कुछ और बातें हुईं और दोनों उठ गये। शीराज़ी का दोस्त शीराज़ी की इस बात पर इतना परेशान हुआ कि रात को उसे नींद नहीं आयी। सारी रात वह उसको उससे भी अच्छा और मॅहगा खाना खिलाने के बारे में सोचता रहा।

सुबह होने से पहले ही वह उठा और अपने रसोइये को बुला कर उसको ऐसा खाना बनाने का हुक्म दिया जो उसने सोचा कि वह

[49] The Man From Shiraz (Tale No 14)

खाना उसके दोस्त के देश में खिलाये जाने से यकीनन ज़्यादा अच्छा होगा।

सब चीज़ों के बनाने के लिये उसने उसको बड़ी बारीकी से समझाया ताकि उसका दोस्त यह कह सके कि कम से कम वह खाना उसके देश में खिलाये जाने के बराबर का था। और अगर ऐसा हुआ तो उसने रसोइये को दस रुपये इनाम देने का वायदा किया।

पर उसकी यह कोशिश भी भी बेकार ही गयी। उसका उस दिन का खर्चा और तैयारियाँ उसके खाने को उसके दोस्त के देश के खाने के मुकाबले तक का न ला सकीं। उस दिन भी शीराज़ ने उस खाने को अपने देश के खाने से नीचा बताया।

इसमें रसोइये का कोई दोष नहीं था। इससे अच्छा खाना तो न कोई बना सकता था और न किसी को खिला सकता था।

शीराज़ के काशमीरी दोस्त ने सोचा कि शायद उसका यह रसोइया कुछ अच्छा खाना नहीं बना पाया सो उसने तीसरे दिन एक और अच्छे रसोइये को बुलाया और उससे पहले दो दिनों से भी ज़्यादा और ज़्यादा अच्छा खाना बनाने के लिये कहा। साथ में उसने उससे यह भी कहा कि अगर उसके मेहमान को उसका खाना पसन्द आया तो वह उसको बीस रुपये इनाम के देगा।

इस पर भी शीराज़ी ने यही कहा — "दोस्त हमारे देश में जैसा खाना बनता है यह उसके मुकाबले का नहीं है।"

तीन दिन बाद शीराज़ी अपने देश वापस चला गया। कुछ साल गुजर गये। एक दिन शीराज़ी का काश्मीरी दोस्त घूमते घूमते शीराज़ी के देश पहुँच गया। वहाँ वह शीराज़ी के घर ठहरा।

शीराज़ी उसको देख कर बहुत खुश हुआ और उसकी बड़ी आवभगत की। उसने भी अपने दोस्त अपने घर में कम से कम तीन दिन रुकने की प्रार्थना की जो उसके दोस्त ने मान ली।

हाथ मुँह धो कर कपड़े बदलने के बाद दोनों दोस्त पाइप पीने बैठे और बातें करने लगे। इस बीच खाना बन कर तैयार हुआ। शीराज़ का दोस्त इस आशा में बैठा रहा कि देखें इसके घर में कैसा खाना बन कर आता है। किस तरह शीराज़ का खाना मेरे खाने से ज़्यादा अच्छा है।

आखिर खाने का समय हुआ और खाना लगा। काश्मीरी का गुस्सा और आश्चर्य तो सातवें आसमान पर पहुँच गया जब उसने देखा कि वहाँ तो उसके सामने केवल चावल की एक बड़ी प्लेट थी जिस पर इधर उधर कुछ सब्जियाँ पड़ी हुई थीं।

पहले तो उसको लगा कि वह सपना देख रहा है फिर उसने यह पक्का करने के लिये अपनी ऑखें मलीं कि वह वाकई सपना देख रहा है या नहीं। उसने देखा कि वह सपना नहीं देख रहा। चावल और सब्जी से भरी हुई प्लेट अभी तक उसके सामने ही थी। उसने फिर से अपनी ऑखें मलीं अपनी उँगलियाँ भी चटकायीं पैर फैलाये पर उसके सामने अभी भी वही प्लेट रखी हुई थी।

इसमें अब उसे कोई शक नहीं रह गया था। तो यह था उसका खाना जो उसने उसकी मेहमानदारी में तैयार करवाया था? उसने सोचा कि शायद यह खाना उसने जल्दी में तैयार करवाया होगा इसलिये ऐसा होगा। कल को वह उसके लिये और शानदार खाना तैयार करवायेगा।

कल भी आया फिर तीसरा दिन और फिर चौथा दिन। इन सारे दिनों में वही खाना उसके सामने लाया गया। आखिरी दिन जब शीराज़ी के दोस्त ने खाना खाया तो उससे शीराज़ी से यह पूछे बिना न रहा गया कि उसकी दावतें शीराज़ी के खाने से किस तरह से नीची थीं।

शीराज़ी बोला — "हम शीराज़ के लोग बहुत सादे से लोग हैं। हम अपने देश और अपने घर में मेहमानों का स्वागत करते हैं। तुमने हमको देखा हमारे साथ खाना खाया – परसों भी कल भी और आज भी। हम लोग हमेशा इसी तरह से रहते हैं।

पर जो खाना तमने मुझे खिलाया वह केवल एक दिन के लिये तो ठीक था पर कोई भी आदमी वैसा खाना हमेशा नहीं खा सकता क्योंकि इस तरह से खिलाने वाले की जेब भी बहुत जल्दी खाली हो जायेगी और मेहमान का पेट भी बहुत जल्दी खराब हो जायेगा।

दोनों ही हालतें खराब होंगी। इसी लिये मैंने तुमसे वहाँ यह कहा था। मुझे यकीन है कि तुम मेरी बात की सच्चाई को समझ रहे होगे।"

काशमीरी दोस्त उसकी बात समझ गया और उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

15 शबरंग राजकुमार और चोर[50]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार काश्मीर में एक राजा राज करता था। उसको शिकार का बहुत शौक था। एक दिन जब वह जंगल में कुछ दूर शिकार करने गया तो उसको एक ऐसा जानवर मिल गया जिसको वह मारना चाहता था। सो वह उसके पीछे भाग लिया और इतनी तेज़ भागा जैसे कि वह पहले कभी नहीं भागा था और शायद फिर कभी भागेगा भी नहीं।

उसने उस जानवर को बार बार मारने की कोशिश की पर हर बार उसका निशाना चूक गया। वह उसको मारने के लिये उतावला हो रहा था जिसकी वजह से वह उसके पीछे और तेज़ भागा।

वह उसके पीछे इतनी दूर तक भागा कि उसके नौकर उससे बहुत पीछे छूट गये। वे इतने पीछे छूट गये कि न तो वे उसको दिखायी ही दे रहे थे और न ही उनको वह सुन सकता था।

आखिरकार भागते भागते वह थक गया और और आगे न भाग सका सो वह रुक गया। उसने देखा कि वह तो एक बहुत सुन्दर बागीचे में निकल आया था। उस बागीचे के साथ साथ ही एक सड़क जाती थी जिस पर एक लड़की अकेली चली जा रही थी।

[50] Shabrang Prince and Thief (Tale No 15)

राजा उसको देख कर बोला — "यकीनन शादी के बाद तुम्हारे जैसी पत्नी को मैं यहाँ जंगल में अकेली छोड़ सकूँगा।"

लड़की कुछ गुस्से से बोली — "क्या सचमुच? मैं किसी तुम जैसे से शादी करूँगी उससे एक बेटा पैदा करूँगी जो तुम्हारी ही बेटी से शादी करेगा।"

उसके इस तुरत और होशियार जवाब से राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ और वह बागीचा छोड़ कर अपने घर चला गया। अपने घर आ कर उसने उस सुन्दर लड़की के बारे में जानकारी हासिल करने की कोशिश की।

कोई भी उसके बारे में कुछ भी नहीं बता सका सो उसने अपना एक आदमी उसके बारे में पता लगाने के लिये भेजा। उस आदमी ने आ कर बताया कि वह लड़की कोई राजकुमारी थी और अक्सर ही उस बागीचे में जाया करती थी जहाँ राजा ने उसको देखा था क्योंकि उस बागीचे में बहुत सुन्दर फूल खिले थे क्रिस्टल के फव्वारे लगे थे और सुन्दर छायादार पेड़ थे।

जब काश्मीर के राजा ने यह सुना तो वह बोला कि वह उसी से शादी करेगा। उसने अपने कुछ आदमियों को जो शादी कराने में बहुत होशियार थे तुरन्त ही इस शादी को पक्का करने के लिये भेज दिया।

वे आदमी तुरन्त ही चल दिये और जैसे ही वे राजकुमारी के देश पहुँचे तो उन्होंने वहाँ के राजा से मिलने की इच्छा प्रगट की।

वहॉ पहुॅच कर उन्होंने उसको झुक कर प्रणाम किया और कहा कि हम अपने राजा की तरफ से एक खास वजह से आपके पास आये हैं। वह वजह हम आपको सबके सामने नहीं बता सकते।

हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमसे अकेले में बात करें जहॉ केवल आप और आपके महामन्त्री जी हों।

राजा राजी हो गया और उसने तुरन्त ही सबसे वहॉ से जाने के लिये कहा। जब राजा और उसका महामन्त्री वहॉ रह गये तो उन आदमियों ने एक बार फिर उसको सिर झुका कर कहा — "ओ महान राजा भगवान आपकी उम्र लम्बी करे। आपके देश में हमेशा शान्ति रहे आपका राज्य धनवान रहे और आपके सारे दुश्मन आपसे दूर रहें।

हमको हमारे काश्मीर के भले और कुलीन राजा ने अपने लिये आपकी बेटी के रिश्ते के लिये भेजा गया है जिसकी सुन्दरता के चर्चे दूर दूर तक फैले हुए हैं। वह उसकी सुन्दरता और उसके गुणों को जानते हैं। उनको दिन रात चैन नहीं है जब तक कि आप उनकी इच्छा पूरी न कर दें। हमारे राजा की अच्छाइयॉ ताकत और धन सम्पत्ति तो आपसे छिपी नहीं है।

हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप इस शादी की इजाज़त दे कर हमको यहॉ से जाने की इजाज़त दें।"

राजा थोड़ी देर रुक कर बोला — "तुम लोगों ने जो कुछ कहा वह मैंने सुना। मैं कल तुम्हारी बात का जवाब दूॅगा।"

अगले दिन उसने अपनी पत्नी और वजीर से सलाह की। दोनों ने उस रिश्ते के लिये हामी भर दी तो उसने उन आदमियों को बुलवाया और उनसे कहा कि वे अपने राजा से कह दें कि हमें उनका रिश्ता मंजूर है। ठीक समय पर दोनों की शादी कर दी जायेगी।

जब काश्मीर के राजा ने अपने आदमियों से यह समाचार सुना तो वह तो खुशी से पागल सा हो गया और उसने उन आदमियों को बहुत सारी भेंटें दीं।

कुछ दिनों बाद राजकुमारी के पिता ने राजा को बुला भेजा। अच्छा दिन करीब ही था सो राजा को तुरन्त ही बुला लिया गया। राजा ने अपने साथ अपने कुछ अक्लमन्द मन्त्री और दरबारी लिये कुछ सेना ली बहुत सारे चमकीले रंग के कपड़े पहिने लोग लिये कीमती घोड़े लिये जिन पर बहुत सारी भेंटें लदी थीं और राजकुमारी के देश चल दिया।

बिना किसी खास घटना के वह राजकुमारी के देश पहुँच गया जहाँ राजकुमारी के पिता ने उसका बहुत अच्छा स्वागत किया।

एक दो दिन बाद ही राजा की शादी हो गयी। कहने की बात नहीं कि राजा की शादी बहुत ही शानदार तरीके से हुई। राजा का महल ऐसा लग रहा था जैसे कि सोने चाँदी और जवाहरात का ढेर पड़ा हो।

भिखारियों को बहुत सारा चावल दान में दिया गया जो वहाँ देश के कई हिस्सों से आये थे। दुलहा और दुलहिन दोनों ही बहुत सुन्दर लग रहे थे। सब काम बड़े शानदार तरीके से हो गया सभी लोग बहुत खुश थे।

शादी के बाद राजा अपनी रानी के साथ अपने घर आ गया। घर आ कर उसने अपनी नयी रानी को अपनी दूसरी रानियों के साथ अपने जनानखाने में रख दिया। पर यह बड़ी अजीब सी बात हुई कि ये कुछ दिन उसने बिना अपनी रानी को देखे और बिना बात किये हुए ही निकाल दिये।

रीति रिवाजों के अनुसार कुछ दिनों बाद राजकुमारी के पिता ने राजकुमारी को अपने घर बुला भेजा। राजकुमारी अपने पिता के घर चली गयी। वह वहीं रही। उसने अपने पति के इस अजीब से व्यवहार के बारे में किसी से कुछ नहीं कहा सिवाय अपनी माँ के।

हालाँकि उसने अपनी माँ को सब कुछ बतला दिया था यहाँ तक कि वह बागीचे वाली घटना भी। साथ में उसने यह भी कहा कि उसे लगता है कि राजा ने गुस्से में आ कर उसके साथ ऐसा व्यवहार किया है।

माँ बोली — "तुम चिन्ता मत करो। सब कुछ ठीक हो जायेगा। थोड़ा इन्तजार करो।"

जब राजकुमारी को अपने पिता के घर में रहते रहते तीन साल हो गये और काश्मीर के राजा ने अपनी पत्नी के बारे में कोई

पूछताछ नहीं की तो राजकुमारी अपने पिता के पास गयी और उससे उसने यात्रा पर जाने की इच्छा प्रगट की कि वह घूमने जाना चाहती है। उसके साथ में जाने के लिये एक वजीर और कुछ सिपाही दे दिये जायें ताकि वह अपनी हैसियत के अनुसार यात्रा कर सके।

राजा ने पूछा — "तुम कहाँ जाना चाहती हो और क्या करना चाहती हो?"

राजकुमारी बोली — "मैं दूसरे देश घूमना चाहती हूँ खास कर के आपके आधीन जो राज्य हैं वे राज्य। और यह काम मैं आसानी से और खुशी खुशी कर सकूँ इसके लिये आपकी सहायता चाहती हूँ।"

राजा ने आश्चर्य से कहा — "पर तुम एक स्त्री हो जवान हो और सुन्दर हो। ऐसे तुम यह यात्रा कैसे कर सकती हो। जब लोग तुमको बिना तुम्हारे माता पिता के देखेंगे तो वे सब आश्चर्य करेंगे।

नहीं नहीं यह ठीक नहीं है मैं तुम्हें इस यात्रा की इजाज़त नहीं दे सकता। अगर मैं ऐसा करूँगा तो यह मेरी बहुत बड़ी गलती होगी।"

राजकुमारी बोली — "तब फिर मैं बिल्कुल अकेली ही चली जाऊँगी क्योंकि मैंने जो कुछ ठान लिया है वह तो मैं कर के ही रहूँगी।"

राजा कुछ दुखी हो कर बोला — "उफ़ अगर ऐसा है तो मुझे हाँ करनी ही पड़ेगी। पर तुम यह जान लो कि यह सब तुम्हें तुम्हारे

अपमान और मौत की तरफ ले जायेगा जिसको सुन कर मुझे बहुत तकलीफ पहुँचेगी। फिर भी मैं कहूँगा कि तुम पास के देशों में ही जाना बहुत दूर मत जाना।"

राजकुमारी ने इस बात का वायदा किया और वहाँ से चली गयी। उसके जाने के बाद राजा ने अपना एक बहुत भरोसे का वज़ीर बुलाया और उसको राजकुमारी का प्लान बता कर कहा कि वह उस पर और उसके घूमने पर ठीक से नजर रखे।

कुछ दिन बाद राजकुमारी वहाँ से चल दी। उसके साथ राजा का वह भरोसे वाला वज़ीर था बहुत सारे सिपाही थे और नौकर चाकर थे।

सबसे पहले वह एक बहुत छोटे से देश में गयी जिसका राजा उसके पिता के आधीन था। सुनते ही कि बड़े राजा की बेटी आयी है वह उससे मिलने गया और उसको बड़ी इज़्ज़त के साथ उसको अपने राज्य में ले कर आया। उसके स्वागत में उसने एक बहुत बड़ी दावत का भी इन्तजाम किया।

राजकुमारी वहाँ कुछ दिन ठहरी और फिर अपनी यात्रा पर चल दी। इस तरह से उसने अपने राज्य के बराबर लगे हुए करीब करीब सारे देश घूम लिये और उन राजाओं और उनके राज्यों के बारे में जान लिया।

आखिर वह अपने पति के देश काश्मीर आ पहुँची। उसने उस देश को भी देखना चाहा – उसका दरबार उसका बाजार उसका व्यापार और भी कुछ जो उसके जानने लायक था।

सो उसने उस राजा को एक सन्देश भेजा कि वह उस राजा की बेटी है जिसको पहले कभी वह टैक्स दिया करता था। अभी वह शहर की दीवार के बाहर इन्तजार कर रही है और उस शहर को देखना चाहती है।

काश्मीर के राजा को जब यह सन्देश मिला तो उसने अपने वजीर और कुछ दूसरे लोगों को बुलाया और जहाँ राजकुमारी के डेरा पड़ा हुआ था उस तरफ तुरन्त ही रवाना हो गया।

आदर सहित वह उसको अपने महल में ले आया और अपने खास मेहमान के लिये उससे जो कुछ सबसे अच्छी मेहमाननवाजी हो सकती थी की।

उसको एक खास महल में ठहराया गया जिसकी दीवारों पर दुनियाँ के बेहतरीन परदे सजे हुए थे। जिसके फर्श पर कीमती कालीन बिछे हुए थे। उसको सबसे स्वादिष्ट खाना पेश किया गया। शाही नौकरों को हुक्म था कि वे वहाँ हमेशा वहीं उसके पास ही रहें। कभी उसको अकेला न छोड़ें।

इतना अच्छा इन्तजाम देख कर तो राजकुमारी दंग रह गयी और बहुत खुश हुई। शाम को उसने राजा को इस सबके लिये बहुत

बहुत धन्यवाद दिया और राजा से वायदा किया कि वह अपने पिता को इस बारे में सब कुछ बतायेगी।

अगले दिन बातों के बीच उसने काशमीर के राजा से कहा — “मैं आपसे अकेले में कुछ बात करना चाहती हूँ। आप कमरे में आइये।”

राजा ने सोचा कि शायद यह मेरे राज्य के सम्बन्ध में बड़े राजा का कुछ सन्देश लायी होगी जो इसे मुझे देना होगा सो वह कमरे में चला गया।

पर इधर क्या था कि राजकुमारी को उससे प्यार हो गया था सो यही कहने के लिये उसने उसको अकेले में बुलाया था ताकि वह उसको वहाँ जब तक राजकुमारी का जी चाहे रहने की इजाज़त दे दे और बराबर उससे मिलता रहे।

उसकी सुन्दरता और अच्छा व्यवहार देख कर राजा ने उसको इस बात की इजाज़त दे दी। अब वह अक्सर उसके पास आने लगा। इस तरह कई महीने बीत गये।

एक दिन राजकुमारी ने अपने देश जाने की इच्छा प्रगट की। उसकी दलील यह थी कि उसको और भी कई काम थे जिनको उसे करना था इसलिये वह अब जाना चाहती थी। फिर भी उसने वायदा किया कि वह जल्दी से जल्दी काश्मीर लौटेगी।

अपने प्यार की याद के लिये उसने राजा को अपनी एक अँगूठी दे दी और उससे उसकी एक अँगूठी और रूमाल माँगा। राजा ने उसको अपनी अँगूठी और रूमाल दे दिया और उसे चूम लिया।

राजकुमारी ने काश्मीर छोड़ा और तुरन्त ही अपने देश लौट आयी। उसको सही सलामत वापस आया देख कर सभी लोग बहुत खुश थे। राजा तो उसकी यात्रा का हाल सुनने के लिये बहुत ही उतावला हो रहा था। उसने यह भी स्वीकार किया कि वह उसकी इन देशों की यात्रा से बहुत खुश था।

रानी यानी उसकी माँ तो इसी बात से बहुत खुश थी कि उसकी बेटी को बच्चे की आशा हो गयी थी। उसने उन सबको मिलाने के प्लान भी बनाने शुरू कर दिये थे। समय पर राजकुमारी ने एक बेटे को जन्म दिया जिसका नाम शबरंग रखा गया।

जब राजा ने इस लड़के के जन्म के बारे में सुना तो वह बहुत नाराज हुआ क्योंकि उसने सोचा कि उसकी बेटी कहीं कुछ गलत काम कर के आयी है।

वह चिल्लाया — "यह सब उसकी बेहूदा इच्छाओं का नतीजा है। मुझे इतना भी बेवकूफ नहीं होना चाहिये था कि मैं उसको इस तरह जाने की इजाज़त देता। इसका तो चरित्र ही खराब हो चुका है। अब इसका पति इसके साथ कोई सम्बन्ध नहीं रखेगा और मेरी भी बदनामी होगी। उफ़ इस सबको देखने से तो अच्छा था कि मैं मर जाता।"

राजा की तेज़ आवाज सुन कर रानी वहॉ आयी और बोली — "ऐसी बात नहीं है। तुमने तो मुझसे पूछा ही नहीं कि इस बच्चे का पिता कौन है। जो इसका पिता होना चाहिये वही इसका पिता है। और ऐसा कुछ भी नहीं हुआ हे जिससे तुम्हारी या तुम्हारी बेटी की बदनामी हो।

जब यह देश घूमने गयी थी तब यह अपने पति के देश भी गयी थी। उस समय यह अपने आपको एक दूसरी लड़की बता कर उसके महल में रही। वहीं इसने उसका प्रेम जीत लिया। इससे जब यह वहॉ से चली तो राजा बहुत दुखी हो गया। और अब इसने उसके बच्चे को जन्म दिया है।

इसकी यात्रा का यही उद्देश्य था और इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिये इसने तुमसे घूमने की इजाज़त चाही थी।"

यह सुन कर राजा का दुख और गुस्सा दोनों एकदम से ही गायब हो गये। उसके परिवार में एक बेटा पैदा हुआ इसकी ख़ुशी से ही सारा परिवार ख़ुशी से भर गया और उसने अपनी बेटी की चतुराई और प्रेम की बहुत बड़ाई की।

धीरे धीरे बच्चा बड़ा होने लगा। दिनों दिन वह सुन्दर और होशियार होता जाता था और नयी नयी बातें सीखता जाता था। उसको सारी कलाओं और विज्ञान की शिक्षा दी गयी। वह बहुत बहादुर था और तलवार बहुत अच्छी चलाता था।

राजा अपने धेवते[51] से बहुत खुश था। उसने घोषणा की कि वह अब उसके वज़ीरों का सरदार बन सकता था। और फिर कुछ सालों बाद अगर उसके पिता ने उसको स्वीकार नहीं किया तो उसको वह अपनी राजगद्दी दे देगा।

मगर उसकी मॉ यानी राजकुमारी उसको एक चोर बनाने की जिद पर अड़ी थी। वह सोचती थी कि इस तरह की ट्रेनिंग से उसको अन्दर वे सब होशियारियॉ आ जायेंगी जिनकी उसको अपना उद्देश्य पूरा करने की जरूरत थी।

सो देश का एक सबसे बड़ा चोर बुलाया गया और उसको हुक्म दिया गया कि वह अपने हुनर की सारे भेद उसको सिखा दे। अगर राजा और राजकुमारी आदि उसकी कला से सन्तुष्ट हुए तो उसको भारी इनाम दिया जायेगा।

चोर ने कहा कि वह उसको अपनी कला के सारे भेद सिखाने की पूरी कोशिश करेगा और उसे आशा है कि कुछ ही महीनों में वह उसको दुनियॉ का सबसे बड़ा चोर बना देगा।

राजकुमारी बोली — "मैं खुद देखूॅगी कि जो तुम कह रहे हो वह सच है कि नहीं। अगर शबरंग फलॉ फलॉ पेड़ पर चढ़ सका और वहॉ से बाज़ के बिना जाने उसके अंडे चुरा सका तब मैं मानूॅगी कि तुमने उसको ठीक से चोरी करना सिखाया है।"

---

[51] Dhevataa is the grandson – son of the daughter (Dhevatee is its feminine)

चोर शबरंग को ले गया और उसको चोरी को सारे हुनर सिखा दिये फिर वह उसको शाही महल में ले कर आया और बोला — “जाओ और अपनी माँ की इच्छा पूरी करो।”

शबरंग तुरन्त गया और पल भर में ही उस पेड़ पर चढ़ गया जिस पर एक बाज़ अपने अंडे से रही थी। उसने इस होशियारी से बाज़ के नीचे हाथ डाल कर उसके अंडे चुरा लिये कि उसको पता ही नहीं चला। वह तो बहुत देर तक शान्त और बिना हिले डुले ही बैठी रही। शबरंग पेड़ से उतरा और उसके अंडे ला कर अपनी माँ को दे दिये।

राजकुमारी ने फिर एक मजदूर जो अपने घर की तरफ जा रहा था की तरफ इशारा करते हुए कहा — “बहुत अच्छे। पर शबरंग अब तुम जाओ और उस आदमी का पाजामा ले आओ।”

शबरंग तुरन्त ही वहाँ से चल दिया और एक मैदान के चारों तरफ चक्कर काट कर उसी रास्ते पर जिस पर वह आदमी जा रहा था उससे कुछ दूर जा कर बैठ गया और एक पेड़ के ऊपर की तरफ बड़े ध्यान से देखने लगा।

जब वह मजदूर पास आया तो हालाँकि उसका इस बात से कोई मतलब नहीं था फिर भी उत्सुकता से उसने पूछा — “अरे तुम ऐसे ऊपर क्या देख रहे हो?”

शबरंग बोला — “मैं भी कैसा बदनसीब आदमी हूँ। मेरी मूँगे की माला इस पेड़ के ऊपर है। मैं उससे खेल रहा था कि खेल खेल

में ही वह ऊपर जा कर लटक गयी। क्या तुम मेरी वह माला वहाँ से उतार दोगे। मैं तुम्हें दो रुपये इनाम दूँगा।"

"हाँ हाँ क्यों नहीं।" कह कर वह आदमी पेड़ के ऊपर चढ़ गया और शबरंग की बतायी गयी डाली की तरफ ऊँचे और ऊँचे चढ़ता गया। शबरंग ने सोचा था कि वह मजदूर पेड़ पर चढ़ने से पहिले अपना पाजामा उतार देगा पर उसने तो अपना पाजामा नहीं उतारा। उसने कहा कि उसको पाजामा उतारने की कोई जरूरत ही नहीं है।

सो अब शबरंग की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। वह अपनी माँ के पास खाली हाथ तो लौट नहीं सकता था। उसके हाजिर दिमाग ने काम किया। उसको एक सरकंडा[52] मिल गया तो उसने उसका एक सिरा चींटियों के घर की तरफ कर दिया जिससे काफी सारी चींटियाँ उसमें भर गयीं।

फिर उस सरकंडे को ले कर वह उस मजदूर के पीछे पीछे पेड़ पर चढ़ता रहा जब तक वह उससे एक दो गज की दूरी पर पहुँचा। मजदूर ने उसको अपने पीछे आते हुए देखा नहीं क्योंकि पेड़ घना था और चिड़ियों का और हवा का शोर मच रहा था।

मौका देख कर शबरंग ने उस सरकंडे का एक सिरा मजदूर के पाजामे में घुसाया और दूसरा सिरा अपने मुँह से लगा कर उसमें से

---

[52] Translated for the word "Reed". See its picture above.

हवा छोड़ दी। इससे उसमें भरी सारी चींटियाँ उसके पाजामे में घुस गयीं।

एकाध मिनट में ही बेचारे मजदूर की टॉग में खुजली मचने लगी। उसने नीचे झुक कर देखा तो उसकी टॉग पर तो चींटियाँ ही चींटियाँ थीं। उसको लगा कि जब वह पेड़ पर चढ़ रहा होगा तो किसी चींटी के घर से टकरा गया होगा। खैर अब तो वे वहाँ थीं सो उसने अपने पाजामे का नारा खोल दिया और उसे नीचे गिरा दिया।

यह देख कर शबरंग बहुत खुश हुआ। वह जल्दी जल्दी नीचे उतरा उसका पाजामा उठाया और उसको अपनी माँ के पास ले गया। राजकुमारी पाजामा देख कर बहुत खुश हुई और मास्टर चोर की तारीफ करते हुए बोली — "तुमको तुम्हारे गुरू ने बहुत अच्छा सिखाया है। अब मुझे तुम्हारे लिये कोई डर नहीं है।"

उसने मास्टर चोर को बहुत कीमती भेंट दी और उसको विदा किया।

कुछ दिन बाद ही एक दिन जब शबरंग कुछ और नौजवानों के साथ बागीचे में खेल रहा था एक नौजवान ने उससे पूछा कि तुम्हारा पिता कौन है। शबरंग को यह पता नहीं था सो यह सुन कर शबरंग बहुत गुस्सा हुआ और आश्चर्य में पड़ गया।

वह तुरन्त ही खेल छोड़ कर अपनी माँ के पास आया और हाँफते हुए उससे पूछा — "माँ बताओ मेरे पिता कौन हैं।"

राजकुमारी बोली — "बेटा तुम काश्मीर के राजा के बेटे हो जिनसे मेरी शादी हुई थी पर उन्होंने मुझे बड़ी बेरहमी के साथ छोड़ दिया।"

शबरंग बोला — "पर माँ यह सब तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? और मेरे नाना ने तुम्हारी इस बेइज़्ज़ती का बदला अपनी तलवार से क्यों नहीं लिया?"

राजकुमारी बोली — "जल्दी करने की जरूरत नहीं है। और अगर दूसरे साधन हाथ में हों तो किसी को घायल करने या मारने की भी बिल्कुल जरूरत नहीं है। अब तुम बहुत ही चतुर और होशियार बच्चे हो गये हो।

तुम अब अपने पिता के देश जाओ और वहाँ जा कर अपने पिता के प्रिय बन जाओ ताकि वह तुम्हें किसी ऊँचे ओहदे पर नियत कर दें और अपनी बेटी की शादी तुमसे करने के लिये तैयार हो जायें।

जब बात यहाँ तक पहुँच जाये तब तुम मुझे बुला लेना। मैं आ कर राजा को सब बातें बताऊँगी जिससे उनको यह विश्वास हो जायेगा कि वह गलती पर थे।

फिर शायद वह अपनी निकाली हुई पत्नी को अपने घर वापस बुला लें और अपने बहादुर और होशियार बच्चे को राजगद्दी दे दें।"

शबरंग बोला — "ठीक है। मैं इस काम के लिये अपनी पूरी भरसक कोशिश करूँगा।" और यह कह कर वह तुरन्त ही काश्मीर के लिये रवाना हो गया।

राजा के महल में जा कर उसने सबसे पहला काम यह किया कि उसने राजा के दरबान से दोस्ती की। उसकी यह दोस्ती इतनी बढ़ी कि वह दरबान शबरंग के लिये कुछ भी करने के लिये तैयार था।

एक दिन दरबान ने शबरंग से पूछा कि क्या वह राजा के महल में नौकरी करना चाहेगा। क्योंकि वह चाहता कि वह राजा के महल में राजा की सेवा करे। शबरंग ने उसको धन्यवाद दिया और कहा कि हॉ हॉ क्यों नहीं वह भी राजा के महल में राजा का काम करना पसन्द करेगा।

इस तरह दरबान ने शबरंग को राजा से मिलवाया और किसी भी काम के लिये जो भी राजा पसन्द करे उसकी होशियारियों की उसकी तन्दुरुस्ती की उसकी अक्लमन्दी की राजा से बहुत तारीफ की और उसको कोई नौकरी देने के लिये प्रार्थना की।

राजा शबरंग की शक्ल सूरत ढंग चाल और बोल चाल से बहुत प्रभावित हुआ और तुरन्त ही उसको अपना शाही नौकर रख लिया। उस ओहदे पर शबरंग ने सबका मन मोह लिया और बहुत जल्दी ही सबका बहुत प्यारा हो गया।

कुछ समय बाद उसने सोचा कि वह अपनी चोरी की शिक्षा को यहॉ इस्तेमाल करके देखे। सो कभी कभी रोज और कभी कभी

तीसरे चौथे दिन रात को वह चोरी करने निकल जाता। वह शहर में इधर उधर चोरी करने निकलता और जहाँ कहीं भी उसको चोरी करने का मौका मिलता वह चोरी करता और चोरी की गयी चीज़ को एक मैदान में एक गड्ढे में छिपा देता।

यह उसको उसके रोजमर्रा के काम में कुछ दखल नहीं देता था। हर सुबह वह अपने काम पर नियमित रूप से पहुँच जाता।

धीरे धीरे बहुत सारे लोगों का पैसा और कीमती चीज़ें चोरी होने लगीं और चोर का कोई पता नहीं चला तो सब लोगों ने मिल कर राजा से प्रार्थना की कि वह अपनी पूरी कोशिशों के साथ चोर का जल्दी से जल्दी पता लगाये और फिर उसको सजा दे।

राजा को यह सुन कर बहुत दुख हुआ कि उसके राज्य में इस तरह चोरियाँ हो रही थीं। उसने अपने कोतवाल[53] को बुलाया और उसको उसकी लापरवाही को लिये बहुत डाँटा और तुरन्त ही चोर का पता लगाने के लिये कहा।

कोतवाल ने इस बात पर बहुत अफसोस प्रगट किया और राजा से वायदा किया कि वह जल्दी ही चोर का पता लगाने की कोशिश करेगा।

उस रात उसने चोर को पकड़ने की खास कोशिश की। हर सड़क पर पुलिस के लोग तैनात कर दिये गये और उनको सख्त

[53] Translated for the word “Deputy Inspector of Police”

हिदायत दी गयी कि वह सब जगह अपनी नजर रखें। कोतवाल खुद भी सारी रात इधर उधर घूमता रहा।

शबरंग को इस इन्तजाम का बिल्कुल पता नहीं था। वह उस रात तीन चार जगह गया और जितना उसने सोचा था उतना सामान चोरी किया और ला कर मैदान में उसी गड्ढे में छिपा दिया। अगले दिन ये तीन चार लोग राजा के पास गये और शिकायत की कि पिछली रात उनके घर से फलाँ फलाँ चीज़ें चोरी हो गयी हैं।

यह सुन कर राजा बहुत गुस्सा हुआ। उसने कोतवाल को बुलवाया। कोतवाल ने जब राजा को इतने गुस्से में देखा तो वह तो डर के मारे काँप गया। वह राजा के पैरों पर गिर पड़ा और उनसे न्याय और माफी माँगी।

वह बोला — "राजा साहब खुश हों। इस नौकर की बात भी सुन लें। पुलिस के सारे लोग कल रात सारे शहर में गश्त लगाते रहे और एक मिनट को भी नहीं सोये। हर चौराहा और हर सड़क पर पूरा पहरा था। फिर यह सब कैसे हुआ समझ में नहीं आया।"

यह सुन कर राजा भी आश्चर्य में पड़ गया और बोला — "ऐसा लगता है कि या तो जनता को तुमसे शिकायत है और या फिर तुम लोगों में से ही कोई चोर है या फिर कुछ नौकरों ने मिल कर कुछ घरों में चोरी करने की साज़िश की है। मामला कुछ भी हो पर तुम इस सबकी छानबीन करो। चोर या चोरों का पता करो और

उनको मेरे सामने लाओ। मैं तुमको इसके लिये एक हफ्ते का समय देता हूँ।"

इन सात दिनों में कोतवाल और उसके सब सिपाही इस काम में लगे रहे कि वह चोर के बारे में कोई सुराग पा सकें। कोतवाल बेचारे ने खुद भी अपना वेश बदल बदल कर चारों तरफ गश्त लगायी अपने बहुत सारे लोगों को भी वेश बदल कर चोर ढूँढने पर लगाया।

चोर ढूँढने वाले को इनाम देने का भी वायदा किया अगर उसने अपनी चोरी स्वीकार कर ली तो चोर को शाही माफी भी दिलवाने का भी वायदा किया। उसने चारों तरफ मुनादी भी पिटवायी पर सब बेकार। चोर का कुछ पता न चला। चोर पकड़ा न जा सका। हालाँकि वह इस सारे समय चोरी करता रहा।

इतने सारे उपाय काम में लाने की वजह से शबरंग की चोरी करने की इच्छा और बढ़ती गयी और वह और भी बड़ी बड़ी चीज़ें चुराने लगा।

शहर में खलबली मच गयी। राजा से ले कर सबसे नीचे आदमी तक को यह डर रहा कि पता नहीं कब उसके यहाँ चोरी हो जाये। दिन रात सब लोग अपनी देखभाल रखते पर फिर भी हर एक को यह डर था कि उसके यहाँ कभी भी चोरी हो सकती है।

सातवें दिन की शाम को कोतवाल ने राजा से कहा — "अब क्या किया जाये। जो कुछ हम लोग कर चुके हैं इससे ज़्यादा तो कोई और कुछ कर भी नहीं सकता।"

राजा बोला — "यह तो तुम ठीक कहते हो। पर तुम अबकी बार हमारी सेना ले लो और उसको जैसे तुम चाहो इस्तेमाल करो पर चोर को पकड़ो।"

सो सातवीं रात को सिपाही और पुलिस सभी पास पास खड़े हो कर चोर को ढूँढने में लग गये। कोतवाल भी सारी रात पहरा देता घूमता रहा।

इस इन्तजाम के बीच में उसने एक आदमी को नदी के किनारे वाले बागीचे में जल्दी जल्दी जाते देखा तो वह चिल्लाया "चोर चोर" और उसके पीछे दौड़ा।

उसे पकड़ने पर उस आदमी ने कहा — "नहीं नहीं मैं चोर नहीं हूँ। मैं तो गरीब माली की पत्नी हूँ और यहाँ पानी भरने आयी हूँ।"

कोतवाल बोला — "तुम यहाँ इस समय पानी भरने आयी हो? तुमने शाम तक पानी क्यों नहीं भरा?"

उस आदमी ने कहा — "मुझे घर में बहुत काम थे।"

कोतवाल ने पूछा — "क्या तुमने चोर के बारे में कुछ सुना है या तुम उसके बारे में कुछ जानती हो?"

वह आदमी बाला — "हाँ हाँ मैं जानती हूँ पर बताने से डरती हूँ। कहीं ऐसा न हो कि वह मुझे मारे। वह अभी अभी यहीं था

और वह मेरी बहुत सारी सब्जियाँ ले गया है। अगर तुम थोड़ा सा इन्तजार करो तो तुम उसे पकड़ सकते हो क्योंकि वह यहाँ फिर से आने वाला है। वह इस तरफ से आया था और उस तरफ चला गया है।"

कोतवाल यह सुन कर बहुत खुश हुआ — "यह तो बड़ी अच्छी खबर है। पर मैं उसको पकड़ कैसे सकता हूँ। यहाँ तो कोई झाड़ी भी नहीं है जिसमें मैं जा कर छिप जाऊँ और अगर उसने मुझे देख लिया तो वह भाग जायेगा।"

माली की पत्नी बोली — "लो तुम मेरा यह पुराना पिरहन[54] ओढ़ लो और ऐसा दिखाओ जैसे तुम यहाँ पानी भरने आये हो। मुझे पूरा विश्वास है कि वह यहाँ जरूर आयेगा और मेरी बाकी बची हुई सब्जियाँ भी ले जायेगा। जब वह यहाँ आयेगा तब तुम उसको पकड़ सकते हो।"

कोतवाल को यह विचार बिल्कुल पसन्द नहीं आया फिर भी उसने उसका वह पुराना पिरहन ले लिया और पहन लिया। फिर उससे पूछा कि वह उसको पानी भरना सिखाये कि पानी कैसे भरते हैं। माली की पत्नी ने उसे डंडे के भारी वाले सिरे की तरफ बाँध दिया जिससे पानी खींचा जाता था और फिर उससे दूसरे सिरे पर बँधी रस्सी को खींचने के लिये कहा

[54] Pirahan is a garment worn by a Kashmiri male or female, Pandit or Muslim. Its shape is not unlike a stout night gown but its sleeves are often half a yard wide and two or three yards long. The women's sleeves are generally larger than the men's. Before Akbar's time they used to wear coats vests etc.

उसने ऐसा ही किया जिससे वह करीब करीब बीस फीट जमीन से ऊपर उठ गया। इसके बाद माली की पत्नी ने उसके डंडे के दूसरे सिरे को जमीन में गड़े एक छोटे से डंडे से बॉध दिया उसके कपड़े उठाये और उसे वहीं उसी हालत में छोड़ कर चली गयी।

कोतवाल चिल्लाया "ओह ओह" तो माली की पत्नी बोली — "श श श। चुप रहो अगर चोर सुन लेगा तो फिर वह इस तरफ नहीं आयेगा। तुम्हें डरने की जरूरत नहीं है। यह डंडा अपने आप ही नीचे नहीं गिरेगा। जब चोर आयेगा तब मैं तुमको नीचे ले आऊॅगी तब तुम चोर को पकड़ लेना।"

अब तो तुम्हारी समझ में आ गया होगा कि यह माली की पत्नी कौन थी। यह माली की पत्नी नहीं बल्कि शरभंग खुद ही था। कोतवाल को बॉधने के आधे घंटे बाद वह अपने बिस्तर में सो रहा था।

आधे घंटे के बाद भी जब चोर के वहॉ दोबारा आने की कोई आशा नहीं दिखायी दी तो कोतवाल ने चिल्ला कर अपने आपको उतारने के लिये कहा तो उसे कोई जवाब नहीं मिला।

उसने सोचा कि शायद माली की पत्नी की ऑख लग गयी होगी तो वह फिर चिल्लाया — "मुझे नीचे उतारो। लगता है कि चोर अब यहॉ दोबारा नहीं आयेगा। मुझे नीचे उतारो यहॉ तो हवा बहुत ठंडी है। मैं यहॉ क्या कर रहा हॅू क्योंकि लगता है कि चोर कहीं और चोरी कर रहा है।"

इसका भी कोई जवाब नहीं आया तो वह फिर दुखी हो कर चिल्लाया — “उफ़ यह कौन सी चाल है। लगता है यह माली की पत्नी नहीं थी बल्कि चोर खुद था और वही मुझे यहाँ बाँध कर चला गया है।”

अगले दिन कुछ लोगों ने राजा से जा कर फिर शिकायत की कि पिछली रात उनका कुछ सामान चोरी हो गया। राजा ने यह जानने के लिये कि उसने कल रात क्या किया अपने कोतवाल को बुला भेजा पर कोतवाल तो घर पर ही नहीं था।

बल्कि यों कहो तो वह तो कल शाम से ही अपने घर पर नहीं था। सो राजा का नौकर उसको सारे शहर भर में ढूँढता फिरा।

आखिरकार वह उसी बागीचे में आ पहुँचा जिसमें वह बदनसीब कोतवाल रात चोर पकड़ने के लिये घुसा था। वहाँ उसको वह एक स्त्री का पिरहन पहने कुँए से पानी निकालने वाले एक डंडे पर बैठा हुआ था और बेचारा ठंड से जमा जा रहा था।

ऐसा न हो कि राजा को उसकी बात पर विश्वास न हो उसने राजा से खुद वहाँ आने और उसको वहाँ उस हालत में बैठा देखने की प्रार्थना की। सो राजा खुद वहाँ आया और उसको इस हालत में बैठा देख कर हँसी से दोहरा हो गया।

उसको वहाँ से उतारा तो जब उसके पैर जमीन पर लगे उसने राजा को समझाया कि यह सब कैसे हुआ था। फिर उसने उससे

कहा कि वह इस बात के लिये उसकी जान भी ले सकता था क्योंकि अब उसको जीने की परवाह नहीं थी।

राजा ने अपने वजीर से पूछा कि अब क्या किया जाये। अगर इस चोर को न रोका गया तो हमारे राज्य पर तो भारी मुसीबत आ जायेगी। इसको कैसे पकड़ा जाये ताकि लोगों का सामान और ज़्यादा चोरी न हो सके। क्योंकि अगर ऐसा ही रहा तो लोग देश छोड़ छोड़ कर भागने लगेंगे।

वजीर बोला — "नहीं नहीं राजा साहब ऐसा नहीं हो सकता और न होगा। अगर राजा साहब मुझे इजाज़त दें तो मैं इस रात उस चोर को पकड़ने की कोशिश करूँ जिसने हम सबकी शान्ति लूट रखी है।"

राजा ने उसको इजाज़त दे दी। जैसे ही शाम हुई वजीर अपने घोड़े पर चढ़ कर शहर की गश्त के लिये निकल पड़ा। शबरंग चोर भी अपना काम करने निकल पड़ा। उसने एक गरीब मुसलमान का वेश रखा पुराना फटा सा पिरहन पहना सिर पर चिकनी सी लाल कसाब[55] पहिनी उसके ऊपर मैली सी पूत्स[56] डाली और चल दिया।

जा कर वह एक मिट्टी की झोंपड़ी के दरवाजे पर बैठ गया। उसने झोंपड़ी की पीछे की दीवार मे लगे दिये को जलाया और उसकी मद्धम रोशनी में मक्का पीसने बैठ गया।

---

[55] Kasaab is red color cap worn by Kashmiri Muslims

[56] Puts is a piece of cotton cloth, thrown over the head and is allowed to hang almost down to the heels of Kashmiri Muslim women.

घूमते घूमते वजीर उधर से निकला तो उसको पीसने की आवाज आयी तो यह देखने के लिये इतनी रात गये यह कौन पीस रहा है वह अपना घोड़ा उस झोंपड़ी की तरफ ले आया और पूछा — "यहाँ कौन है?"

जवाब मिला "एक बुढ़िया। मैं यहाँ मक्का पीस रही हूँ।" और फिर जैसे कि वह पहली बार देख रही हो कि वह घुड़सवार वजीर था बुढ़िया बड़ी दया भरी आवाज में बोली — "काश तुम चोर को पकड़ सकते। अभी अभी एक आदमी यहाँ आया था। उसने मुझे बहुत मारा और मेरा सारा मक्का का आटा ले गया जो मैंने अपने खाने के लिये पीसा था।"

"चोर। क्या? कहाँ है वह मुझे बताओ कहाँ है वह? किधर गया है वह?"

पहाड़ी के नीचे की तरफ इशारा करते हुए वह बोला "उस तरफ।"

वजीर ने अपना घोड़ा उसी तरफ दौड़ा दिया पर वहाँ तो चोर का कोई नामो निशान नहीं था। सो वह वापस आया और उस मुसलमान स्त्री से फिर से उस चोर के बारे में पूछा।

शरभंग बोला — "मैंने तुम्हें सब कुछ तो बता दिया। अब और क्या। लेकिन इसका फायदा भी क्या है। जिस तरह के तुमने कपड़े पहिने हैं और जैसे शानदार घोड़े पर तुम बैठे हो इस तरह से तुम चोर को कभी नहीं पकड़ सकते।

क्या तुम एक बुढ़िया की सलाह मानोगे? तुम मेरे कपड़े पहिन लो और मेरी जगह बैठ जाओ। तुम यहाँ ठहरो और मैं चोर की खोज में जाती हूँ। जब तुम यहाँ हो तो तुम मेरी मक्का पीस सकते हो। वह यहाँ दोबारा भी आ सकता है तब तुम उसको पकड़ लेना।"

वजीर को यह तरकीब अच्छी लगी सो उसने उसे मान लिया। उधर शबरंग ने वजीर के कीमती कपड़े पहने उसके शानदार घोड़े पर चढ़ा और शहर के बाजार से हो कर चल दिया। एक दो घंटे बाद वह महल के आँगन में राजा के दूसरे नौकरों के साथ बात करता पाया गया।

अगले दिन फिर से लोग रोते चिल्लाते राजा के पास आये और अपने घर में चोरी की शिकायत की। कुछ ने कहा कि उनका पैसा चोरी हो गया कुछ ने कहा कि उनके जवाहरात चोरी हो गये और कुछ ने कहा कि उनका अनाज चोरी हो गया।

"उफ़ उफ़ मैं क्या करूँ। यह तो बड़े अफसोस की बात है। वजीर को बुलाओ।" राजा झल्ला कर बोला।

तुरन्त ही एक नौकर वजीर को बुलाने उसके घर भेजा गया। उसके घर जा कर उसको पता चला कि वजीर का घोड़ा तो बिना वजीर के घर आ गया था। और इसकी वजह से वजीर का सारा परिवार पागल सा हो रहा था। उनको लग रहा था कि वजीर ने चोर को पकड़ तो लिया था पर चोर ने उसे मार दिया।

जब राजा ने यह सुना तो वह तो बहुत ही दुखी हुआ। उसने तुरन्त ही अपना घोड़ा तैयार करने का हुक्म दिया अपने कुछ नौकरों को बुलाया जिनमें शबरंग भी शामिल था और वजीर को ढूँढने के लिये चल पड़ा।

वह बोला — "यह नहीं हो सकता कि इतना अक्लमन्द और वफादार आदमी इस तरह से मर जाये।"

एकाध घंटे में वे सब उसी मिट्टी की झोंपड़ी के पास से गुजरे जहाँ रात को वह मुसलमान बुढ़िया मक्का पीस रही थी। वहाँ उनको बेचारा वजीर उस मुसलमान बुढ़िया के मैले और फटे कपड़े पहने बहुत ही दयनीय दशा में रोता हुआ मिल गया।

वह बोला — "राजा साहब आप यहाँ से चले जाइये मेरी इस शर्मनाक हालत को मत देखिये। अब इस देश में मैं अपना सिर कभी नहीं उठा सकता।"

राजा उसको धीरज बँधाते हुए बोला — "ऐसा नहीं है। हिम्मत रखो। हमें अभी उस आदमी को ढूँढना है जिसने देश भर में खलबली मचायी हुई है और हमारे वजीर को इस तरह से बेइज़्ज़त किया है।" राजा ने फिर वजीर को उसके घर छुड़वा दिया।

अगली रात थानेदार ने कहा कि वह चोर को ढूँढने का जिम्मा लेता है। हालाँकि वह नीचे ओहदे का था पर फिर भी राजा ने उसका कहा मान लिया।

उस रात शबरंग ने वजीर की बेटी का वेश रखा और इस आशा में कि थानेदार रात के शुरू के समय में वहाँ आयेगा वजीर के बागीचे में उसका इन्तजार करने लगा।

उसका सोचना गलत नहीं था। सोने के समय से बस ज़रा सा ही पहले थानेदार वहाँ आया और बागीचे में किसी को घूमते हुए देख कर उससे पूछा "कौन हो तुम?"

जवाब मिला — "मैं वजीर की बेटी हूँ। तुम्हें क्या चाहिये।"

थानेदार बोला — "मैं चोर को ढूँढने निकला हूँ। कल उसने तुम्हारे पिता की बेइज़्ज़ती की थी और उससे पहिले कोतवाल की बेइज़्ज़ती की थी आज मैं अपनी किस्मत आजमाने निकला हूँ।"

शबरंग बोला — "पर अगर तुम्हें वह मिल जाये तो तुम उसका क्या करोगे?"

थानेदार बोला — "मैं उसको जंजीरों से बाँध कर जेल में डाल दूँगा और रोज उसको इतना पीटूँगा जितना वह सह सकेगा।"

लड़की बोली — "ओह थानेदार साहब मैं वह जेल देखना चाहती हूँ। मेरी अक्सर यह इच्छा रही है कि मैं उसे देखूँ पर मेरे पिता ने मुझे उसे कभी देखने ही नहीं दिया। आज मुझे उसे देखने का मौका मिला है। वह दूर तो नहीं है। मुझे उसे दिखा दो न।"

थानेदार बोला — "उसे देखने के लिये तुम्हें किसी और समय का इन्तजार करना पड़ेगा इस समय तो मुझे चोर को पकड़ना है। इसके अलावा अगर तुम्हारे पिता को यह पता चला कि तुम इतनी

रात गये यहाँ बागीचे में टहल रही हो तो तुम्हारे पिता भी नाराज होंगे। इसलिये घर जाओ और जा कर सो जाओ।"

लड़की बोली — "पिता जी को कभी मालूम नहीं चल पायेगा कि मैं यहाँ हूँ और जेल देखने गयी थी। वह बीमार हैं। कल उनको बीमारी की हालत में ही घर लाया गया था। जल्दी करो मैं आ रही हूँ।"

इस तरह पकड़े जाने पर थानेदार उसको जेल ले कर चला। जेल में केवल एक ही चौकीदार था क्योंकि बाकी सारे लोग चोर को ढूँढने पर लगाये गये थे। लड़की के कहने पर थानेदार ने उसे जेल का सब कुछ दिखा दिया।

यह दिखाने के लिये कि किसी चोर को जब जेल में डाला जाता है तो कैसे डाला जाता है उसने अपने आपको जंजीरों में भी जकड़ा और जेल के कमरे में गया। जैसे ही वह जेल के कमरे में गया शबरंग ने उसको एक धक्का दिया जिससे थानेदार उसमें लुढ़क गया।

फिर उसने लड़की के कपड़े उतार कर थानेदार की पगड़ी पहिनी उसकी पेटी अपनी कमर में बाँधी और सीधा थानेदार के घर जा पहुँचा।

थानेदार की पत्नी से वह जल्दी जल्दी बोला — "मुझे कुछ पैसे और जवाहरात दो मुझे यह शहर छोड़ कर किसी दूसरे शहर में बसना होगा। मैं चोर का पता नहीं लगा पाया सो राजा अब मुझे

नौकरी से निकाल देगा। जल्दी करो जल्दी से मुझे ये दे दो ताकि मैं जल्दी से यहाँ से जा सकूँ। जहाँ कहीं भी मैं रहूँगा वहाँ से मैं तुम्हें बाद में खबर करूँगा कि तुम्हें मेरे पास कब और कैसे आना है।"

थानेदार की पत्नी यह सुनते ही घबरा गयी उसने तुरन्त ही सैंकड़ों रुपये और कुछ जवाहरात उसको ला कर दे दिये। शबरंग ने उसको चूमा और वहाँ से भाग लिया।

अगली सुबह राजा ने थानेदार को बुलवाया पर वह तो घर पर था ही नहीं तो उसको सारे शहर में ढूँढा गया। राजा के आश्चर्य की सीमा न रही जब उसको वह उसी की जेल में बन्द जंजीरों से जकड़ा मिला। और यह भी कि चोर थानेदार के घर गया था और वहाँ से सैंकड़ों रुपये और जवाहरात ले कर चला गया है।

उसने अपने बहुत सारे अक्लमन्द लोगों की एक सभा बुलायी और उनसे सलाह माँगी कि इस मौजूदा हालत में क्या किया जाये।

वह बोला — "आप लोगों ने देखा कि चोर को पकड़ना बेकार है। हम लोग हवा को पकड़ सकते हैं पर उसे नहीं। हमारी सारी पुलिस और बहुत सारी फौज कई दिनों से इस काम में लगी हुई है पर सब उसको पकड़ने में नाकामयाब रहे। इतना पहरा बिठाये जाने के बावजूद चोरियाँ होती रहीं।

हमारे वजीर कोतवाल और थानेदार की हँसी उड़ायी गयी। अब हम क्या करें। अगर कोई हमारी सहायता कर सकता है तो आगे आये या फिर चोर अपनी गलती खुद ही स्वीकार कर ले और

यह वायदा करे कि वह आगे से ऐसे बुरे काम नहीं करेगा तो हम उसके साथ अपनी बेटी की शादी कर देंगे और उसको अपना आधा राज्य दे देंगे।"

राजा के ऐसा कहने पर शबरंग आगे आया और राजा से कुछ बोलने की इजाज़त माँगी। इजाज़त मिलने पर वह बोला — "राजा साहब आपने अपने राज्य के सब अक्लमन्दों के सामने यह कहा है कि अगर चोर आपके सामने आ कर अपनी चोरियाँ स्वीकार कर ले और आगे कोई चोरी न करने का वायदा करे तो आप उसे अपना आधा राज्य और बेटी दे देंगे।"

राजा बोला — "हाँ।"

शबरंग फिर बोला — "तो मैं हूँ वह चोर। अपने आपको चोर साबित करने के लिये राजा साहब अपने उन सब लोगों को हुक्म दें जिन्होंने अपनी अपनी चीज़ें खोयी हैं कि कल वे मेरे साथ फलाँ फलाँ जगह चलें तो मैं उनको उनकी सारी चीज़ें लौटा दूँगा।"

सारी सभा को यह सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ। लोग शबरंग की तरफ इस तरह देखने लगे जैसे वह कोई देवता हो। कुछ लोगों को लगा कि वह पागल हो गया है और उनके मुँह से कोई बोल ही नहीं फूटा। कुछ समय तक तो राजा भी कुछ नहीं बोल सका।

बाद में वह बोला — "ठीक है ऐसा ही होगा। शबरंग तुम मुझसे अकेले में मिलो।" राजा शबरंग के साथ उठ कर चला गया और सभा भी खत्म हो गयी।

अकेले में जा कर राजा ने शबरंग से कहा कि वह अपना वायदा निभायेगा। वह उसको आधा राज्य भी देगा और अपनी बेटी भी। इसका इन्तजाम बहुत जल्दी ही किया जायेगा।

अगले दिन जिन जिनके घर में चोरियाँ हुई थीं वह सब इकट्ठा हुए और शबरंग के बतायी हुई जगह से राजा और वजीर के सामने अपनी चीज़ें पैसे जवाहरात कपड़े आदि सब वापस ले लिये। यह जगह शहर की चहारदीवारी के पास वाले मैदान में थी। सब लोग खुशी खुशी अपने घर चले गये।

महल लौटने के बाद शबरंग ने राजा से अपनी माँ को वहाँ बुलाने की इजाज़त माँगी ताकि इस शादी के बारे वह अपनी माँ से सलाह कर सके। राजा राजी हो गया और उसकी माँ को बुला लिया गया।

राजकुमारी तुरन्त ही आ गयी और राजा से मिलने की इजाज़त माँगी। राजा ने उसका बड़ी शान से स्वागत किया और इस बात की खुशी प्रगट की कि वह अपनी बेटी को इतने अक्लमन्द और सुन्दर लड़के को दे रहा है।

राजकुमारी ने कहा — "यह सब राजा साहब की कृपा है पर यह शादी नहीं हो सकती। यह ठीक नहीं कि भाई बहिन की शादी हो।"

राजा बोला — "मैं समझा नहीं।"

राजकुमारी बोली — “इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। पर यह अँगूठी और रूमाल आपको मेरी याद जरूर दिलायेगा। आप इन्हें ले लीजिये ये आप ही के हैं और मुझे वह अँगूठी वापस कर दीजिये जो मैंने आपको दी थी। अब तो आपको मेरी याद आ गयी होगी।”

तब उसने राजा को सारी बातें बतायीं कि किस प्रकार वह उसकी कानूनन पत्नी थी। और क्योंकि उसने उसको छोड़ दिया था इसलिये वह उससे वेश बदल कर मिली थी। फिर कैसे शबरंग पैदा हुआ कैसे उसने उसको बड़ा किया फिर कैसे उसने उसको काश्मीर भेजा।

अब क्योंकि उसका उद्देश्य पूरा हो गया था जो उसने राजा से अपने पिता के बागीचे में पहली बार मिलने पर कहा था कि वह उस जैसे राजा से एक बेटा पैदा करेगी और फिर वह उसकी बेटी से शादी करायेगी।

तब काश्मीर के राजा ने राजकुमारी से सुलह कर ली और उसको अपनी पत्नी का दर्जा दे दिया। राजकुमार को युवराज घोषित कर दिया गया और तीनों आराम से बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

Indian Classic Books of Folktales Translated in Hindi
by Sushma Gupta

12th Cen — **Shuk Saptati.**
No 29 — By Unknown. 70 Tales. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — ।

c1323 — **Tales of Four Darvesh**
No 24 — By Amir Khusro. 5 Tales. Tr by Duncan Forbes.
किस्सये चहार दरवेश

1868 — **Old Deccan Days or Hindoo Fairy Legends**
No 23 — By Mary Frere. 24 Tales. (5th ed 1889).
पुराने दक्कन के दिन या हिन्दू परियों की कहानियॅा

1872 — **Indian Antiquary 1872**
No 34 — A collection of scattered folktales in this journal. 18 Tales.

1880 — **Indian Fairy Tales**
No 30 — By MSH Stokes. London, Ellis & White. 30 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियॅा

1884 — **Wide-Awake Stories – Same as Tales of the Punjab**
By Flora Annie Steel and RC Temple. 43 Tales.

1887 — **Folk-tales of Kashmir.**
No 11 — By James Hinton Knowles. 64 Tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं

1889 — **Folktales of Bengal.**
No 4 — By Rev Lal Behari Dey. Delhi : National Book Trust. 22 Tales.
वंगाल की लोक कथाऐं

1890 — **Tales of the Sun, OR Folklore of South India**
No 18 — By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri.
London : WH Allen. 26 Tales
सूरज की कहानियॅा या दक्षिण भारत की लोक कथाऐं

1892 — **Indian Nights' Entertainment**
No 32 — By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन

1894 **Tales of the Punjab.**
No 10 By Flora Annie Steel. Macmillan and Co. 43 Tales.
पंजाब की लोक कथाऐं

1903 **Romantic Tales of the Panjab**
No 31 By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ

1912 **Indian Fairy Tales**
No 28 By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 29 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ

1914 **Deccan Nursery Tales or Fairy Tales from Deccan**.
No 22 By Charles Augustus Kincaid. 20 Tales.
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंग्रेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न्। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारि डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियाँ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियाँ — थोमस फैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॉ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

36. Cossack Fairy Tales and Folk Tales.
Translated in English By R Nisbet Bain. George G Harrp & Co. **c 1894**. 27 Tales.
कोज़ैक की परियों की कहानियॉ — अनुवादक आर निस्बत बैन। **2022**

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022
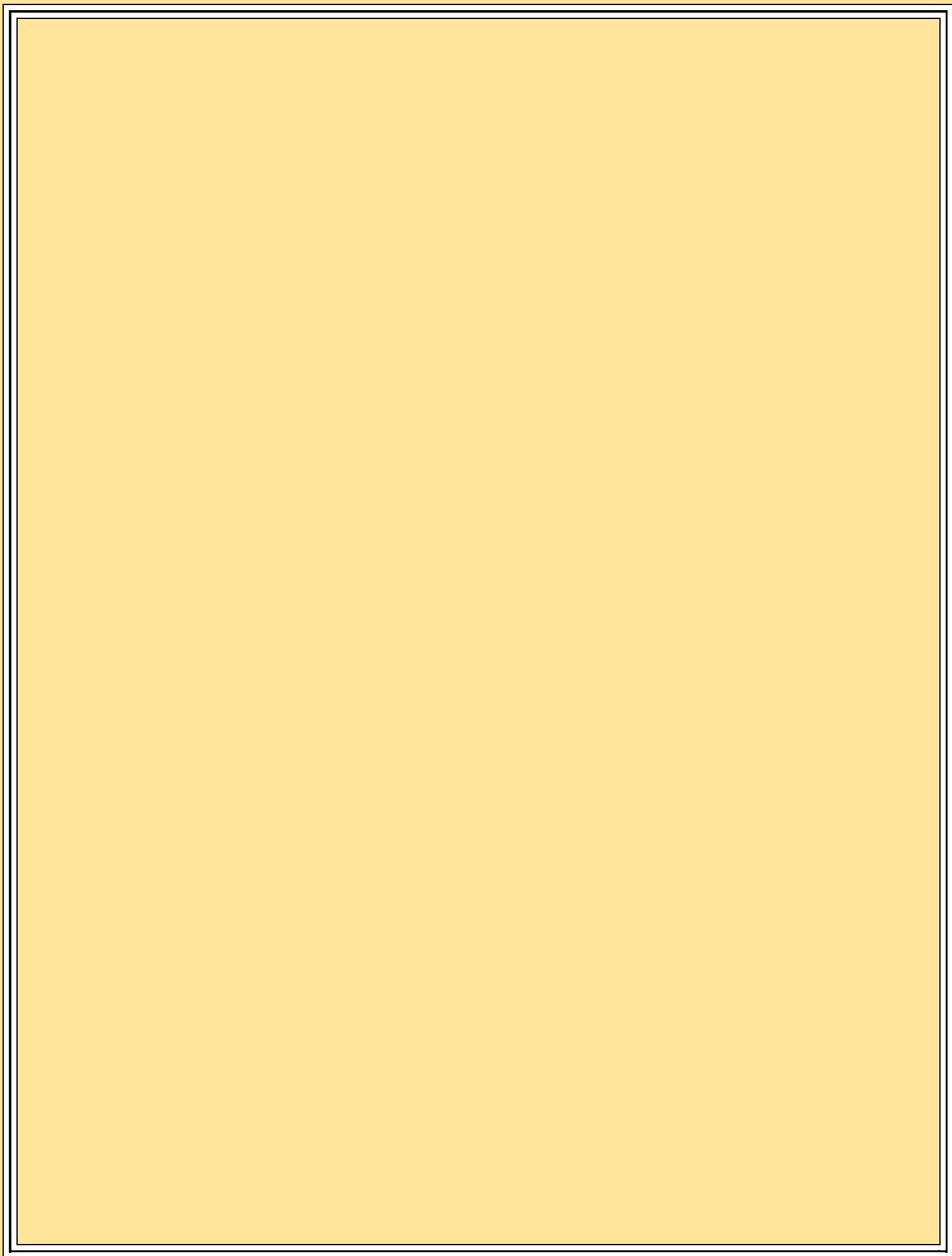
लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् 1943 में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। 1976 में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में 10 वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में 3 साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में 1 साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से 1993 में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर 4 साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन 2021 तक इनकी 2500 से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022